जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः चतुर्थभावः चंद्र

७८२

चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का लाभ त्रुटिपूर्ण प्राप्त होता है, परंतु मनोबल में वृद्धि होने के कारण सुख के साधन बने रहते हैं। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती रहती है।
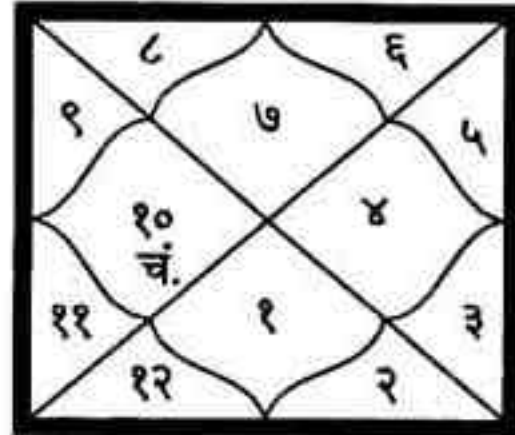
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः पंचमभावः चंद्र

७८३

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को संतान की शक्ति प्राप्ति होती है तथा मनोबल द्वारा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ तथा सम्मान प्राप्त करता है। इसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण होती है तथा मनोबल बढ़ा रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में यथेष्ठ वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।
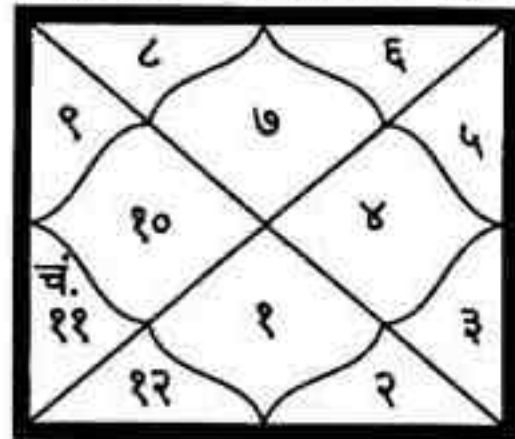
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः षष्ठभावः चंद्र

७८४

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में अपने मनोबल, चातुर्य एवं शांत स्वभाव के कारण सफलता मिलती है। उसे पिता की ओर से असंतोष रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी रुकावटें आती हैं। फलतः प्रतिष्ठा में भी कमी बनी रहती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संपर्क से लाभ होता है।
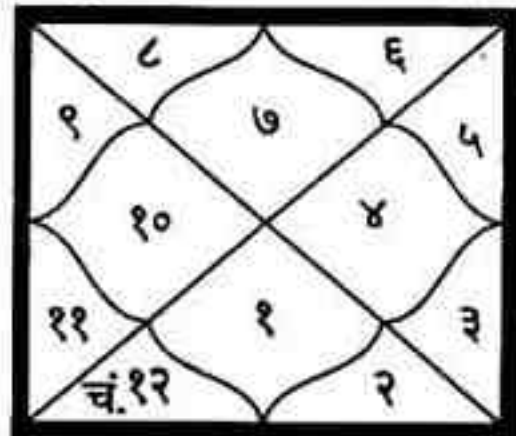
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः सप्तमभावः ७

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है। उसे स्त्री बहुत सुंदर मिलती है तथा स्त्री-पक्ष द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी लाभान्वित तथा यशस्वी होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौंदर्य, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।
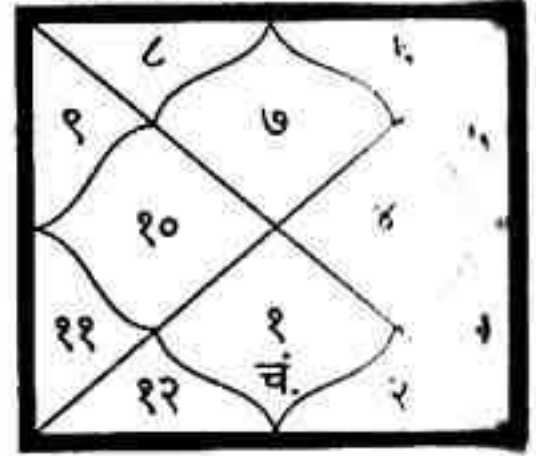
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः अष्टमभावः ८

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि में स्थित उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। उसका दैनिक जीवन आनंदपूर्ण बना रहता है, परंतु पिता के पक्ष में हानि, व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति तथा राज्य के पक्ष से साधारण सम्मान मिलता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक के धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुंब का पक्ष भी दुर्बल रहता है।
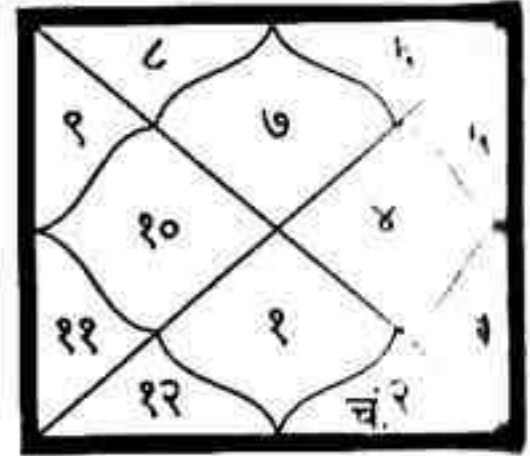
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः नवमभावः ९

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का भी रुचिपूर्वक पालन करता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्षों से भी उन्नति, सम्मान, सहयोग तथा शक्ति की प्राप्ति होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा उसके पराक्रम में वृद्धि होती है।
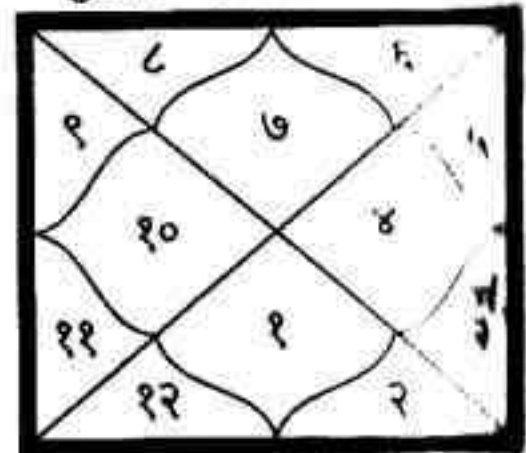
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: दशमभाव: चंद्र

७८८

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपनी कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से शक्ति, राज्य के पक्ष से सम्मान, व्यवसाय के पक्ष से उन्नति, लाभ तथा धन की प्राप्ति होती है। वह स्वाभिमानी, यशस्वी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता के पक्ष से कुछ शक्ति मिलती है तथा भूमि और मकान का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है।
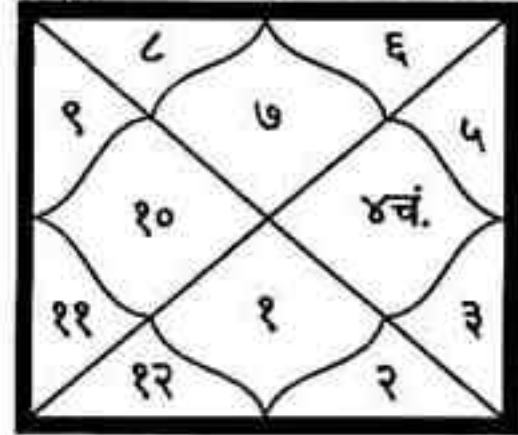
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: एकादशभाव: चंद्र

७८९

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसर निरंतर प्राप्त होते हैं। उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय—तीनों ही पक्षों से लाभ, यश, प्रतिष्ठा तथा सफलता की प्राप्ति होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: उसे संतानपक्ष से सामान्य असंतोष के साथ सफलता मिलती है, परंतु विद्या एवं वाणी की शक्ति खूब प्राप्त होती है। ऐसा जातक चतुर, चालक, स्वार्थी तथा समझदार होता है।
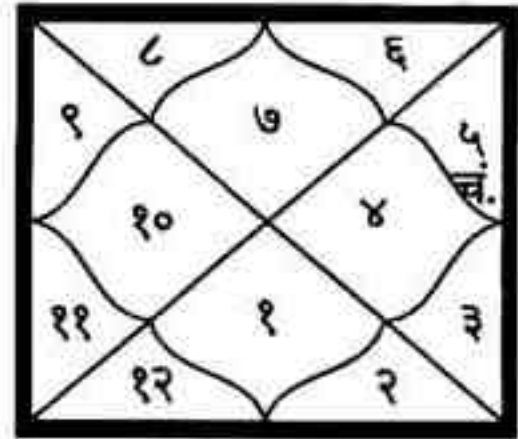
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: द्वादशभाव: चंद्र

७९०

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति पिता, व्यवसाय तथा राज्य—तीनों के क्षेत्र में कुछ हानि प्राप्त करता है और उसे मान-प्रतिष्ठा भी कम मिलती है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष में शांति एवं चातुर्य द्वारा सफलता एवं प्रभाव प्राप्त करता है।
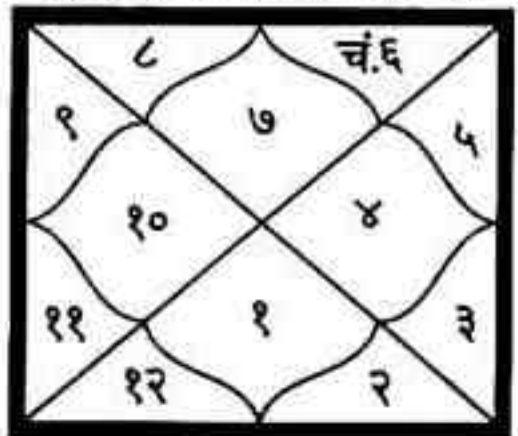
'तुला' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: प्रथमभाव: मंगल

पहले केंद्र एवं शरीर-स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख तथा घर में प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। उसे धन तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि, मकान आदि का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय की उन्नति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है, परंतु पेट में विकार रहता है।
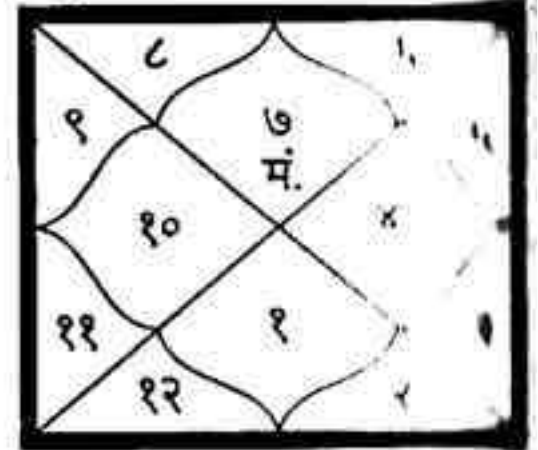
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब का सुख तो मिलता है, परंतु स्त्री एवं परिवार के पक्ष से कुछ असंतोष भी बना रहता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: संतानपक्ष से बाधायुक्त शक्ति मिलती है और विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ तरक्की होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति सामान्य रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन स्वार्थ के लिए किया जाता है।
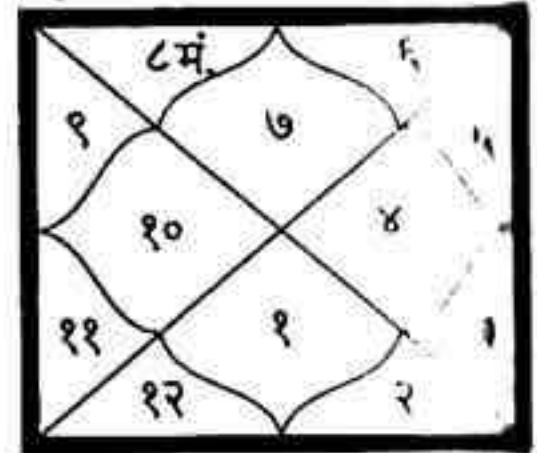
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: तृतीयभाव: मंगल

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है, स्त्री पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है, पराक्रम की वृद्धि होती है तथा पुरुषार्थ द्वारा धन भी खूब मिलता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव देखता है, अत: जातक को शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा
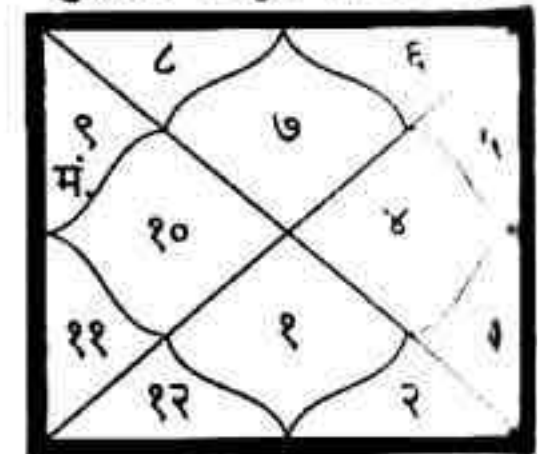
की उन्नति होती है एवं आठवीं नीचदृष्टि से दशमभाव देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में उन्नति मिलने के रास्ते में रुकावटें आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि का विशेष सुख मिलता है एवं धन का संचय होता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के द्वारा भी सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र राशि में दशमभाव को देखने से पिता के सुख में कमी एवं राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में उन्नति में व्यवधान पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक धनी और सुखी रहता है।

तुला लग्नः चतुर्थभावः मंगल
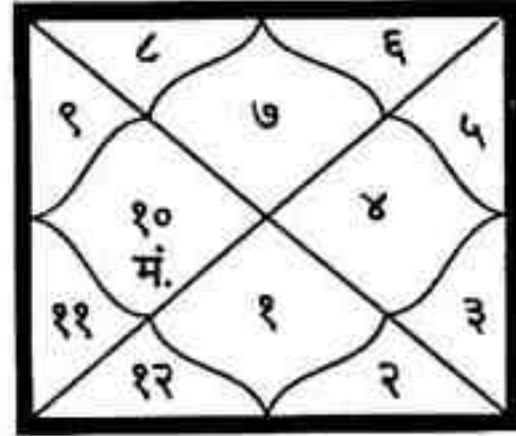
७९४

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के स्थान में अपने शत्रु शनि के कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कुछ कठिनाइयां प्राप्त होती हैं तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता मिलती है। स्त्री पक्ष से असंतोष रहता है तथा कुटुंब से वैमनस्य प्राप्त होता है। व्यवसाय के मार्ग में बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु तथा जीवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं तथा कुछ परेशानियों के साथ पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से धन एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

तुला लग्नः पंचमभावः मंगल
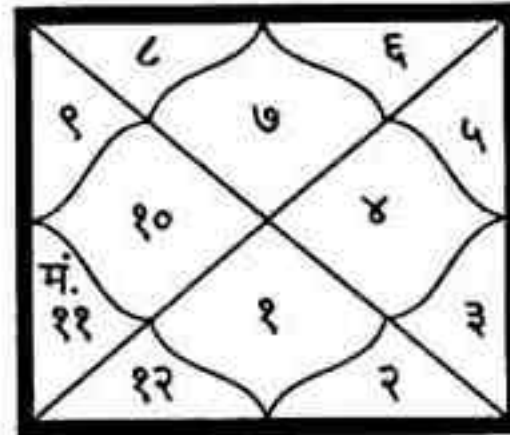
७९५

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखता है। धन-संचय में कमी रहती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है, यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा स्वार्थ के लिए धर्म का पालन करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौंदर्य में कमी रहती है तथा झगड़ों-झंझटों के मार्ग से लाभ होता है।

तुला लग्न: षष्ठभाव: मंगल
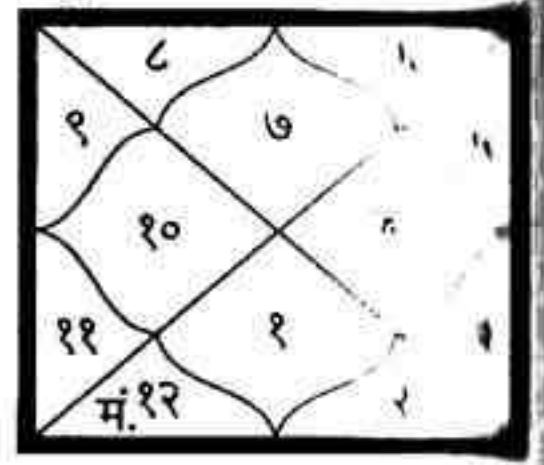
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से कुछ बंधन-सा रहता है, परंतु भोग की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है और दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं रोजगार के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ गर्मी का विकार रहता है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण धन का संचय होता है तथा कौटुंबिक सुख भी प्राप्त होता है।

तुला लग्न: सप्तमभाव: मंगल
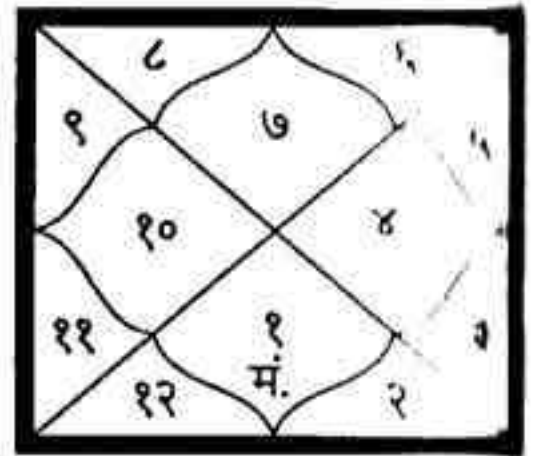
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान से अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से कष्ट होता है तथा दैनिक रोजगार में परेशानी बनी रहती है। बाहरी स्थानों पर व्यवसाय करने से लाभ होता है पुरातत्त्व की भी प्राप्ति होती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को आमदनी का लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब के सुख का लाभ परिश्रम द्वारा होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

तुला लग्न: अष्टमभाव: मंगल
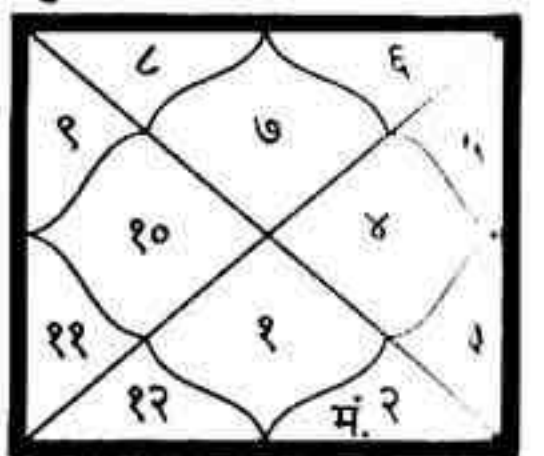
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: नवमभाव: मंगल

७९९

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। भाग्यवती स्त्री मिलती है, अत: विवाह के बाद विशेष उन्नति होती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। ऐसा जातक लौकिक तथा अलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति करता है।
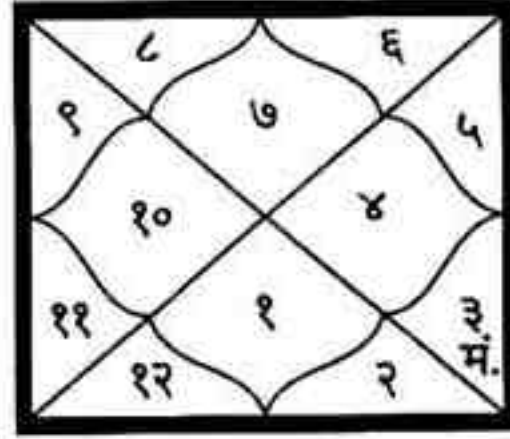
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: दशमभाव: मंगल

८००

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। स्त्री तथा कुटुंब के पक्ष में भी कमजोरी तथा कष्ट की स्थित रहती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है,अत: जातक के शरीर में कमजोरी रहती है, परंतु सम्मान प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से वैमनस्य तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।
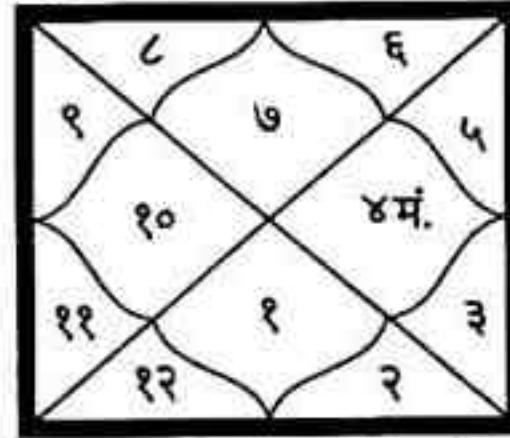
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: एकादशभाव: मंगल

८०१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा स्त्री के पक्ष से भी लाभ तथा सुख मिलता है। यहां से मंगल अपनी चौथी दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: धन-संचय की शक्ति भी रहेगी तथा कुटुंब
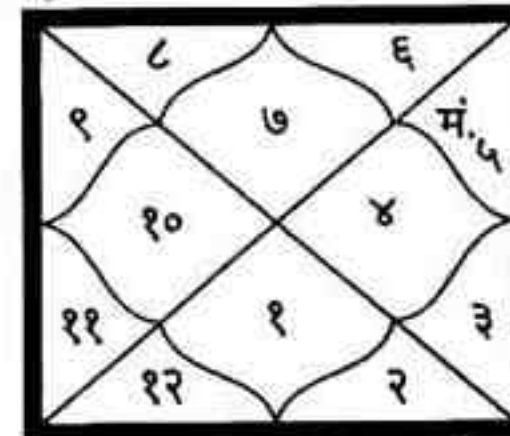
का सुख भी मिलेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण [illegible] असंतोष रहेगा तथा विद्या की भी कमी होगी। आठवीं मित्रदृष्टि से शत्रुभाव को [illegible] पक्ष से लाभ होगा तथा उस पर प्रभाव बना रहेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी [illegible] प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' [illegible] 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

तुला लग्नः द्वादशभावः [illegible]

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। धन, कुटुंब, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी असंतोष एवं हानि के योग उपस्थित होते हैं। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है। अत: भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने के कारण दूसरे स्थानों के संबंध से व्यवसाय में लाभ होता है, परंतु स्त्री के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है।
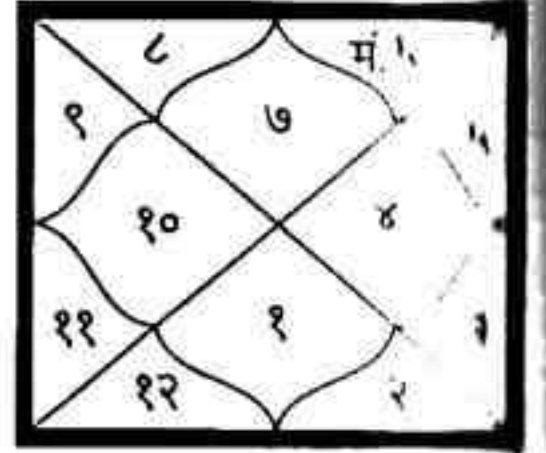
'तुला' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' [illegible] 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है तथा खूब खर्च करता है। भाग्य के क्षेत्र में कमी का अनुभव करते हुए भी वह भाग्यवान गिना जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

तुला लग्नः प्रथमभावः बुध
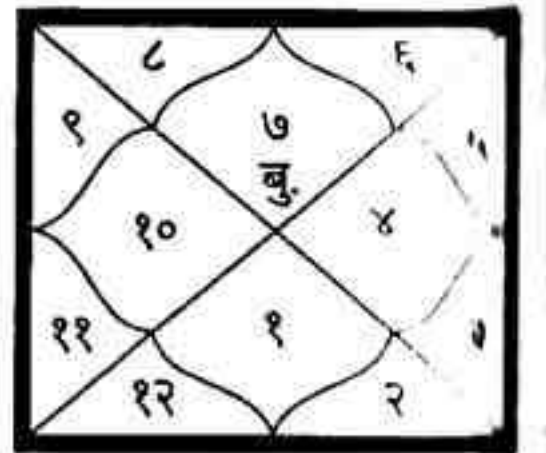
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' [illegible] 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब का सुख कुछ कम प्राप्त होता है। वह खर्च अधिक करता है तथा धर्म का पालन भी स्वार्थ के लिए करता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक की आयु एवं पुरातत्व पक्ष की वृद्धि होती है। उसे दैनिक जीवन में लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है, अत: वह धनी एवं प्रतिष्ठित माना जाता है।

तुला लग्न: द्वितीयभाव: बुध
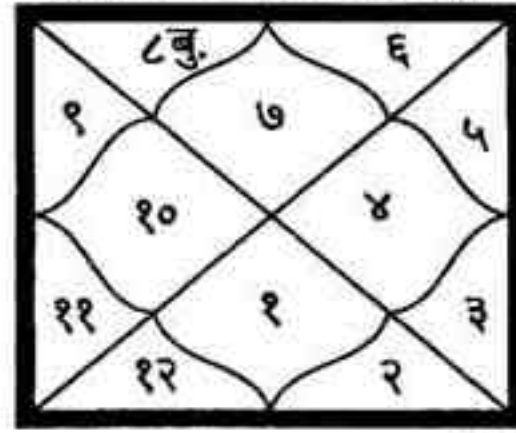
८०४

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। भाग्योन्नति के मार्ग में साधारण रुकावटें आया करती हैं, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, ज्ञानी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा धर्मात्मा होता है।

तुला लग्न: तृतीयभाव: बुध
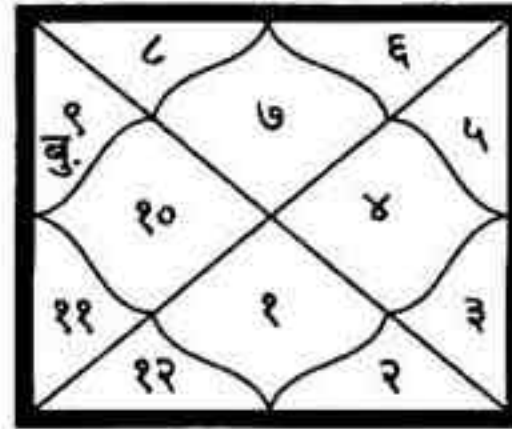
८०५

जिस जातक जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परंतु घरेलू शांति में कुछ कमी बनी रहती है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से विशेष लाभ होता है और वह खर्च भी बड़ी शानदारी से करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी मान, प्रतिष्ठा, सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

तुला लग्न: चतुर्थभाव: बुध
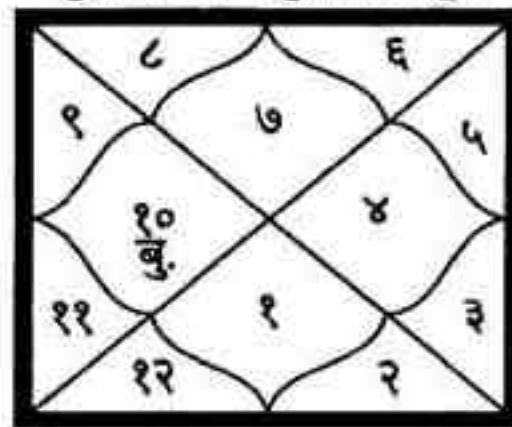
८०६

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से शक्ति तथा विद्या-बुद्धि का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। वह बाहरी स्थानों के संबंध से अपने भाग्य की वृद्धि करता है तथा खर्चीला भी बहुत होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को आमदनी खूब रहती है और वह भाग्यवान् माना जाता है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

तुला लग्न: पंचमभाव
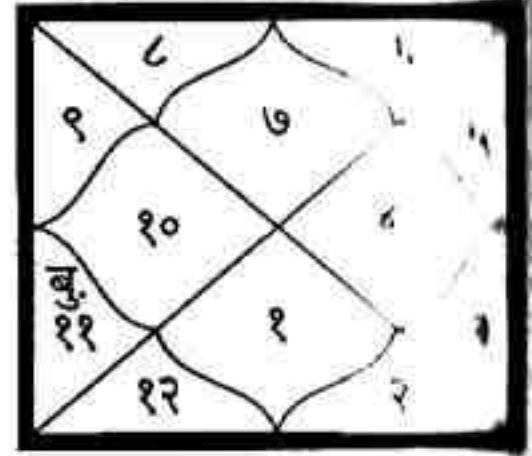
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश एवं नीच के बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अपना खर्च चलाने के लिए भी बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहती है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ लाभ होता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक बना रहता है।

तुला लग्न: षष्ठभाव
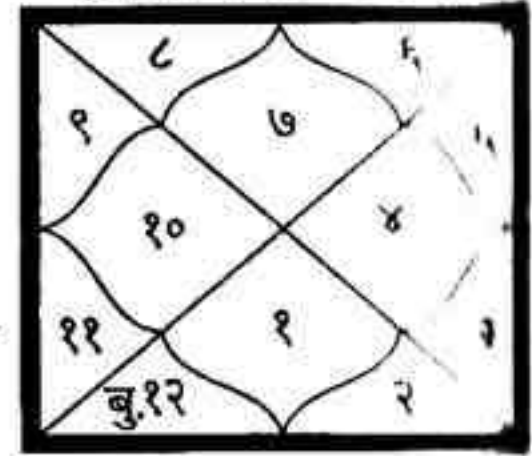
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सातवें केंद्र, स्त्री, व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। वह गृहस्थी का खर्च खूब चलाता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक शारीरिक सुख तथा मान-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है एवं भाग्यवान समझा जाता है।

तुला लग्न: सप्तमभाव
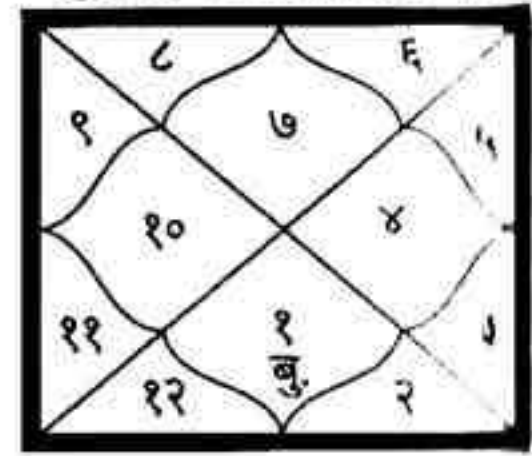
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ शक्ति एवं लाभ प्राप्त होती है। परंतु भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कमजोरी रहती है, उसे बाहरी स्थानों के संबंध से कठिनाइयों के साथ कुछ लाभ होता है तथा खर्च के मामले में परेशानी भी पड़ती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक कुछ कठिनाइयों के साथ धन की वृद्धि करता है। परंतु यश कम मिलता है।

तुला लग्नः अष्टमभावः बुध

८१०

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से अच्छा लाभ होता है। खर्च अधिक करता है तथा बुध व्ययेश होने के कारण उसे कुछ कठिनाइयों का भी अनुभव होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहनों की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु पराक्रम की वृद्धि में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

तुला लग्नः नवमभावः बुध

८११

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयां आती हैं तथा कुछ कमजोरी-सी रहती है। धर्म का पालन भी थोड़ा ही कर पाता है, जिस कारण भाग्योन्नति भी कम होती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है, जिसके कारण वह धनवान् भी समझा जाता है।

तुला लग्नः दशमभावः बुध

८१२

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
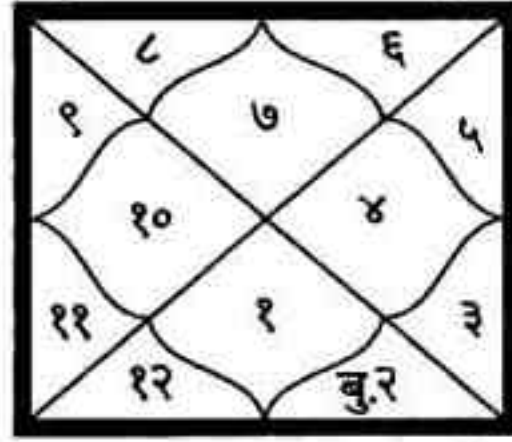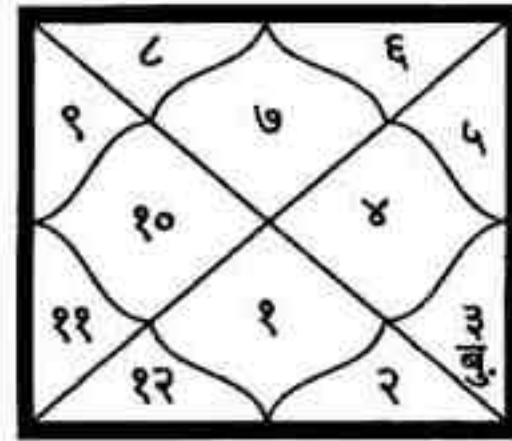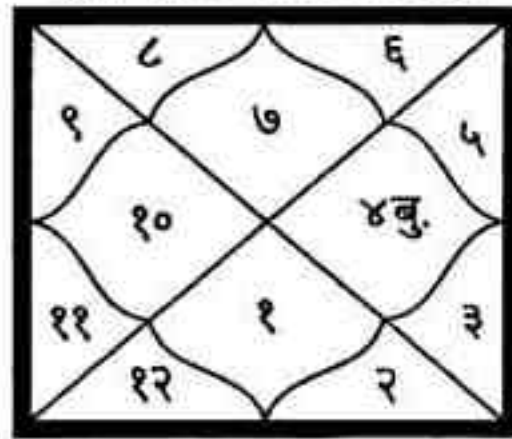
ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह धर्म का पालन करता है तथा भाग्यवान भी होता है, परंतु बुध के व्ययेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में कुछ कठिनाइयां भी आती रहती हैं। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतानपक्ष से सफलता मिलती है एवं विद्या-बुद्धि की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसा जातक अपनी बोल-चाल तथा विद्या-बुद्धि के बल पर विशेष उन्नति करता है।

तुला लग्न: एकादशभाव
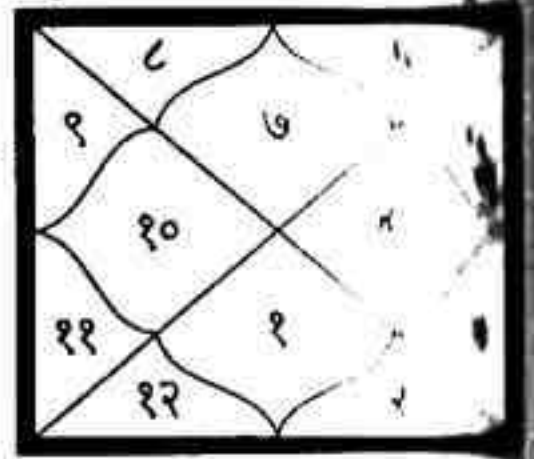
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा उच्च के बुध प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ तथा सुख की प्राप्ति होती है। यहां से बुध अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक को शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानियां बनी रहती हैं और उनसे वह कुछ अनुचित उपायों का आश्रय लेकर काम निकालता है। संक्षेप में ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

तुला लग्न: द्वादशभाव
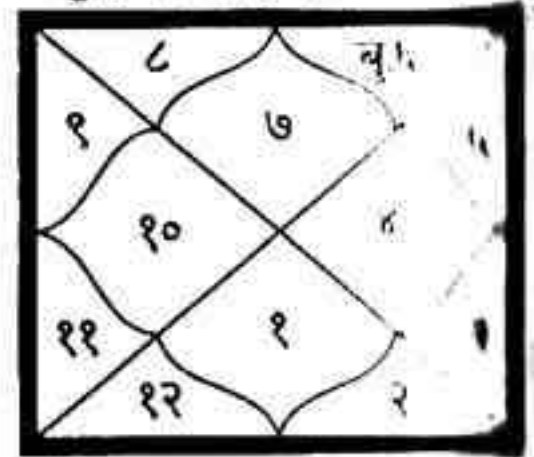
'तुला' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं पुरुषार्थ की वृद्धि होती है तथा पुरुषार्थ द्वारा मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है। भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा शत्रु-पक्ष में हिम्मत के द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: संतानपक्ष से वैमनस्य एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी। नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति रहेगी तथा यश भी प्राप्त होगा।

तुला लग्न: प्रथमभाव
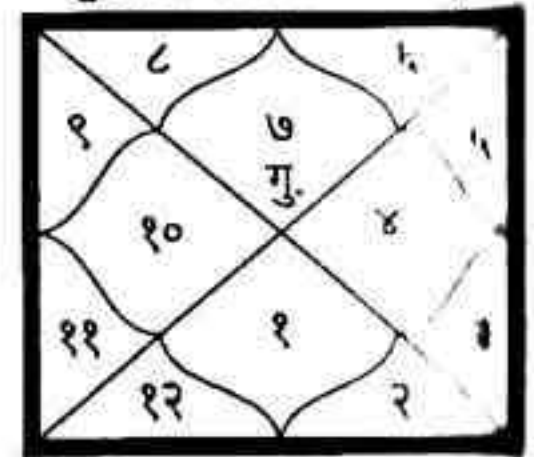
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः द्वितीयभावः गुरु

८१६

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि करता है, परंतु भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी ही मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपने धन तथा शक्ति के बल पर शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण पुरातत्त्व की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है तथा आयु की वृद्धि होती है। नवीं उच्च एवं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य द्वारा सम्मान, पिता द्वारा सुख तथा व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।
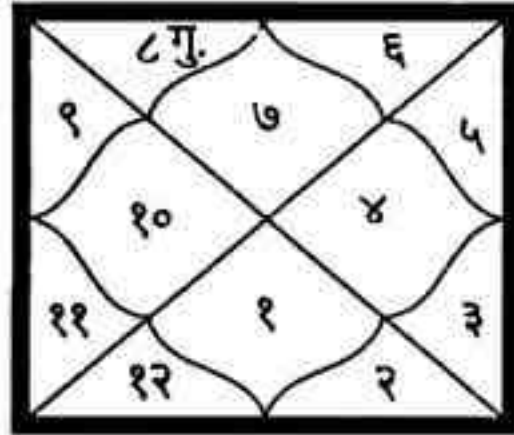
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः तृतीयभावः गुरु

८१७

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के स्थान में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के सुख में सामान्य परेशानी आती है, परंतु शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त होता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती रहती है तथा जातक सुखी, प्रभावशाली एवं संपन्न जीवन व्यतीत करता है। उसे राजकीय क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है।
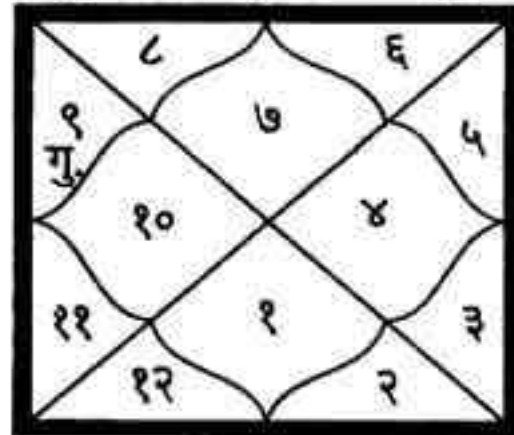
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः चतुर्थभावः गुरु

८१८

चौथे माता, सुख एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को भूमि, मकान एवं माता के सुख में कमी का अनुभव होता है। साथ ही भाई-बहन के सुख में भी कमी आती है तथा शत्रु पक्ष से भी परेशानियां उठानी पड़ती हैं। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव
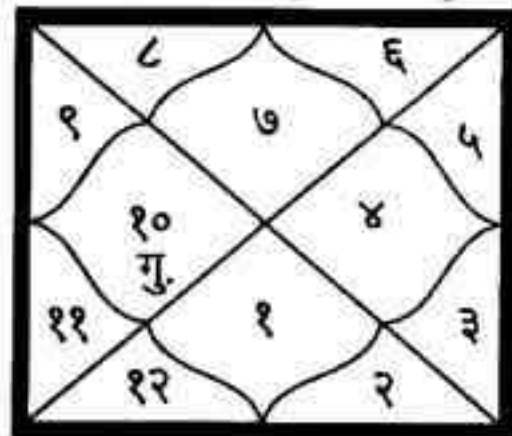
को देखता है, अतः पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति में कुछ वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को मित्र चंद्रमा की राशि में देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय द्वारा सफलता की प्राप्ति होती है तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः पंचमभाव

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है एवं शत्रु पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। भाई-बहनों से कुछ मतभेद बना रहता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ द्वारा भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ होता रहता है तथा नवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। परंतु गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक के स्वास्थ्य एवं संतान के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः षष्ठभाव

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव तथा झगड़े-झंझट के कामों में सफलता प्राप्त करता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहन के पक्ष में कुछ वैमनस्य बना रहता है तथा पुरुषार्थ में भी कुछ परतंत्रता का अनुभव होता है। यहां से गुरु पांचवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य के द्वारा सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की वृद्धि होती है, परंतु कुटुंब से कुछ मतभेद रहता है। प्रतिष्ठा के क्षेत्र में वृद्धि भी होती है।
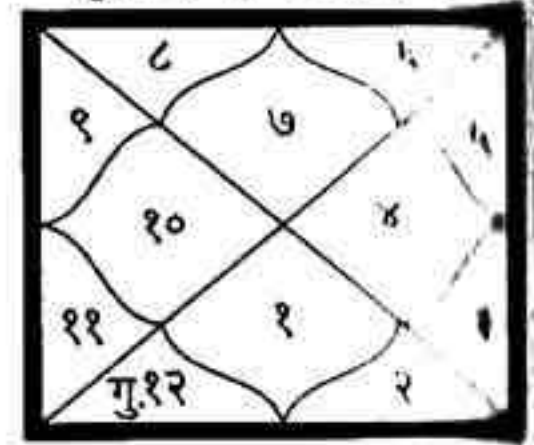
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सातवेंभाव' 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः सप्तमभावः गुरु

८२१

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय की उन्नति करता है तथा स्त्री की शक्ति भी पाता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक का स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय में भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन की शक्ति पाता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में सामान्य परेशानी रहती है, परंतु प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही धनुराशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है।
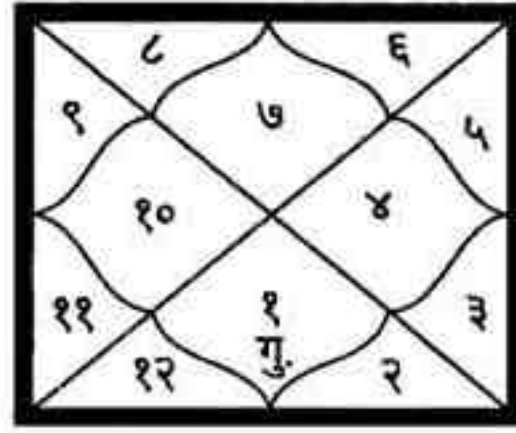
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः अष्टमभावः गुरु

८२२

अठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व की सामान्य-शक्ति प्राप्ति होती है तथा आयु की वृद्धि होती है। साथ ही भाई-बहन के सुख में कमी, पराक्रम के क्षेत्र में कमजोरी तथा शत्रु-पक्ष से परेशानी का अनुभव भी होता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा परतंत्रता का-सा अनुभव भी होता है।
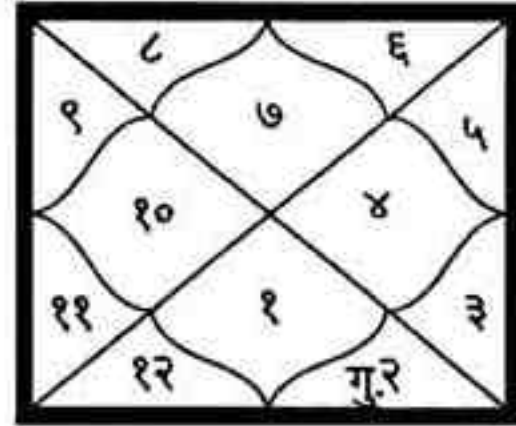
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः नवमभावः गुरु

८२३

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है, साथ ही उसे यश भी प्राप्त होता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को शत्रु पक्ष अथवा झगड़ों के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयों
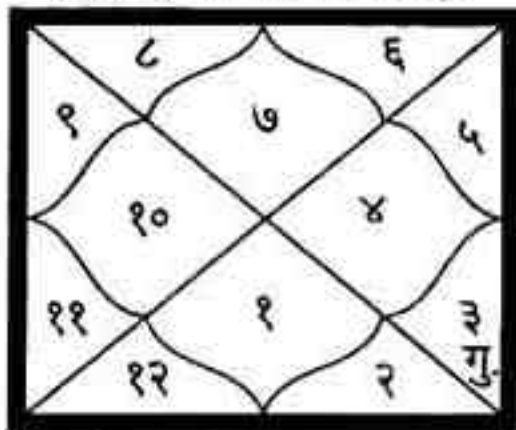
का सामना करना पड़ता है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प...
को देखता है, अतः शरीर में कुछ परेशानी रहते हुए भी प्रभाव की वृद्धि होती है। ...
दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन का सुख ...
तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य की उन्नति भी होती है। ...
दृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा परिश्रम द्वारा ...
बुद्धि एवं वाणी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है और जातक प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

तुला लग्नः दशमभावः गु

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही भाई-बहन का सुख भी मिलता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को कुटुंब का सुख मिलता है तथा धन की वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, एवं भूमि-मकान आदि के सुख में कुछ कमी आती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में विजय एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ होता है, परंतु गुरु के पराक्रमेश होने के कारण भाई-बहनों से मतभेद रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

तुला लग्नः एकादशभावः गु

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी एवं ऐश्वर्य की वृद्धि करता है और उसे शत्रु-पक्ष से लाभ प्राप्त होता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहती है, परंतु बुद्धि अधिक होती है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्री पक्ष से भी शक्ति प्राप्त होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक का भाई-बहनों से कुछ मतभेद बना रहता है तथा लाभ एवं व्यवसाय के पक्ष में भी उसे विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–
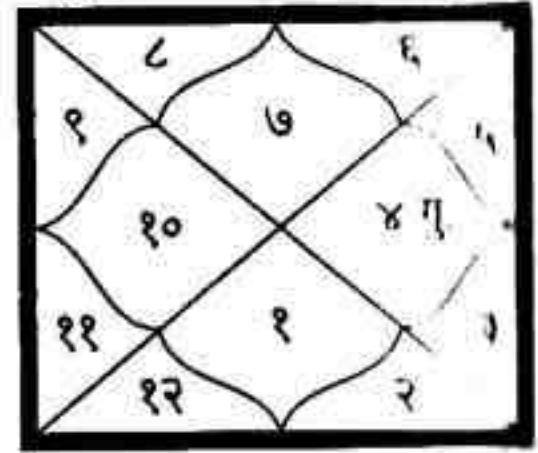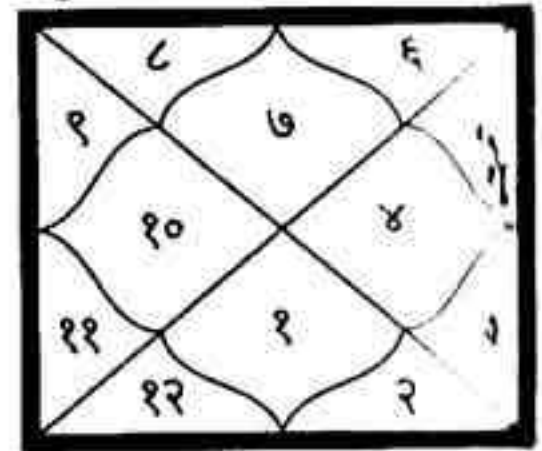
बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पुरुषार्थ पर भी उसका कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यहां से गुरु पांचवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण जातक गुप्त युक्तियों द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है, परंतु उसे कुछ दबना भी पड़ता है। नवीं दृष्टि से अष्टमभाव को शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है तथा गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहनों से कुछ परेशानी भी रहती है।

तुला लग्नः द्वादशभावः गुरु
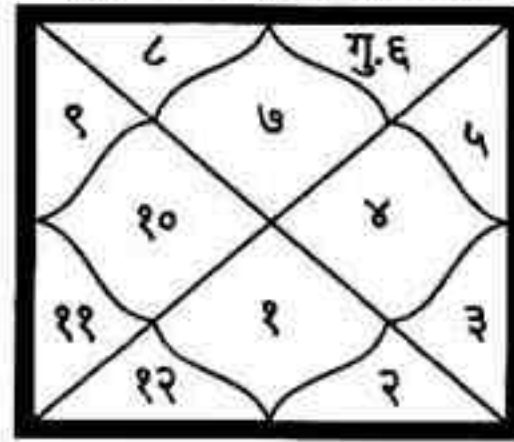
८२६

'तुला' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र और शरीर स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के कारण जातक के आत्म-बल तथा शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। वह मनस्वी एवं मानी होता है, परंतु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण कभी-कभी शरीर में परेशानी का अनुभव भी करता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यावसायिक उन्नति के लिए भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

तुला लग्नः प्रथमभावः शुक्र
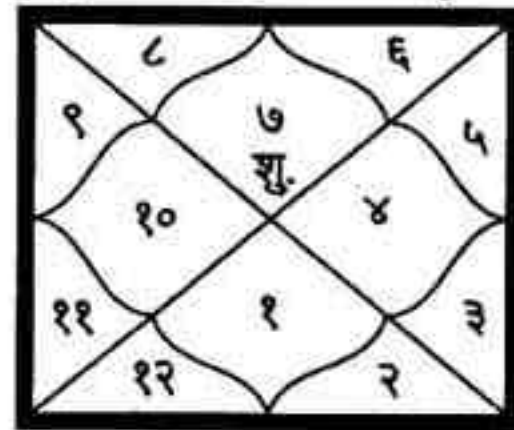
८२७

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुंब का सुख प्राप्त होता है। शुक्र के अष्टमेश होने के कारण धन-संचय तथा कुटुंब-सुख में कुछ परेशानियां भी आती रहती हैं। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को

तुला लग्नः द्वितीयभावः शुक्र
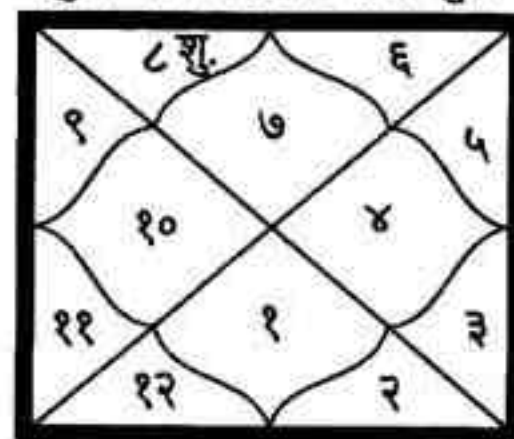
८२८

आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। कुल मिलाकर जातक अमीरी ढंग से जीवन बिताता है तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: तृतीयभाव: शुक्र

तीसरे भाई-बहन तथा पराक्रम के स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का भाई-बहनों के साथ कुछ वैमनस्य रहता है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि के बुध की मिथुन राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता प्राप्त होती है। चातुर्य एवं शारीरिक परिश्रम के द्वारा जातक प्रभावशाली जीवन व्यतीत करता है।
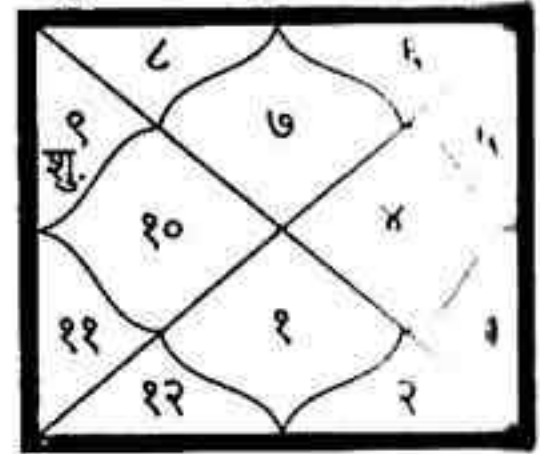
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

चौथे केंद्र, माता, सुख एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख तो प्राप्त होता है, परंतु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण उसमें कुछ कमी भी बनी रहती है। जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। वह सुखी जीवन व्यतीत करता है।
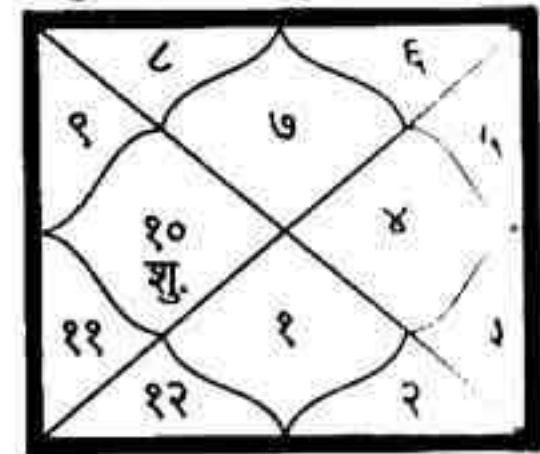
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को वाक्चातुर्य, बुद्धि एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परंतु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण संतान के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को लाभ के क्षेत्र में सफलता मिलती है साथ ही वह बुद्धिमान भी होता है।

तुला लग्न: पंचमभाव: शुक्र
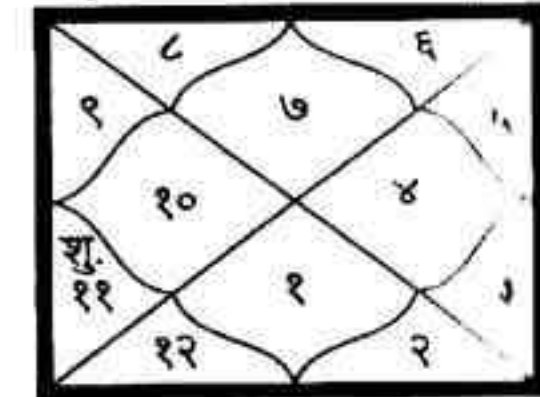
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

८३२

छठे शत्रु, रोग एवं पीड़ा के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा बड़ी-बड़ी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी सामान्य लाभ होता है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में परेशानी उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों से भी कुछ कष्ट होता है। सामान्यतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक शान-शौकत का जीवन व्यतीत करता है।
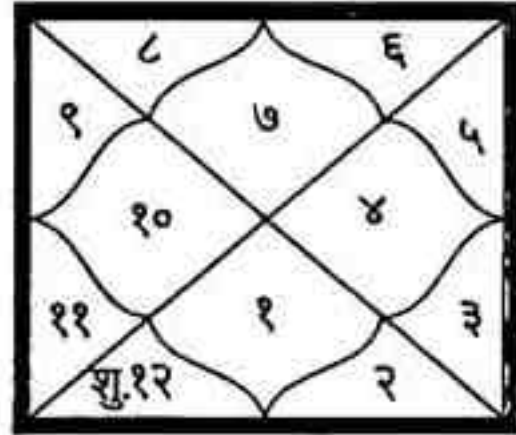
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

८३३

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयां रहते हुए भी उससे शक्ति प्राप्त होती है तथा शारीरिक परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का भी लाभ होता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौंदर्य, आत्म-बल तथा प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।
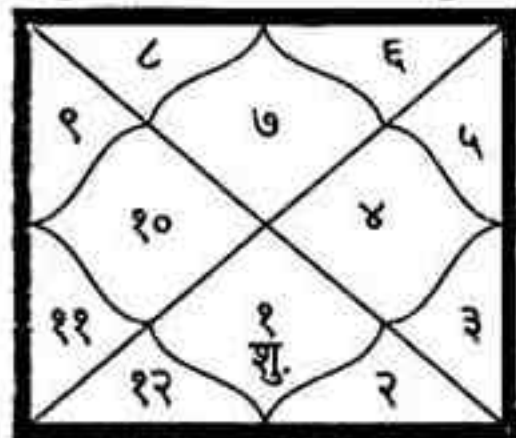
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

८३४

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण जातक के शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है। उसका जीवन शान के साथ व्यतीत होता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रु दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है। इस कारण जातक को धन-वृद्धि के लिए चतुराई का आश्रय लेना पड़ता है तथा कुटुंबीजनों से कुछ वैमनस्य बना रहता है।
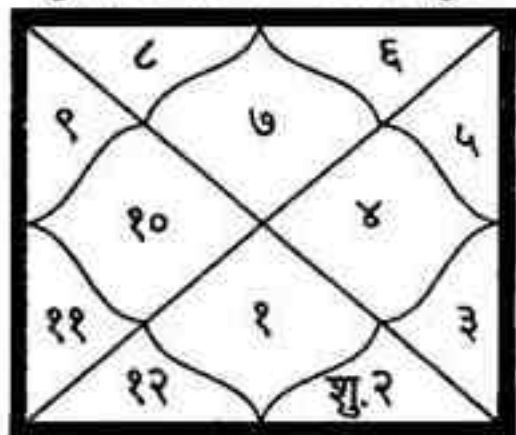
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः नवमभाव शुक्र

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की कुछ कमी के साथ उन्नति होती है। ऐसा जातक भाग्य पर अधिक निर्भर रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति और शारीरिक-सौंदर्य एवं शील की उपलब्धि भी होती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है अतः जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहनों से सामान्य मतभेद बना रहता है।
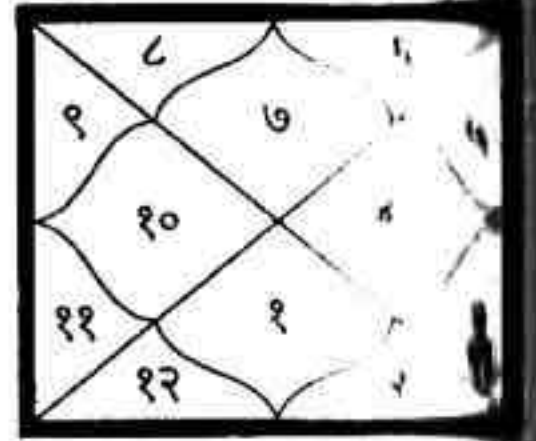
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः दशमभाव शुक्र

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। उसे शारीरिक-शक्ति, प्रभाव एवं आयु की शक्ति मिलती है। शारीरिक परिश्रम तथा चातुर्य के द्वारा उसे विशेष सफलता मिलती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है।
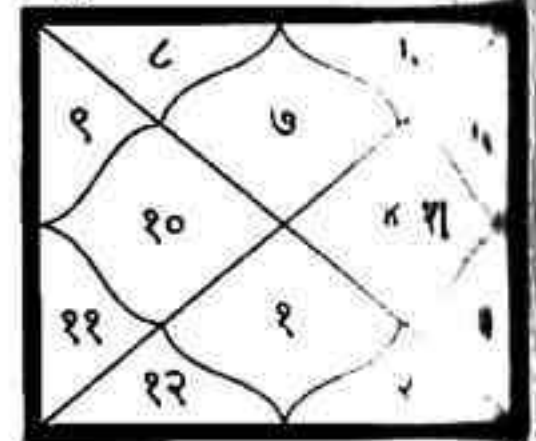
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः एकादशभाव शुक्र

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम एवं चातुर्य के द्वारा आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। उसका जीवन सामान्यतः आनंदमय व्यतीत होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है, वाणी की शक्ति में वृद्धि होती है, परंतु संतानपक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है।
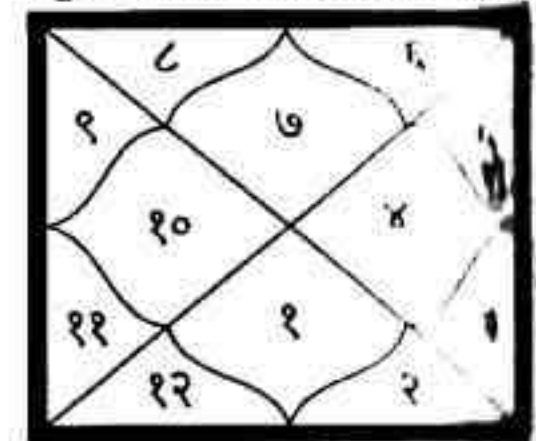
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध में भी परेशानियां आती हैं। इसके साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ हानि एवं शारीरिक क्षेत्र में दुर्बलता प्राप्त होती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में हिम्मत और चतुराई से सफलता प्राप्त करता है।

तुला लग्नः द्वादशभावः शुक्र
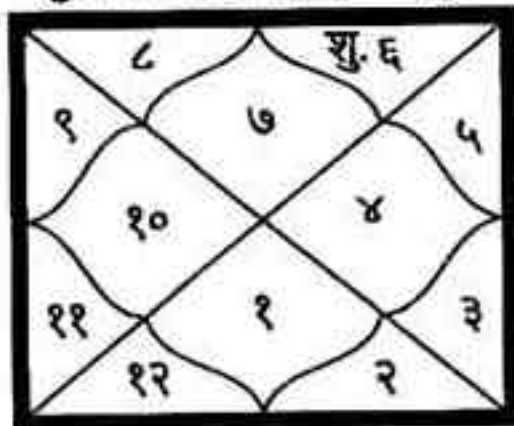
८३८

'तुला' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक का शरीर स्थूल एवं प्रभावशाली होता है। उसे माता, भूमि तथा मकान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। संतानपक्ष भी प्रबल रहता है एवं विद्या के क्षेत्र में भी उन्नति होती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहन के संबंधों में कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम के क्षेत्र में विशेष परिश्रम करने पर ही सफलता मिलती है। सातवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता के सुख में कुछ कमी रहती है, राज्य के क्षेत्र में सम्मान मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

तुला लग्नः प्रथमभावः शनि
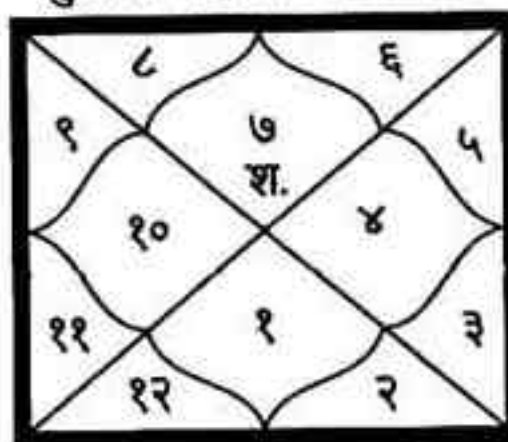
८३९

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः द्वितीयभाव: श[illegible]

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा कुटुंबीजनों से कुछ मतभेद बना रहता है। साथ ही संतानपक्ष में कुछ कमी आती है तथा विद्या की शक्ति प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है [illegible] शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों [illegible] सफलता मिलती है तथा लाभ प्राप्ति के लिए बुद्धि का विशेष उपयोग करना [illegible]
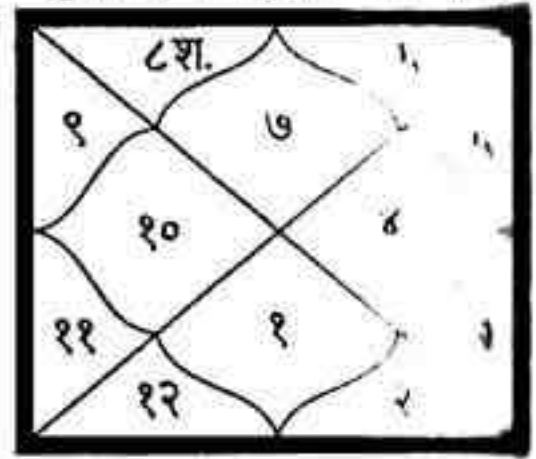
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' [illegible] 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

तुला लग्नः तृतीयभाव: श[illegible]

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनुराशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहन की शक्ति प्राप्त होते हुए भी उनसे वैमनस्य बना रहता है। उसे माता के द्वारा भी शक्ति प्राप्त होती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या और संतान की शक्ति यथेष्ट प्राप्त होती है, परंतु उसकी वाणी में उत्तेजना रहती है और संतान से सुख प्राप्त होते हुए भी कुछ मतभेद बना रहता है। यहां से शनि सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: बुद्धि-योग से जातक के भाग्य की उन्नति [illegible] है तथा धर्म में रुचि बनी रहती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण [illegible] अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है।
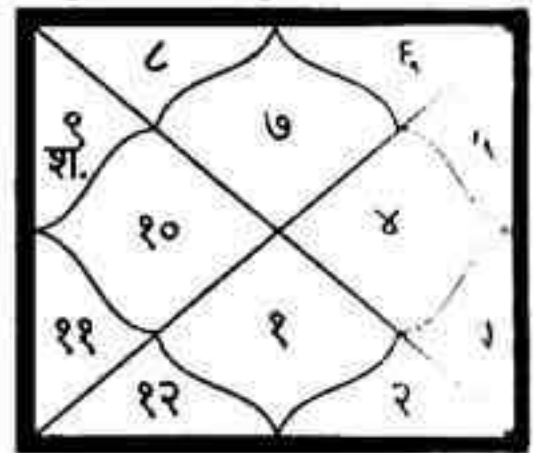
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' म 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः चतुर्थभाव: श[illegible]

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं भवन के स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे संतान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखता है। सातवीं
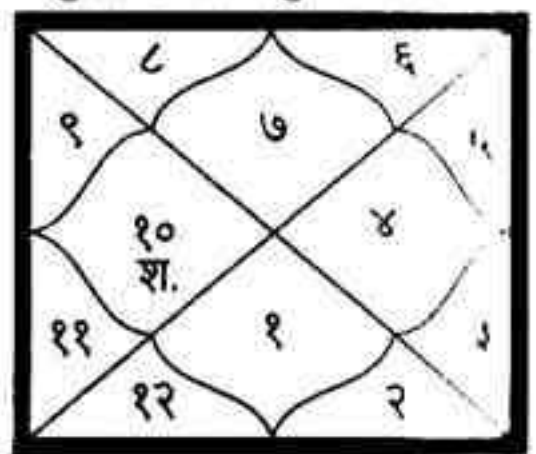
दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रखते हुए भी सुख प्राप्त होता तथा राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं उच्चदृष्टि से लग्नभाव को देखने से शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है और जातक बड़ा प्रभावशाली, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: पंचमभाव: शनि

८४३

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपनी ही कुंभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहां से शनि तीसरी नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री से मतभेद एवं दैनिक व्यवसाय के मार्ग में कठिनाइयां बनी रहती हैं। विषय-भोगादि के पक्ष में भी कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कुछ कठिनाइयां आती हैं तथा कुटुंब से भी मतभेद बना रहता है, परंतु ऐसा व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा मनमौजी होता है।
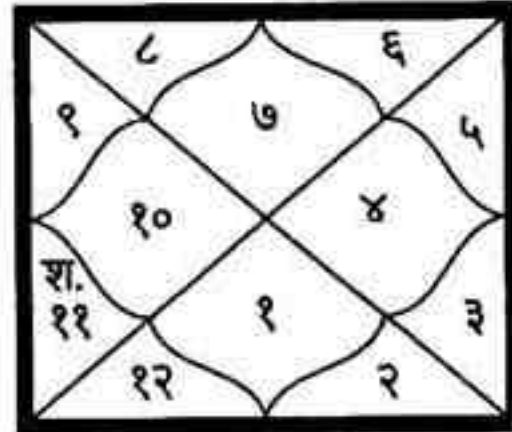
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: षष्ठभाव: शनि

८४४

छठे शत्रु एवं झंझट के स्थान में अपने गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में अपनी युक्ति के द्वारा सफलता प्राप्त करता है। साथ ही उसे माता, भूमि, संतान एवं विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संपर्क से लाभ नहीं होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परंतु पुरुषार्थ में वृद्धि होती है।
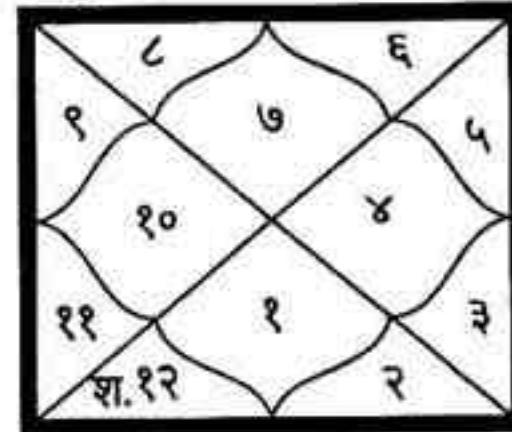
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री, गृहस्थी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अशांति एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही विद्या व संतान के पक्ष में भी कुछ कमजोरी रहती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: जातक बुद्धि-योग से भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर का कद लंबा होता है तथा शारीरिक-सुख की प्राप्ति भी होती है। दसवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को अपनी ही मकर राशि में देखने से माता के पक्ष से कुछ शक्ति मिलती है तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ कमी के साथ सुख भी प्राप्त होता है, फिर भी मस्तिष्क में चिंताओं का निवास बना रहता है।

तुला लग्न: सप्तमभाव: शनि
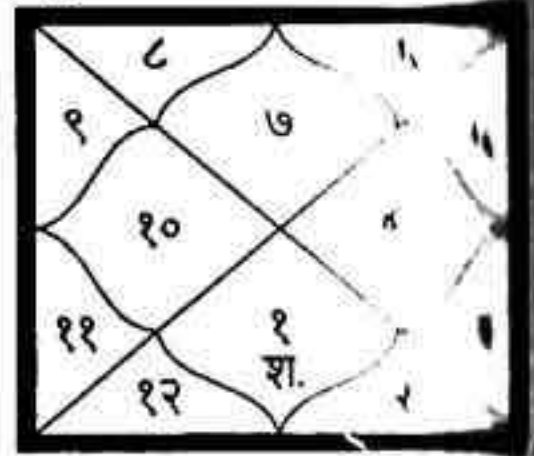
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभराशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु बड़ी होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसके माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है तथा विद्या एवं संतान के पक्ष में भी कष्ट एवं त्रुटियों का सामना करना पड़ता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कष्ट, वैमनस्य एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कौटुंबिक सुख में व्यवधान पड़ता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को स्वराशि में देखने के कारण विद्या एवं संतान की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है, परंतु ऐसे जातक के मस्तिष्क में परेशानियां घर किए रहती हैं।

तुला लग्न: अष्टमभाव: शनि
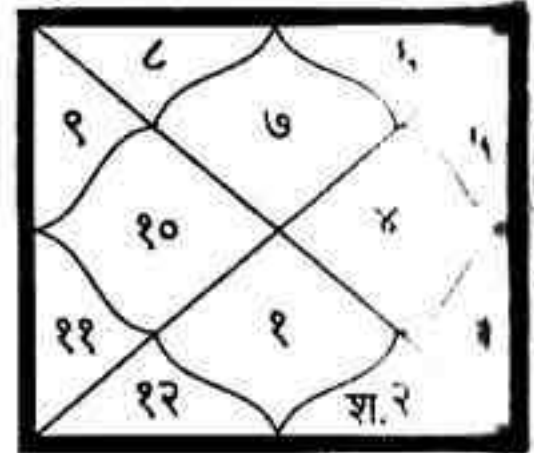
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुनराशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक अपनी बुद्धि द्वारा भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। वह विद्या एवं संतान के पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव

तुला लग्न: नवमभाव: शनि
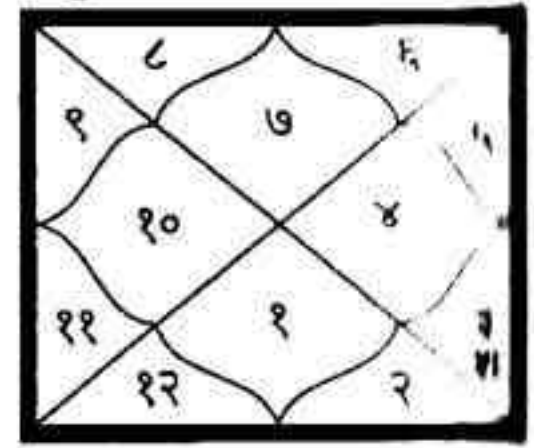
देखता है, अतः जातक की आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से पराक्रमभाव को देखने के कारण भाई-बहनों से मतभेद रहता है तथा परिश्रम द्वारा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा बुद्धि-बल से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा जातक अपनी बुद्धि के प्रयोग से भाग्य की उन्नति करता है तथा आनंद का उपयोग करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः दशमभावः शनि

८४८

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होता है। वह विद्वान होता है, परंतु संतान के साथ उसका मतभेद बना रहता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक खर्चीला होता है और उसे बाहरी स्थानों के संबंधों से शक्ति प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही मकर राशि के चतुर्थभाव में देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। दसवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती रहती है।
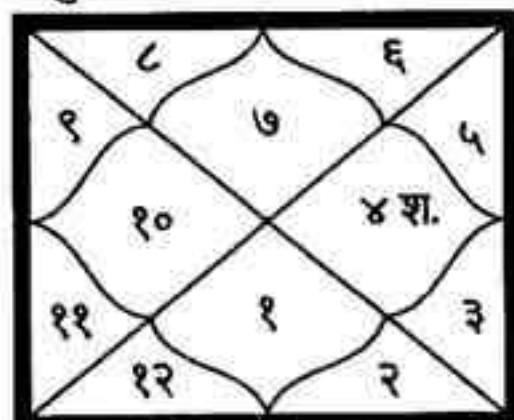
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः एकादशभावः शनि

८४९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख मिलता है। तीसरी उच्चदृष्टि से अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही कुंभ राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं संतान की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति विशेष स्वार्थी होता है। वह लापरवाह, मस्तमौला तथा चिंतित स्वभाव का भी होता है।
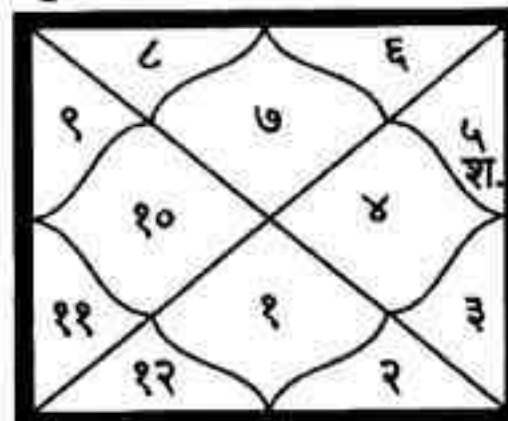
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है, परंतु माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है। यहां से तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-संचय में कमी आती है तथा कुटुंब से मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में सामान्य प्रभाव रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म के मामलों में रुचि बनी रहती है। ऐसे जातक की बुद्धि एवं वाणी [illegible] सा भी बना रहता है।

तुला लग्नः द्वादशभा[illegible]

८ ९ ७ १० ११ १ १२
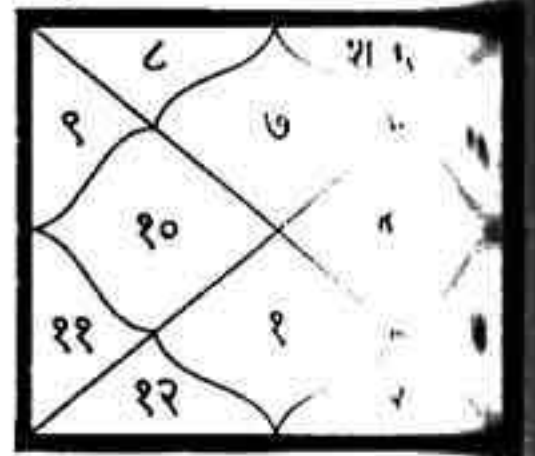
'तुला' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना [illegible]

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर मे दुर्बलता एवं परेशानी बनी रहती है। उसे अपनी उन्नति के लिए गुप्त चातुर्य का आश्रय लेना पड़ता है। दिखावटी रूप में वह अपना प्रभाव प्रदर्शित करता है, परंतु भीतरी रूप में परेशान रहता है। वह अपनी उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसकी उन्नति के मार्ग में विशेष कठिनाइयां आती हैं, फिर भी वह अपनी सूझ-बूझ एवं गुप्त युक्तियों के बल पर संकटों पर विजय प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

तुला लग्नः प्रथमभा[illegible]
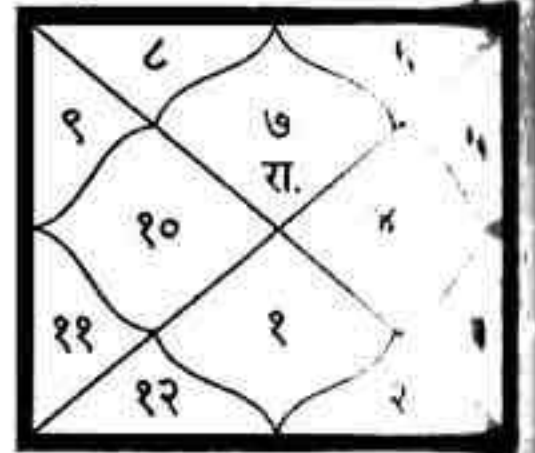
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना [illegible]

तुला लग्नः द्वितीयभा[illegible]

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-संचय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी घोर आर्थिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है। किसी-किसी समय उसे कहीं से आकस्मिक रूप में भी धन प्राप्त हो जाता है। वह गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर किसी-न-किसी प्रकार अपना काम चलाता है। ऐसे जातक को अपने कुटुंब के द्वारा भी क्लेश प्राप्त होता है।
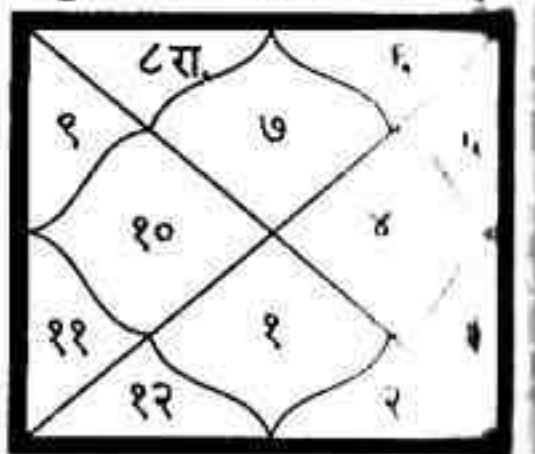
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः तृतीयभावः राहु

८ ६ ९ रा. ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

८५३

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पराक्रम के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है तथा भाई-बहनों के संबंध से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी शक्ति एवं पुरुषार्थ की वृद्धि के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा अनुचित मार्ग पर चलने से भी नहीं चूकता। उसे अपने जीवन में कभी-कभी घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु धैर्य, गुप्त युक्ति एवं चातुर्य के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है।
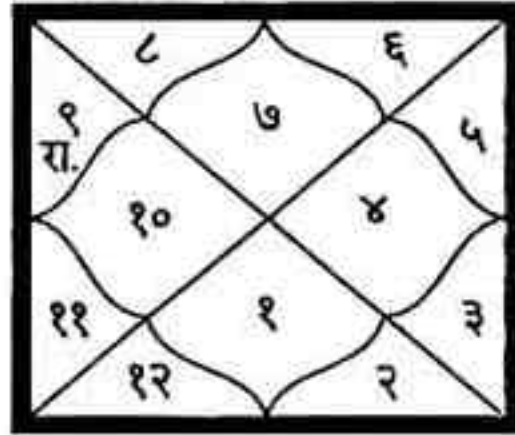
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः चतुर्थभावः राहु

८५४

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी का अनुभव होता है, परंतु शनि की राशि पर स्थित होने के कारण, वह गुप्त युक्ति, हिम्मत एवं दृढ़ता के बल पर संकटों का सामना करते हुए सफलता प्राप्त करता है और सामान्य रूप से सुखी भी होता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षपूर्ण बना रहता है।
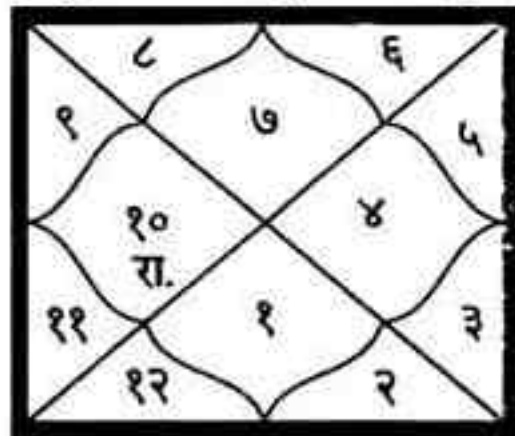
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः पंचमभावः राहु

८५५

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क कुछ-न-कुछ परेशान बना रहता है। वह सदैव चिंतित बना रहता है तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए सत्य-असत्य की परवाह नहीं करता। ऐसा जातक अपने शब्दों पर दृढ़ता प्रदर्शित करता है और गुप्त युक्तियों से काम लेता है।
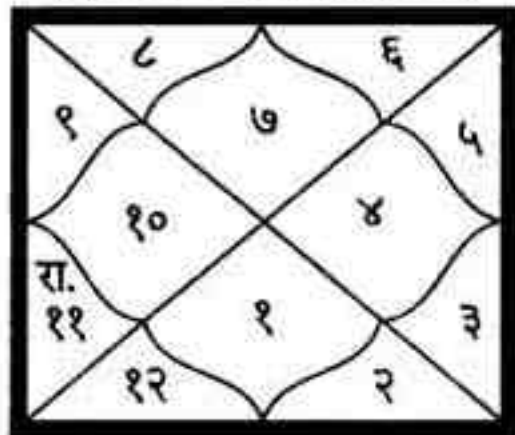
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः षष्ठभावः राहु

छठे शत्रु एवं झगड़े के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से परेशानियां तो उठानी पड़ती हैं, परंतु वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है और अपना प्रभाव स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है और गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रु, झंझट एवं विपक्षियों पर सफलता पाता रहता है।
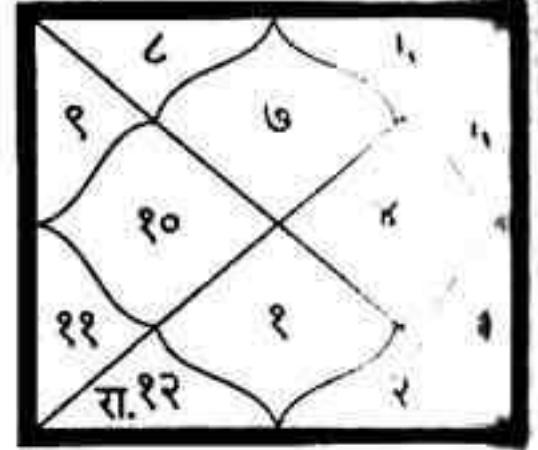
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः सप्तमभावः राहु

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं, परंतु गुप्त युक्ति, धैर्य एवं हिम्मत के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त करता है। व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी महान संकट के अवसर उपस्थित होते हैं, परंतु कठिन संघर्ष के बाद वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार स्त्री पक्ष में भी कठिनाइयों के बाद कुछ सफलता पाता है।
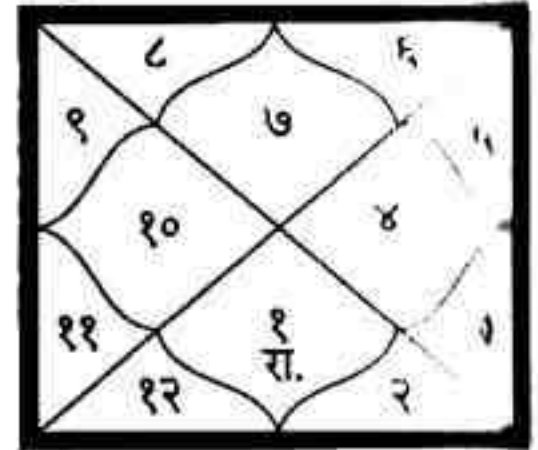
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः अष्टमभावः राहु

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी प्राणों पर भी नौबत बन आती है, परंतु मृत्यु नहीं होती। इसके साथ ही जातक को पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उसे अपने दैनिक जीवन में चिंता, परेशानी संघर्ष एवं झंझटों का सामना करना पड़ता है।
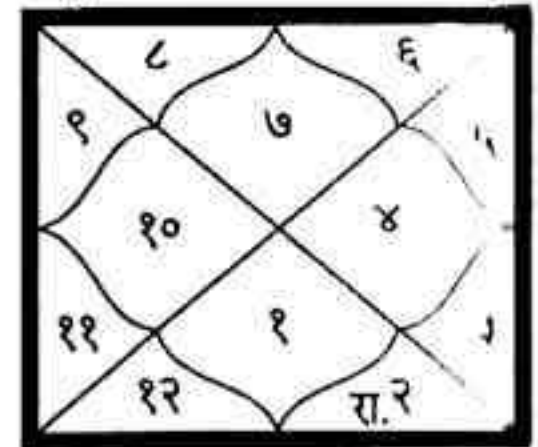
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: नवमभाव: राहु

८५९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक गुप्त युक्तियों के बल पर अपने भाग्य की विशेष वृद्धि करता है तथा धर्म का भी सतर्कतापूर्वक पालन करता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति में कभी-कभी बाधाएं भी आती हैं, परंतु अपने चातुर्य, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन सब पर सफलता प्राप्त करता रहता है तथा भाग्यवान् समझा जाता है।
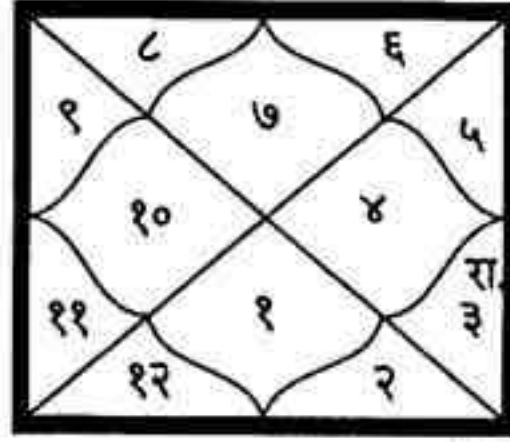
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: दशमभाव: राहु

८६०

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है। साथ ही राज्य के क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। व्यवसाय के क्षेत्र में उसके समक्ष बड़ी-बड़ी कठिनाइयां आती हैं तथा उन्नति के मार्ग में रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा जातक बहुत परेशानियों तथा कठिनाइयों के बाद ही उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर पाता है।
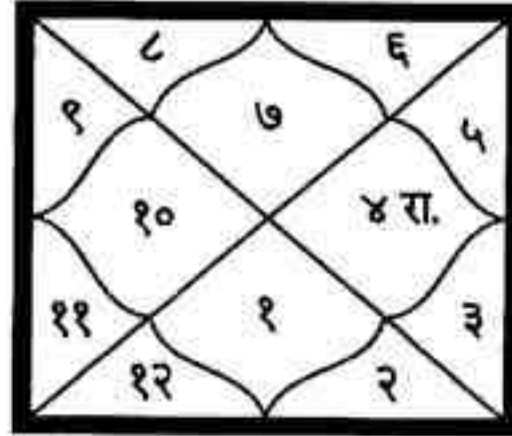
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: एकादशभाव: राहु

८६१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परंतु गुप्त युक्ति, चातुर्य एवं हिम्मत के कारण उन सब पर विजय प्राप्त करके जातक अपनी उन्नति करता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु अपनी हिम्मत एवं परिश्रम के बल पर अंतत: उसे सफलता भी प्राप्त होती है।
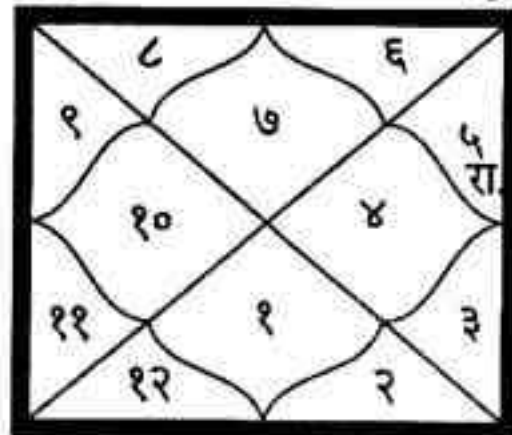
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी बड़े संकट का शिकार भी होना पड़ता है। बाहरी स्थानों के संबंध से जातक को कुछ संकट भी प्राप्त होता है। संक्षेप में ऐसा जातक अपने गुप्त युक्ति-बल, परिश्रम, विवेक, कूटनीति, धैर्य तथा हिम्मत के कारण जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

तुला लग्नः द्वादशभाव
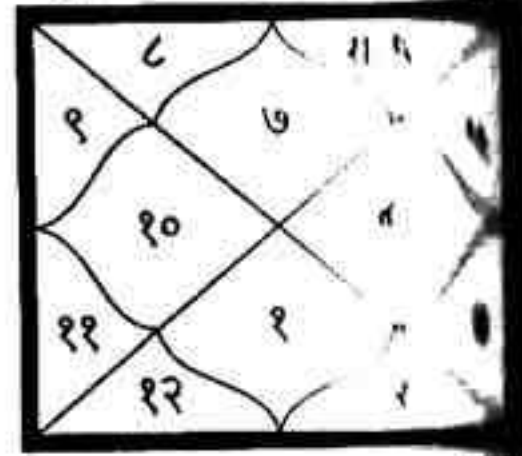
'तुला' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक पक्ष में कभी-कभी विशेष कष्ट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परंतु ऐसा जातक गुप्त-युक्ति, धैर्य एवं चातुर्य के बल पर अपने व्यक्तित्व की उन्नति करता है तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। शरीर के भीतर गुप्त कमजोरी के रहते हुए भी वह बाहर से बड़ा हिम्मतवर बना रहता है तथा बुद्धि-बल से सफल एवं विजयी होता है।

तुला लग्नः प्रथमभाव
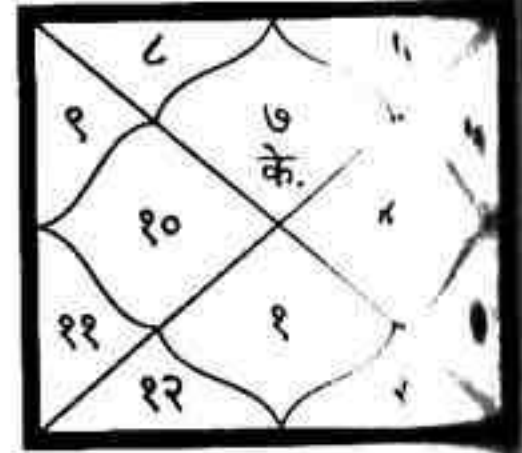
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन-संचय एवं धन-प्राप्ति के मार्ग में कठिनाइयों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर धनोपार्जन करता है, फिर भी वह चिंतित तथा परेशान ही बना रहता है। उसे अपने कुटुंबियों द्वारा भी कष्ट प्राप्त होता है, परंतु ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान होता है।

तुला लग्नः द्वितीयभाव
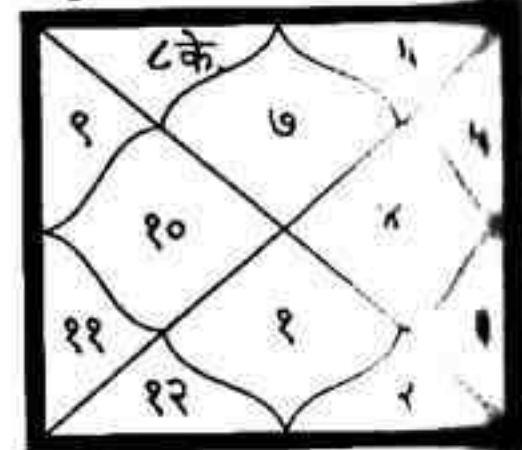
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है और उसे भाई-बहनों का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान तथा साहसी होता है। कभी-कभी उसे भाई-बहनों के कारण कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है तथा मन के भीतर परेशानी एवं कमजोरी उत्पन्न होती है, फिर भी वह बड़ी हिम्मत से काम लेता है तथा अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

तुला लग्नः तृतीयभावः केतु
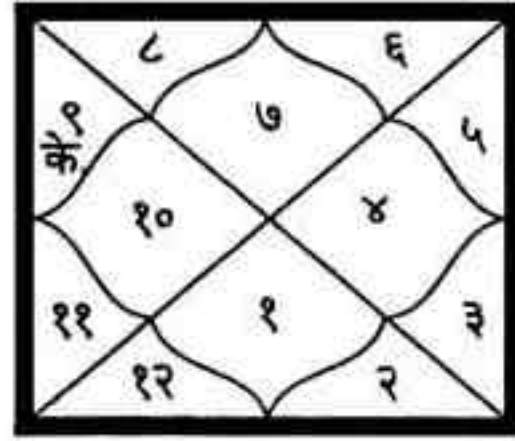
८६५

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है। वह घरेलू झंझटों का शिकार बना रहता है। कभी-कभी उसके परिवार में घोर अशांति उत्पन्न हो जाती है, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस, बुद्धि एवं गुप्त युक्तियों के बल पर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है और थोड़ी-बहुत सफलता भी पाता है।

तुला लग्नः चतुर्थभावः केतु
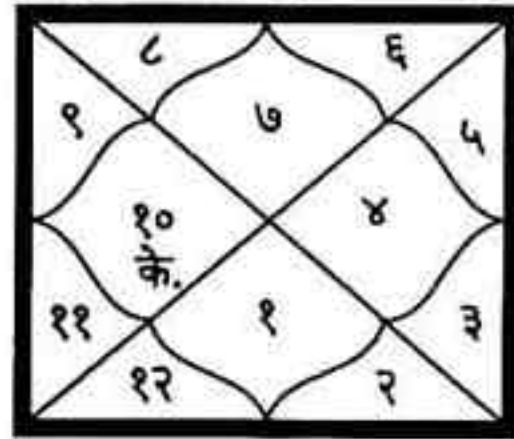
८६६

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से संकट एवं परेशानी की प्राप्ति होती है, साथ ही विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं। शनि की राशि पर स्थित होने के कारण जातक परिश्रम द्वारा विद्याध्ययन करता है तथा अनेक कठिनाइयों के बाद संतानपक्ष में भी थोड़ी-बहुत सफलता पाता है, फिर भी उसे संतान की ओर से अत्यधिक परेशानियां तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। संभव है कि ऐसा व्यक्ति निस्संतान ही बना रहे।

तुला लग्नः पंचमभावः केतु
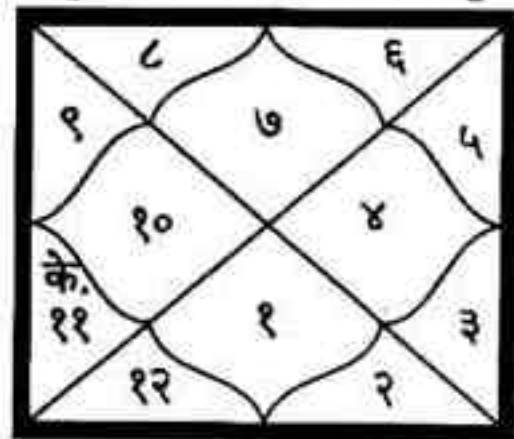
८६७

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्नः षष्ठभावः केतु

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक झगड़े-झंझट, रोग एवं शत्रु-पक्ष में बड़ी हिम्मत, बहादुरी, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी शत्रुओं के कारण उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु वह भयभीत नहीं होता और बहादुरी के साथ मुकाबला करते हुए उन पर विजय पाता है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक का ननिहाल पक्ष कमजोर रहता है।
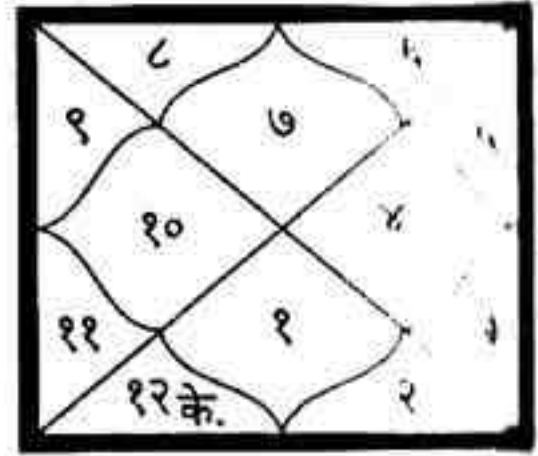
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः सप्तमभावः केतु

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष द्वारा विशेष कष्ट का अनुभव होता है तथा दैनिक आमदनी के मार्ग में भी अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए गुप्त युक्तियों, धैर्य, हिम्मत एवं परिश्रम का सहारा लेता है, जिसके कारण थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक को इन्द्रिय-विकार का भी सामना करना पड़ता है तथा गृहस्थी के संचालन में बहुत कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं।
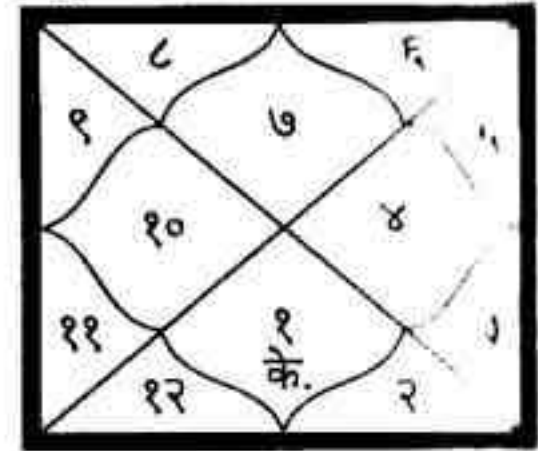
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः अष्टमभावः केतु

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के विषय में अनेक बार कठिनाइयों तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। उसे पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन गुप्त चिंताओं से ग्रस्त बना रहता है। उसके पेट में भी कुछ-न-कुछ विकार रहता है, परंतु वह साहस, धैर्य एवं गुप्त युक्तियां के बल पर किसी प्रकार अपने जीवन को आगे बढ़ाता चलता है।
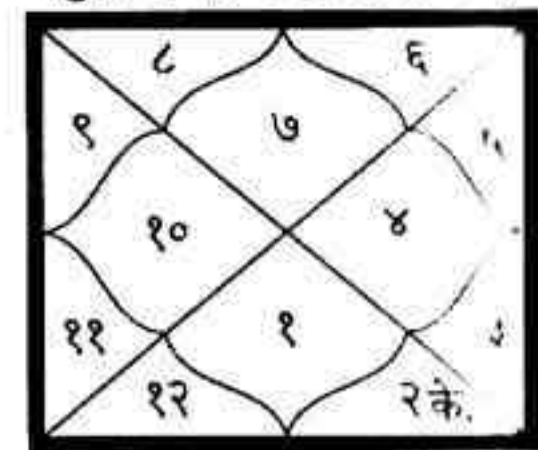
जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में विशेष बाधाएं आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। भाग्य के संबंध में जातक को कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनुचित उपायों से भी अपना स्वार्थ सिद्ध करता है तथा अपयश पाता है। ईश्वर तथा धर्म के विषय में उसकी श्रद्धा कम होती है और वह धर्म के विरुद्ध आचरण करने में भी नहीं हिचकिचाता।

तुला लग्नः नवमभावः केतु
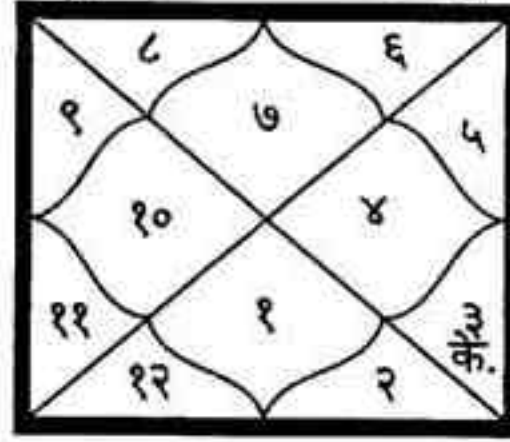
८७१

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है, राजकीय क्षेत्रों में परेशानी होती है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी बारम्बार कठिनाइयों एवं विघ्नों का सामना करना पड़ता है। किसी-किसी समय उसके सामने बड़े व्यावसायिक संकट भी उपस्थित हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में अनेक बार उतार-चढ़ाव देखता है तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता प्राप्त करता है।

तुला लग्नः दशमभावः केतु
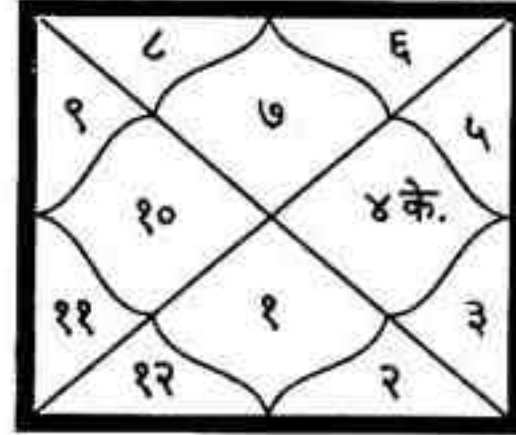
८७२

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा विघ्नों का सामना तो करना पड़ता है, परंतु विशेष परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के द्वारा उसे सफलता भी प्राप्त होती है। किसी-न-किसी समय उसे लाभ के क्षेत्र में गहरे संकटों में भी फंस जाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अधिक मुनाफा खाने के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा प्रभावशम्नी भी होता है। ऐसे लोग अनेक कठिनाइयों एवं संकटों से गुजरने के बाद सफलता प्राप्त करते हैं।

तुला लग्नः एकादशभावः केतु
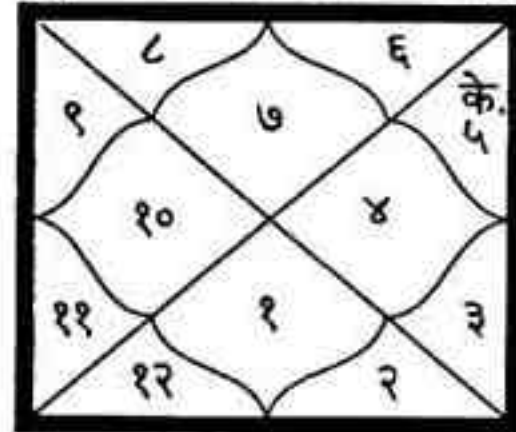
८७३

जिस जातक का जन्म 'तुला ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक खूब खर्चीला होता है, साथ ही उसे बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च को चलाते रहने के लिए विवेक-बुद्धि से काम लेता है तथा कठिन परिश्रम भी करता है। इतने पर भी उसे कभी-कभी घोर संकटों एवं परेशानियों का शिकार बन जाना पड़ता है। बाहरी स्थानों के संबंध से भी उसे कभी-कभी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं, परंतु अंत में सफलता मिलती है।

तुला लग्नः द्वादशभावः

'तुला' लग्न का फलादेश समाप्त
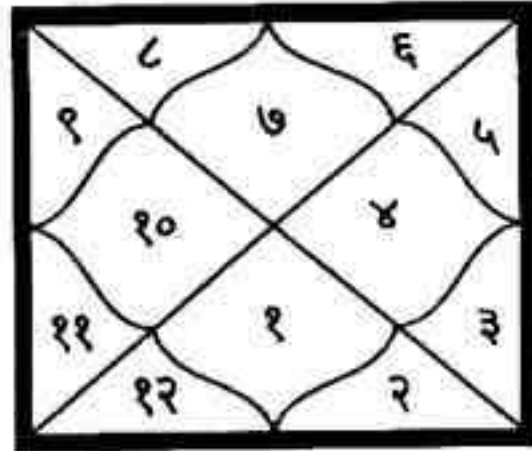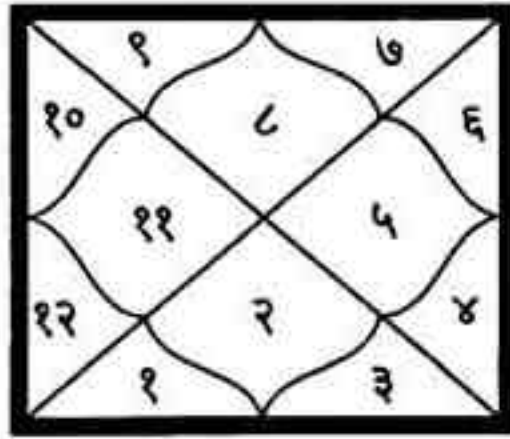
वृश्चिक लग्न

८७६

वृश्चिक लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का अपनी माता के साथ मतभेद रहता है और भूमि तथा मकान के सुख में भी कुछ कमी आती है। घरेलू सुख तो मिलता है, परंतु उसमें भी कुछ त्रुटियां बनी रहती हैं। यहां से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से दशमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः जातक को पिता का सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति उन्नति स्वयं करता है।

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य
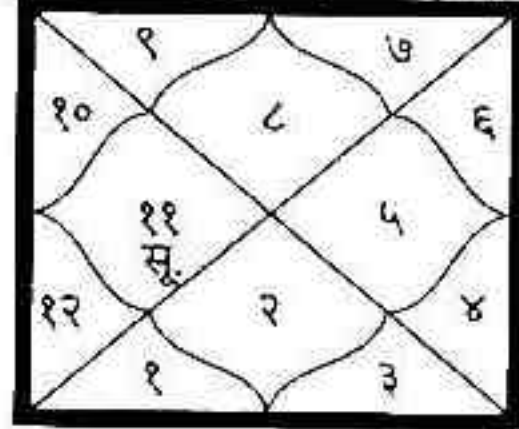
८८१

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सम्मान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। वह राजनीति के क्षेत्र में उन्नति करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सम्मान तथा सहयोग पाता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं। वह अपने बुद्धि-बल से आमदनी को बढ़ाता तथा यश एवं सुख प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव: सूर्य
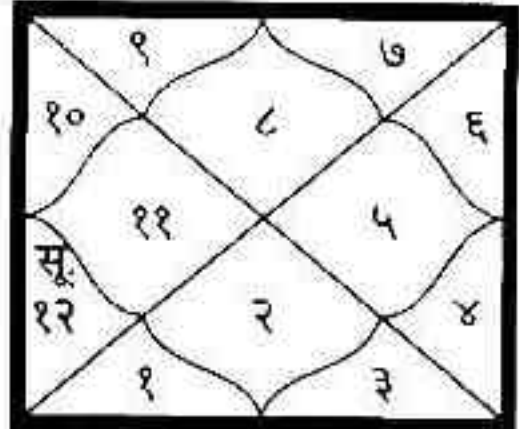
८८२

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखने वाला तथा विजयी होता है। अपने माता-पिता से सामान्य मतभेद रहता है, परंतु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा प्रभावशाली होता है। यहां से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु की तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में कुछ परेशानी रहती तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं।

वृश्चिक लग्न: षष्ठभाव: सूर्य
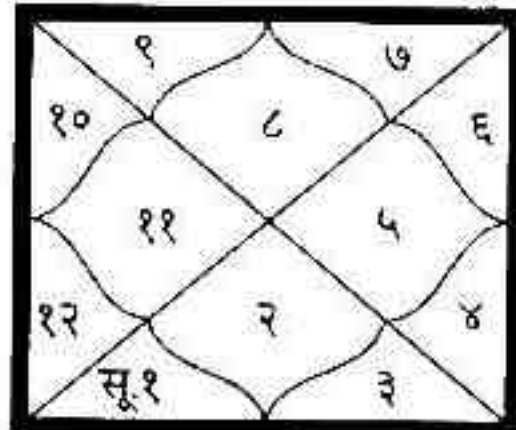
८८३

'वृश्चिक' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक शूरवीर, अत्यन्त विचारशील, निर्दोष, विद्या के आधिक्य से युक्त, क्रोधी, राजाओं से पूजित, गुणवान्, शास्त्रज्ञ, शत्रुनाशक, कपटी, पाखंडी, मिथ्यावादी, तमोगुणी, दूसरों के मन की बात जानने वाला, पर-निंदक, कटु स्वभाव वाला तथा सेवा-कर्म करने वाला होता है। उसका शरीर ठिगना तथा स्थूल होता है, आंखें गोल होती हैं। छाती चौड़ी होती है। वह भाइयों से द्रोह करने वाला, दयाहीन, ज्योतिषी, तथा भिक्षावृत्ति करने वाला होता है। वह अपने जीवन की प्रथमावस्था में दुःखी रहता है तथा मध्यावस्था में सुख पाता है। उसका भाग्योदय २० अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है।

'वृश्चिक लग्न'

८७७

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गाति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुंडली में दी गई होती है, उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक-गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'वृश्चिक' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या ८७८ के अनुसार पड़ता रहेगा; परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य 'धनु' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली

संख्या ९९० के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभा [illegible]
डालेगा, जब तक कि वह 'धनु' राशि से हटकर 'मकर' राशि में नहीं चला जा [illegible]
राशि में पहुंचकर वह मकर राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरंभ क [illegible]
जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'वृश्चिक' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उस [illegible]
कुंडली संख्या ८७८ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह- [illegible]
'धनु' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ९९० का फ [illegible]
देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता [illegible]
को वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विष [illegible]
लेना चाहिए।

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाले जातक की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों [illegible]
विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली-संख्या ८७८ से ९८५ तक [illegible]
गया है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाले [illegible]
को किन-किन उदाहरण-कुंडली द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना [illegible]
इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की ता [illegible]
स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फला [illegible]
समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुंडली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में [illegible]
कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश [illegible]
अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह [illegible]
अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर [illegible]
प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी [illegible]
में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने [illegible]
से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा [illegible]
किसी ज्योतिषी से पूछ कर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुंडली के यदि किसी [illegible]
एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन पर उनकी दृष्टियां पड़[illegible]
जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रक[illegible]
'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश [illegible]
वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की [illegible]
जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। [illegible]
ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक [illegible]
नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग [illegible]

है। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा— जिसे 'महादशा' भी कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी— इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८७८ से ८८९ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८८९ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में 'चंद्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९० से ९०१ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'चंद्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०१ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०२ से ९१३ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९११ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१३ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१४ से ९२५ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२५ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२६ से ९३७ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ... संख्या ९३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ... संख्या ९३७ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३८ से ९७९ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार ... चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९४९ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५० से ९६१ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि ' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि ' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६१ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६२ से ९७३ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु ' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु ' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु ' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु ' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु ' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु ' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७३ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७४ से ९८५ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडली में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु ' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु ' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु ' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु ' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु ' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु ' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८५ के अनुसार समझना चाहिए।

'वृश्चिक' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: प्रथमभाव

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक सुंदर, स्वस्थ, मानी, स्वाभिमानी, क्रोधी, प्रभावशाली तथा गौरव युक्त होता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होता है। वह सुंदर वस्त्राभूषणों को धारण करने वाला तथा यशस्वी होता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभराशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक का अपनी स्त्री से कुछ मतभेद बना रहता है तथा दैनिक रोजगार में कुछ कठिनाइयों का अनुभव भी होता है।
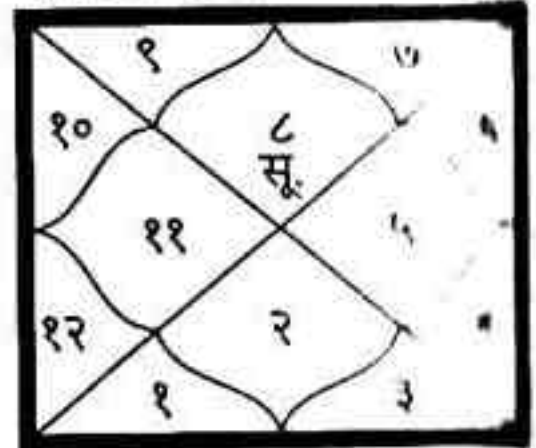
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: द्वितीयभाव

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय एवं पितृ-पक्ष से धन की शक्ति प्राप्त होती है तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। उसे राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा भी लाभ होता है, परंतु पिता के सुख में कुछ कमी रहती है। यहां से सूर्य अपनी मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि मे अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है और दैनिक जीवन भी प्रभावपूर्ण बना रहता है।
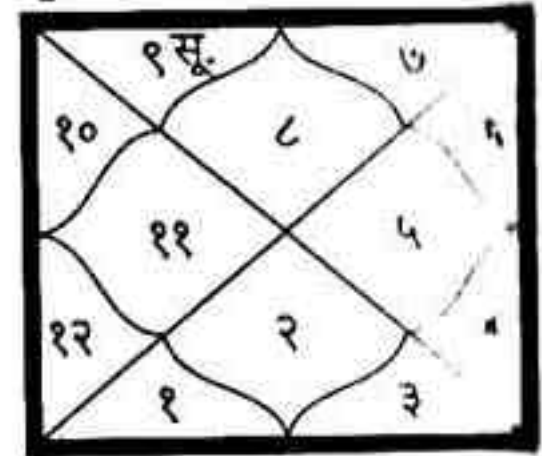
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ कमी बनी रहती है, परंतु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख, सम्मान, सहयोग तथा सफलता की प्राप्ति होती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि के नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा जातक बड़ा तेजस्वी, हिम्मतवर तथा पुरुषार्थी होता है।

वृश्चिक लग्न: तृतीयभाव

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

८८१

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का अपनी माता के साथ मतभेद रहता है और भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आती है। घरेलू सुख तो मिलता है, परंतु उसमें भी कुछ त्रुटियां बनी रहती हैं। यहां से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से दशमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः जातक को पिता का सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति उन्नति स्वयं करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव: सूर्य

८८२

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सम्मान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। वह राजनीति के क्षेत्र में उन्नति करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सम्मान तथा सहयोग पाता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं। वह अपने बुद्धि-बल से आमदनी को बढ़ाता तथा यश एवं सुख प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखने वाला तथा विजयी होता है। अपने माता-पिता से सामान्य मतभेद रखता है, परंतु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा प्रभावशाली होता है। यहां से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु की तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं।

वृश्चिक लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

८८३

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्न: सप्तमभाव:

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सामान्य संतोष रहता है, परंतु उसको शक्ति भी मिलती है। इसी प्रकार कुछ कठिनाइयों के साथ दैनिक रोजगार में भी सफलता मिलती है। राज्य, पिता, एवं व्यवसाय के पक्ष से साधारण मान, सहयोग एवं सफलता प्राप्त होती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शरीर सुंदर एवं प्रभावशाली होता है। वह तेजस्वी तथा गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला, प्रभावशाली, त्यागी तथा उन्नतिशील होता है।
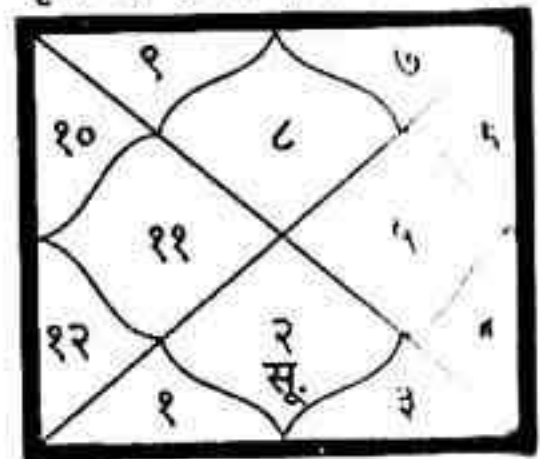
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्न: अष्टमभाव:

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के आयु पक्ष में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि करता है तथा उसे कुटुंब का सुख भी प्राप्त होता है। वह बाहरी स्थान का संपर्क भी प्राप्त करता है।
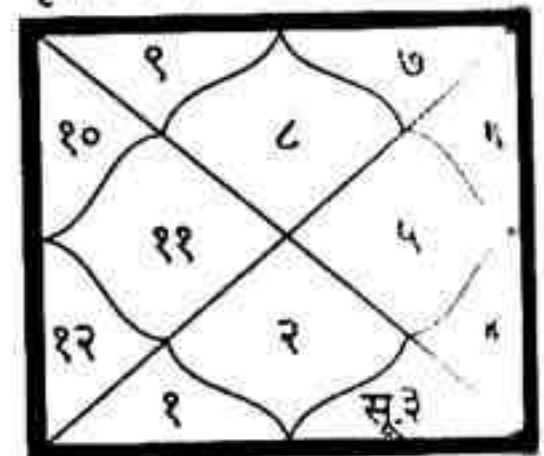
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्न: नवमभाव:

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन करता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, सुख एवं यश की प्राप्ति होती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का भाई-बहनों के साथ मतभेद रहता है और उसके पराक्रम में भी सामान्य वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।
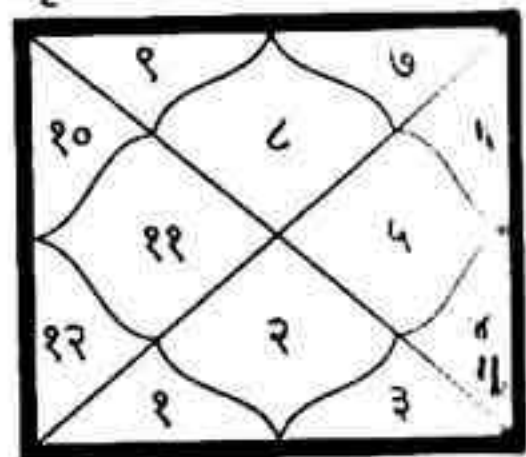
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः दशमभावः सूर्य

८८७

दसवें केंद्र, राज्य पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है। वह अपनी मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए उग्र कर्म भी करता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक का अपनी मां के साथ वैमनस्य रहता है। साथ ही भूमि तथा मकान आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है।
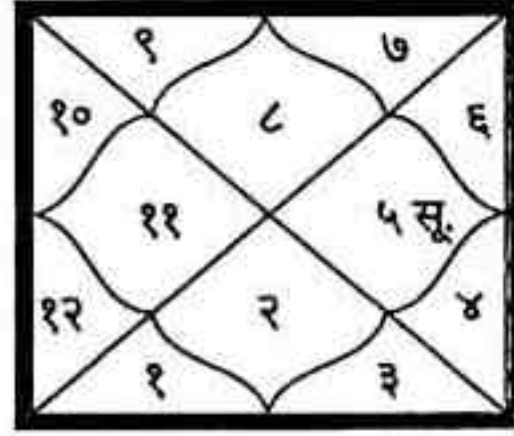
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः एकादशभावः सूर्य

८८८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने माता, पिता के द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है, राज्य द्वारा सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष लाभ एवं यश मिलता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान की शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या एवं बुद्धि में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति शासन करने वाला, तेजस्वी तथा स्वभाव का, स्वाभिमानी, यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है।
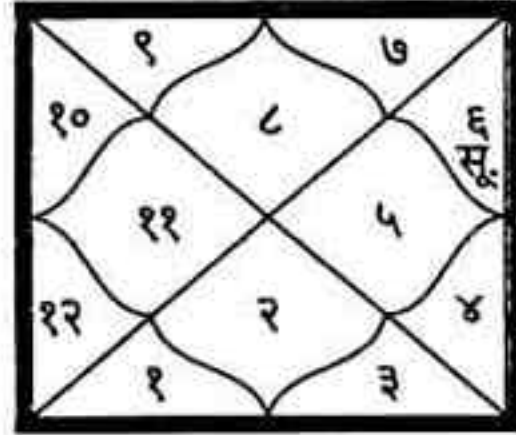
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः द्वादशभावः सूर्य

८८९

बारहवें व्यय एवं बाहरी स्थानों के संबंध वाले भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध में भी कष्ट प्राप्त होता है। इसी प्रकार राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से भी परेशानियां बनी रहती हैं। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि के कामों से लाभ प्राप्त करता है।
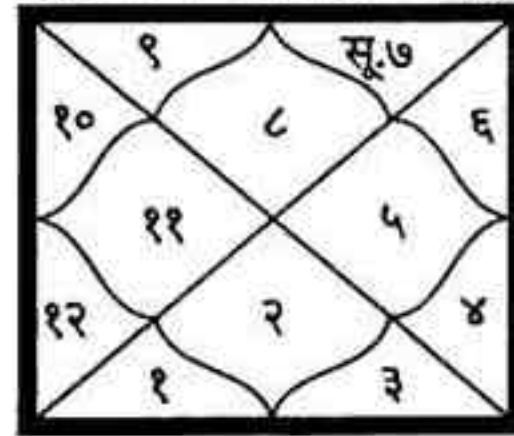
'वृश्चिक' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है तथा यश प्राप्ति के मार्ग में भी कठिनाइयां आती हैं, जिसके कारण मन चिंतित-सा बना रहता है। यहां से चंद्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को सुंदर तथा मनोनुकूल स्त्री प्राप्त होती है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।
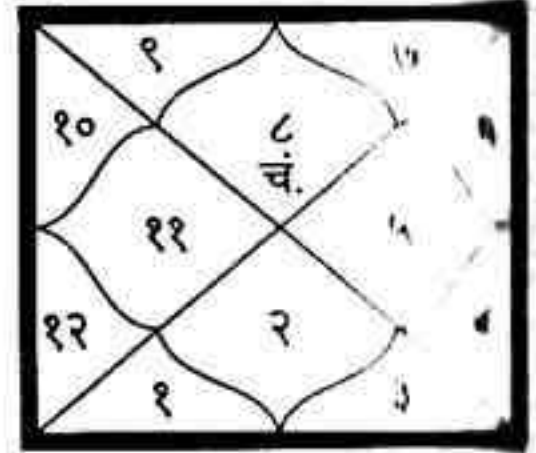
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को धन-संचय में सफलता प्राप्त होती है, साथ ही कौटुंबिक सुख भी मिलता है, परंतु ऐसा जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान, धनी तथा सुखी होता है।
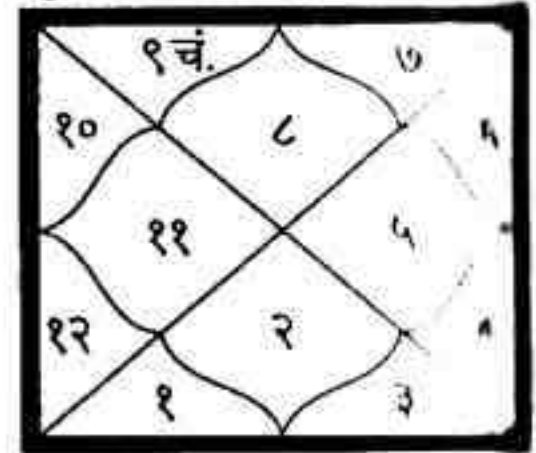
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक की पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की मानसिक शक्ति अत्यंत प्रबल होती है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यश प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली समझा जाता है।
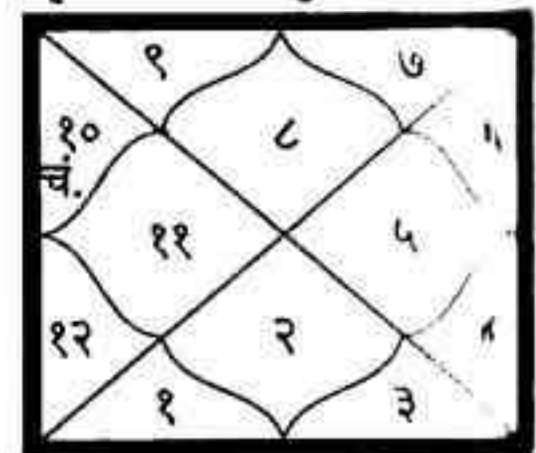
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव: चंद्र

८९३

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है, परंतु शत्रु राशिस्थ होने के कारण कुछ असंतोष भी बना रहता है। ऐसा जातक धर्म का पालन भी करता है तथा मनोयोग द्वारा भाग्य की भी उन्नति बनाता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख-सम्मान की प्राप्ति होती है।
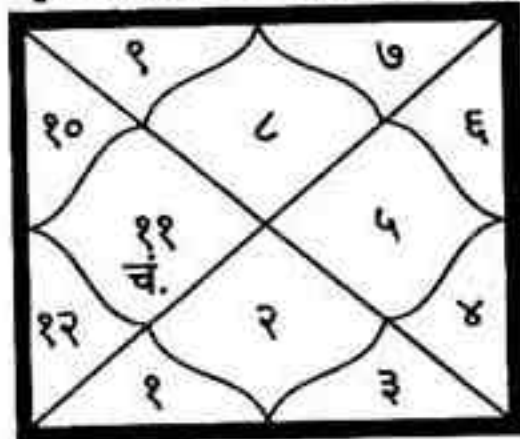
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव: चंद्र

८९४

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त होती है। वह धर्मात्मा, सज्जन, विन्रम तथा मधुरभाषी भी होता है तथा अपने बुद्धिवल से भाग्य की उन्नति करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह अच्छा लाभ कमाता है। बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा उसे आमदनी के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते रहते हैं।
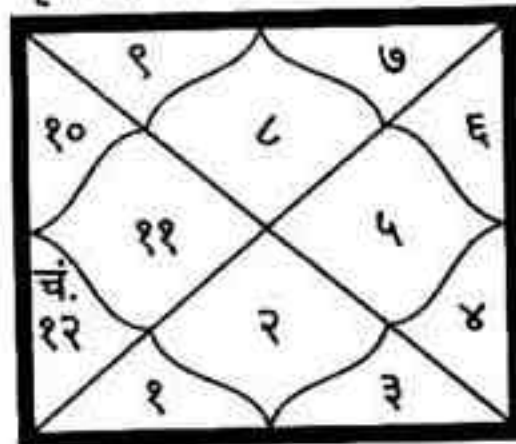
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: षष्ठभाव: चंद्र

८९५

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में शांति-नीति द्वारा सफलता प्राप्त करता है। शत्रुओं तथा झंझटों के कारण उसके मन में अशांति बनी रहती है। वह परिश्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि भी करता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक अपने भाग्यबल से खर्च को चलाता तथा बाहरी स्थानों से सफलता एवं शक्ति प्राप्त करता है।
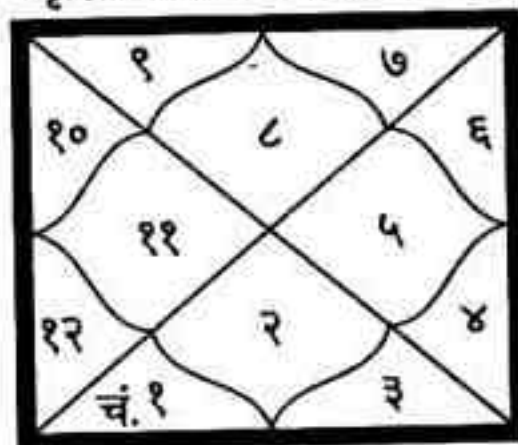
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्न: सप्तमभाव

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को सुंदर एवं भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा गृहस्थ-जीवन सुखमय व्यतीत होता है। वह व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। ऐसे जातक का मनोबल बढ़ा हुआ रहता है, जिसके कारण भाग्य तथा यश में वृद्धि होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शरीर में कुछ कमजोरी बनी रहती है। साथ ही भाग्य तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ कमी का अनुभव होता है।
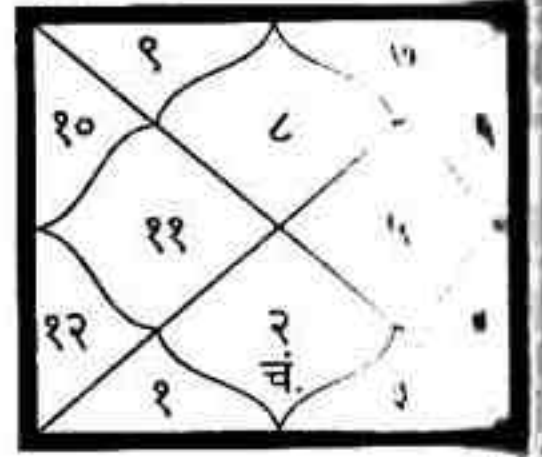
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्न: अष्टमभाव

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक धन का लाभ प्राप्त करता है, साथ ही उसे अपने कुटुंब का भी सुख-सहयोग भी मिलता है। संक्षेप में, ऐसा जातक शांत स्वभाव वाला, यशस्वी, धनी तथा सुखी होता है।
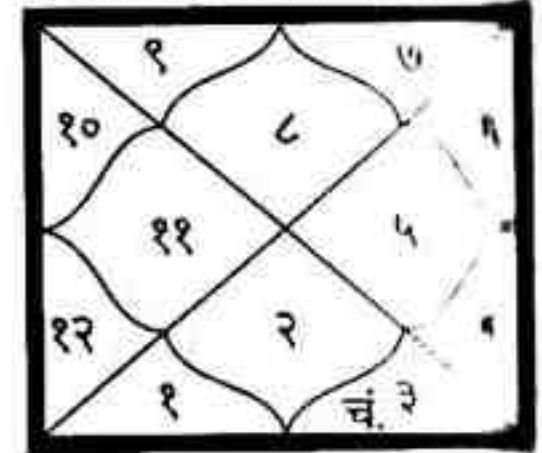
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए -

वृश्चिक लग्न: नवमभाव

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चंद्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की श्रेष्ठ उन्नति होती है। वह भाग्यवान, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों के संबंध से कुछ निराशा रहती है, परंतु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक सुखी तथा समृद्ध होता है।
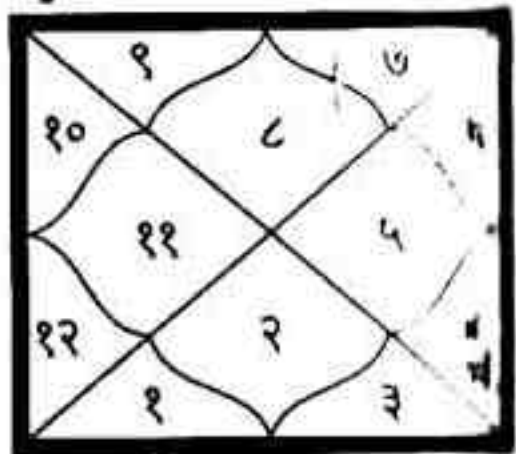
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः दशमभावः चंद्र

८९९

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। वह भाग्यवान तथा धर्मात्मा भी होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहती है। फिर भी वह सुखी, यशस्वी, संतुष्ट तथा धनी जीवन व्यतीत करता है।
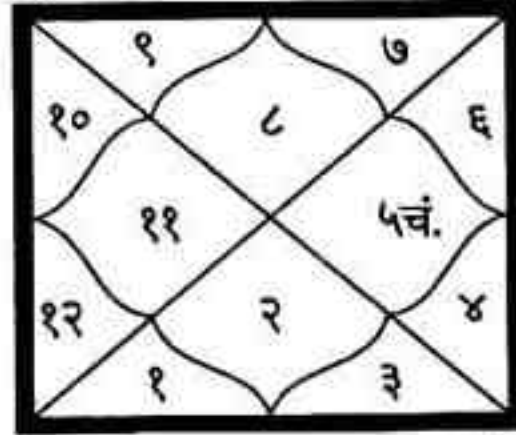
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकदशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः एकादशभावः चंद्र

९००

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धन एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह भाग्यवान, धनी, सुखी, यशस्वी तथा धर्मपरायण होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। उसका मनोबल बढ़ा-चढ़ा रहता है। वाणी में शक्ति रहती है तथा यश एवं लाभ की प्राप्ति होती रहती है।
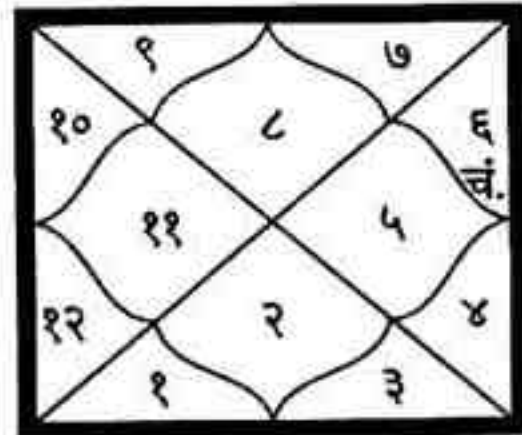
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः द्वादशभावः चंद्र

९०१

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परंतु उसकी पूर्ति में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। साथ ही उसे बाहरी स्थानों के संबंध से अत्यधिक लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है। अपने स्थान पर उसका भाग्य कमजोर बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में शांति से काम लेता है और कठिनाइयों पर भाग्य-बल से विजय प्राप्त करता है।
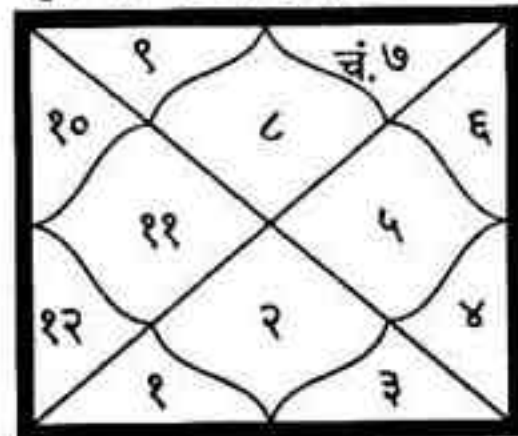
'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: प्रथमभाव

पहले केंद्र तथा शरीर में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है और उसे शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त होती है, परंतु कभी-कभी बीमार भी होना पड़ता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है और आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।
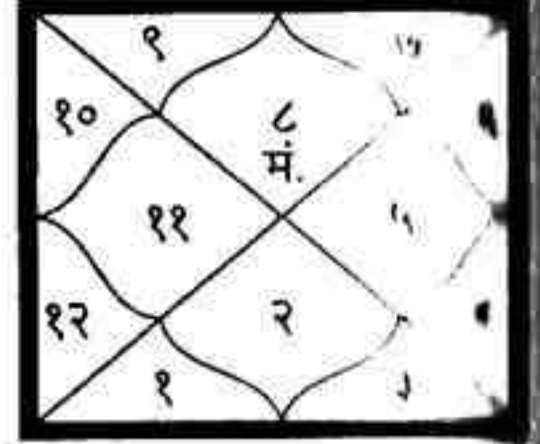
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: द्वितीयभाव

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुटुंब का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है। शारीरिक सुख एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की हानि होती है। साथ ही यश की कमी रहती है।
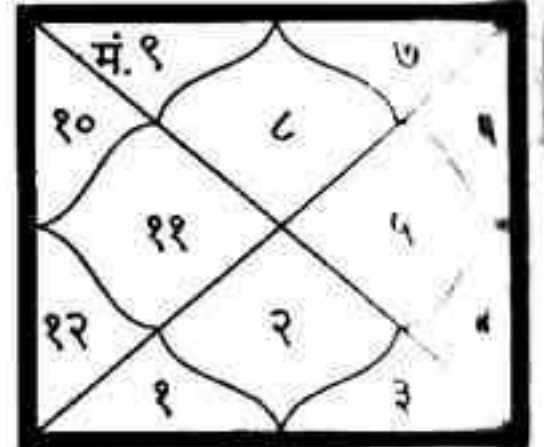
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: तृतीयभाव

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों से कुछ वैमनस्य रहता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से षष्ठभाव को अपनी ही मेष राशि में देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष

विजय प्राप्त करता है तथा अपना प्रभाव बनाए रखता है। सातवीं नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक भरोसा रखता है तथा धर्म का भी यथाविधि पालन नहीं करता। आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में उन्नति, लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति व्यावसायिक सफलता खूब प्राप्त करता है।
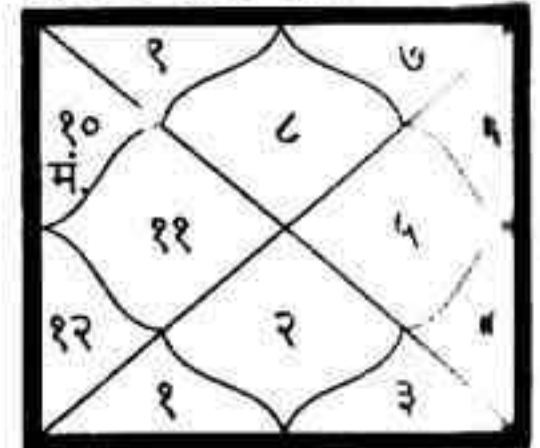
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

१०५

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा शारीरिक सुख में भी कमजोरी रहती है। चौथी दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष से मतभेदयुक्त शक्ति प्राप्त होती है एवं परिश्रम से दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता, यश, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।
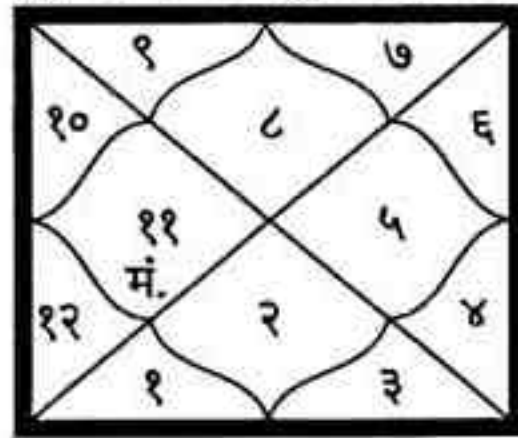
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव: मंगल

१०६

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के पक्ष में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है और शत्रु पक्ष पर विजय पाने के लिए जातक गहरी युक्तियों को सोचता रहता है। यहां से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु की वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहने के कारण जातक को परेशानी होती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कठिनाइयों के साथ सामान्य लाभ होता है।
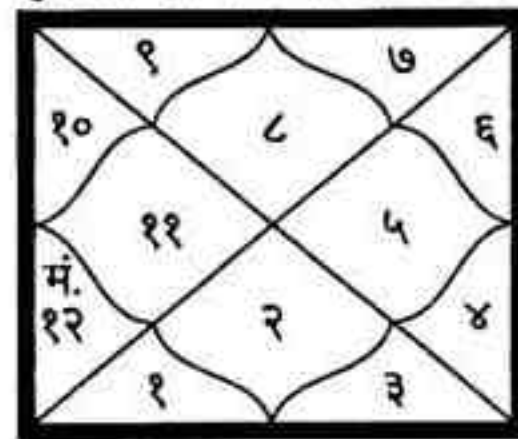
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: षष्ठभाव

छठे शत्रु एवं रोग-भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा विजय प्राप्त करता है। चौथी नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है तथा यश-सम्मान में भी कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे संबंध स्थापित होते हैं। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ प्रभाव बना रहता है तथा परिश्रम द्वारा आत्मबल की सामान्य वृद्धि होती है।
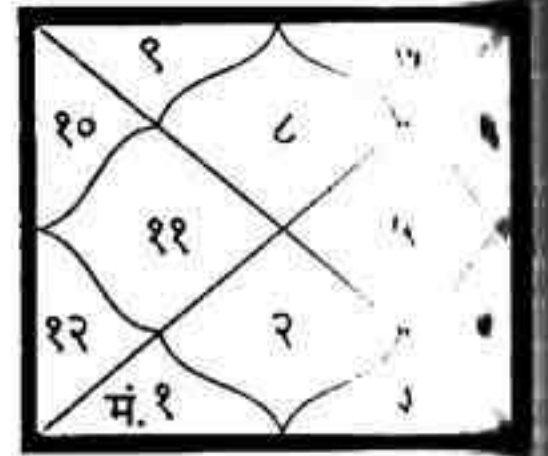
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्न: सप्तमभाव

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सामान्य परेशानी रहती है तथा जननेंद्रिय में कुछ विकार होता है। दैनिक रोजगार के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयां आती हैं। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता, राज्य एवं व्यापार के पक्ष से सफलता, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से जातक के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-वृद्धि एवं कुटुंब का सुख प्राप्त होता है। कुल मिलाकर जातक का जीवन सामान्य रहता है।
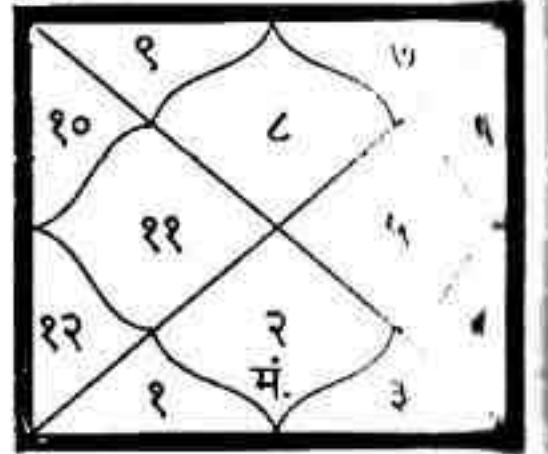
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्न: अष्टमभाव

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सुख एवं सौंदर्य में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयां तथा परेशानियां बनी रहती हैं। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार रहता है और शत्रु पक्ष से भी परेशानी रहती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी का अच्छा योग बनता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुंब की वृद्धि के लिए विशेष
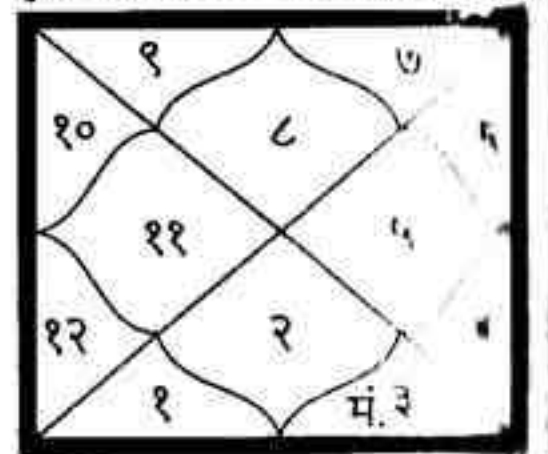
परिश्रम करना पड़ता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहन की शक्ति भी प्राप्त होती है, परंतु उनसे कुछ वैमनस्य भी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः नवमभावः मंगल

११०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र देवता की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। साथ ही शत्रु पक्ष से भी झंझट एवं भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख भी प्राप्त होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के साथ कुछ वैमनस्य बना रहता है तथा भूमि, मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।
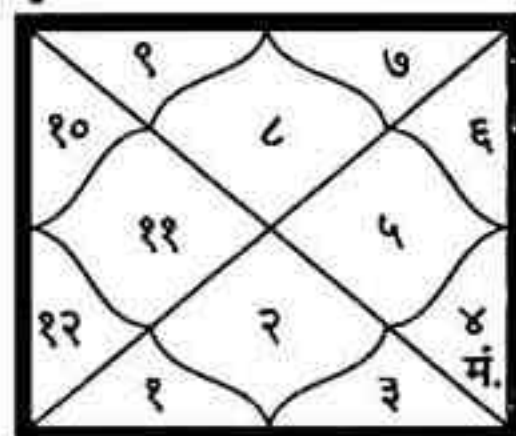
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः दशमभावः मंगल

१११

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सुख एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर विजय पाने वाला होता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को प्रबल शारीरिक शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ, पुष्ट तथा स्वाभिमानी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।
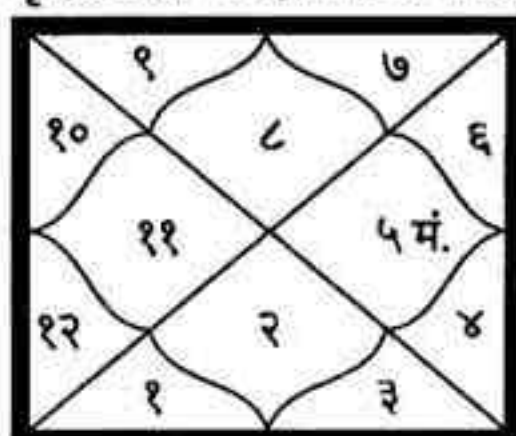
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। परंतु उसे शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी तथा शारीरिक रोगों का भी सामना करना पड़ता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: धन एवं कुटुंब की शक्ति तथा सुख प्राप्त होते हैं, सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा ननिहाल से लाभ होता है। ऐसा जातक बड़ा स्वाभिमानी तथा प्रभावशाली होता है।
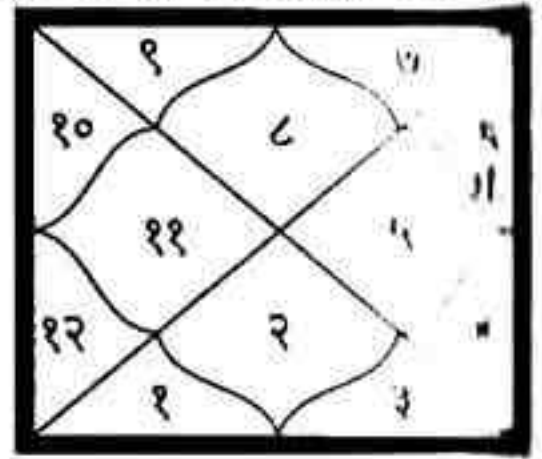
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से शांति एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही शरीर में कमजोरी भी बनी रहती है। यहां से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के कामों में सफलता पाता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष से कुछ वैमनस्य रहते हुए भी सुख प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।
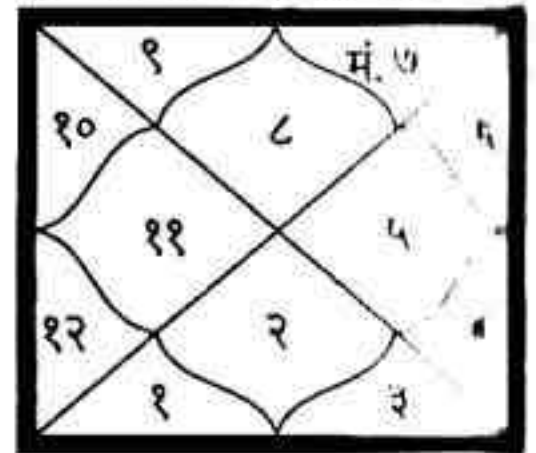
'वृश्चिक' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। वह अपनी शारीरिक शक्ति एवं परिश्रम द्वारा श्रेष्ठ लाभ एवं आयु की शक्ति प्राप्त करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत:
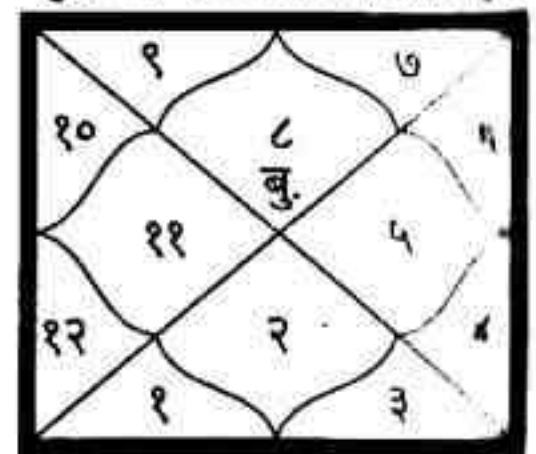
जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाई के साथ सहयोग प्राप्त होता है एवं दैनिक व्यवसाय में भी परिश्रम के साथ सफलता प्राप्त होती है। बुध के अष्टमेश होने के कारण जातक को शारीरिक परेशानी भी उठानी पड़ती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: द्वितीयभाव: बुध

११५

दूसरे धन एवं कुटुंब के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनुराशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन-संचय तथा कुटुंब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परंतु बुध के अष्टमेश होने के कारण उसमें कुछ कठिनाइयां भी आती हैं। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में अष्टमभाव को देखता है, जिससे जातक की आयु की वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक शान-शौकत का जीवन व्यतीत करता है। वह यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है।
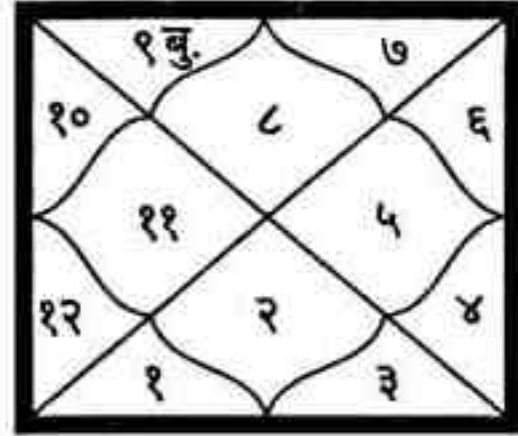
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। बुध के अष्टमेश होने के कारण इन दोनों क्षेत्रों में कुछ कठिनाइयां अवश्य आती हैं। इसके साथ ही जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ का भी योग बनता है। यहां से बुध अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक अपनी विवेक-शक्ति द्वारा भाग्य एवं धर्म की भी उन्नति करता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

वृश्चिक लग्न: तृतीयभाव: बुध
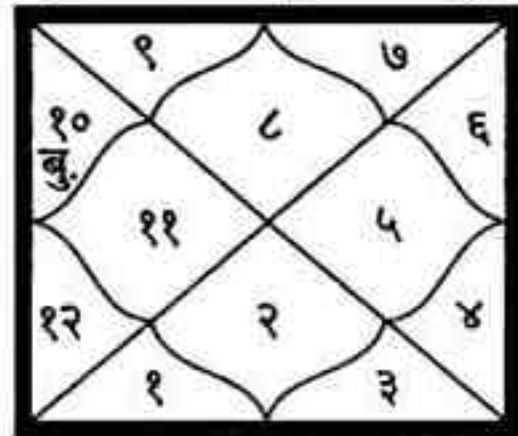
११६

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव: बुध

११७

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता का सुख एवं भूमि-भवन का लाभ प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम द्वारा वह अपनी आय के साधनों को भी बढ़ाता है उसे आयु तथा पुरातत्त्व का भी सुख मिलता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशमभाव
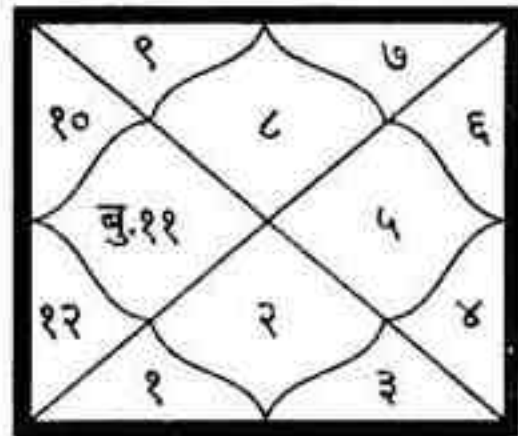
को देखता है, अत: जातक को कुछेक कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय
भी सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को विद्या एंव बुद्धि के क्षेत्र में कमी तथा संतानपक्ष में कष्ट का सामना करना पड़ता है, परंतु ऐसा व्यक्ति अपनी विवेक-शक्ति से लाभ प्राप्त करता है। आयु के क्षेत्र में कुछ परेशानी रहती है तथा पुरातत्त्व का भी स्वल्प लाभ होता है। यहां से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, जिसके कारण जातक की आमदनी खूब रहती है और वह सुखी जीवन व्यतीत करता है।
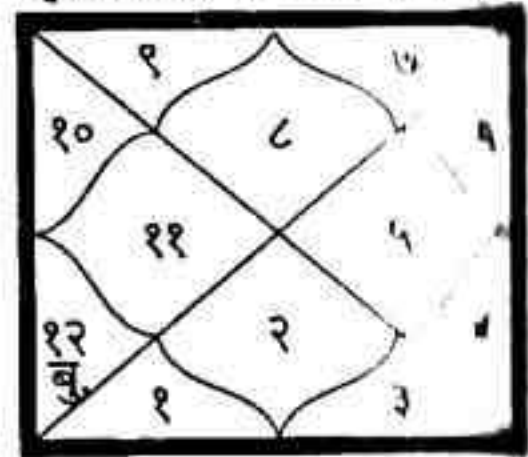
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक बुद्धि द्वारा शत्रु-पक्ष में विजय एवं लाभ प्राप्त करता है। कुछ परेशानियों के साथ उसकी आमदनी का मार्ग बनता है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ भी प्राप्त होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी प्राप्त होता है।

वृश्चिक लग्न: षष्ठभाव
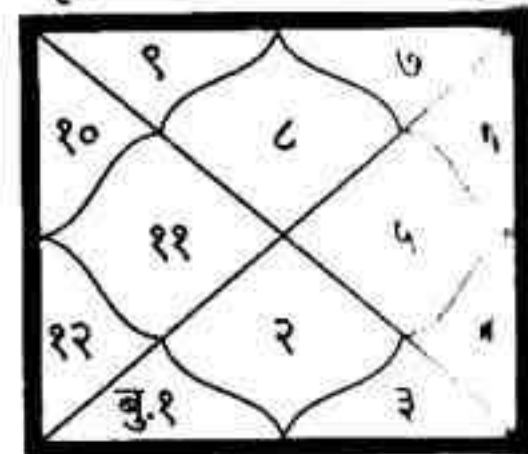
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: सप्तमभाव

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक रोजगार के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृषभ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है और उसकी दिनचर्या शान-शौकत की बनी रहती है।
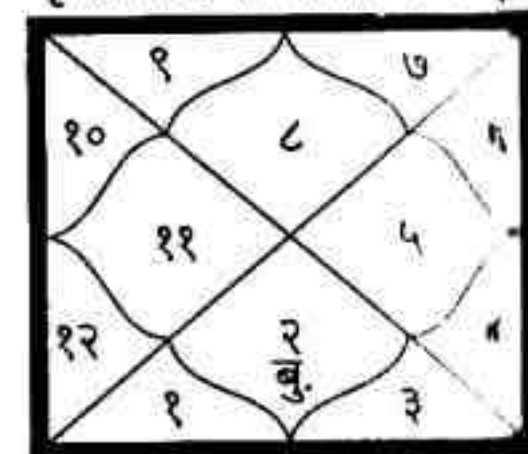
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: अष्टमभाव: बुध

१२१

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक की जीवन-शक्ति में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बुध के अष्टमेश होने के कारण आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परंतु परिश्रम द्वारा जातक अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक विवेक द्वारा धन का संचय करता है और उसे कुटुंब का सुख भी प्राप्त होता है।
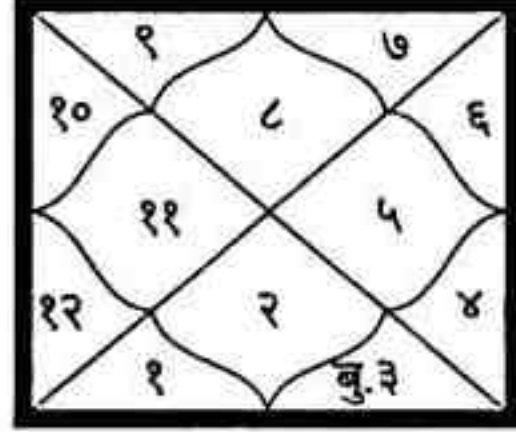
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: नवमभाव: बुध

१२२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुछ स्वार्थी स्वभाव का भी होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को कुछ कमी के साथ भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसा जातक भाग्यवान माना जाता है और सुखी जीवन व्यतीत करता है।
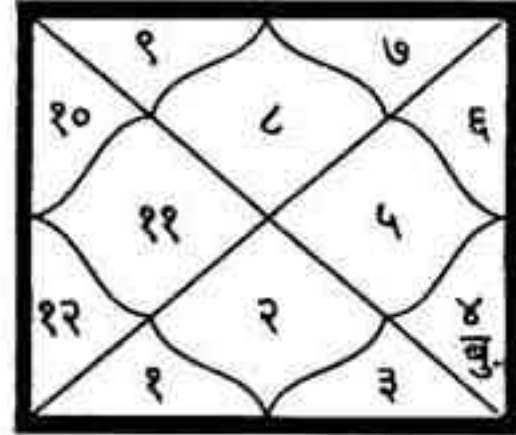
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: दशमभाव: बुध

१२३

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को परेशानियों के साथ पिता द्वारा सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। इसी तरह कुछ कठिनाइयों के साथ राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। उसे पुरातत्त्व एवं आयु का भी उत्तम लाभ प्राप्त होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं दृष्टि से शनि की कुंभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख तथा लाभ भी प्राप्त होता है।
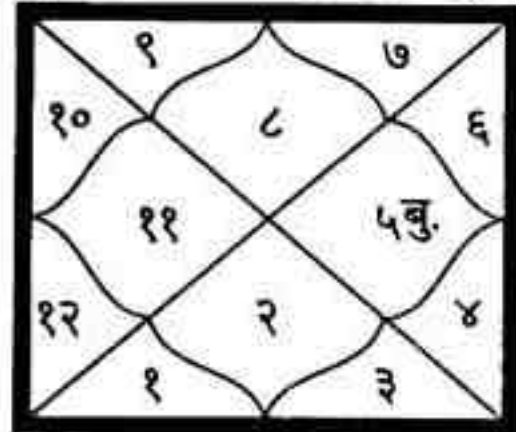
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '...
में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना ...

वृश्चिक लग्नः एकादशभाव

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत ही अच्छी रहती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का भी विशेष लाभ होता है। वह अपने जीवन में उमंग एवं उत्साह से परिपूर्ण बना रहता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः बुध के अष्टमेश होने के कारण जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परंतु उसका व्यवहार कुछ रूखापन लिए रहता है।
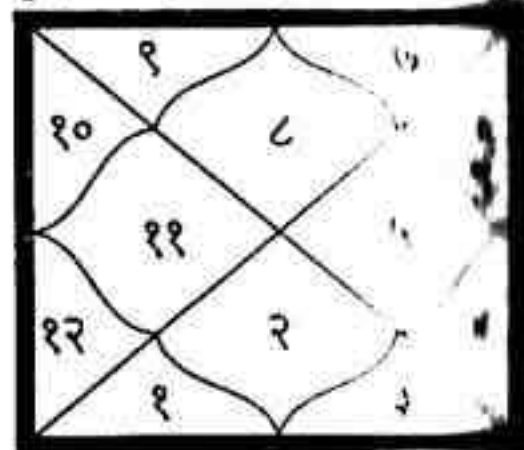
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '...
में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना ...

वृश्चिक लग्नः द्वादशभाव

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ मिलता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखता है, जिसके फलस्वरूप जातक शत्रु पक्ष में अपनी विवेक बुद्धि के द्वारा विनम्र रहकर काम निकालता है। उसका जीवन भ्रमणशील होता है तथा चित्त में कुछ अशांति भी बनी रहती है।
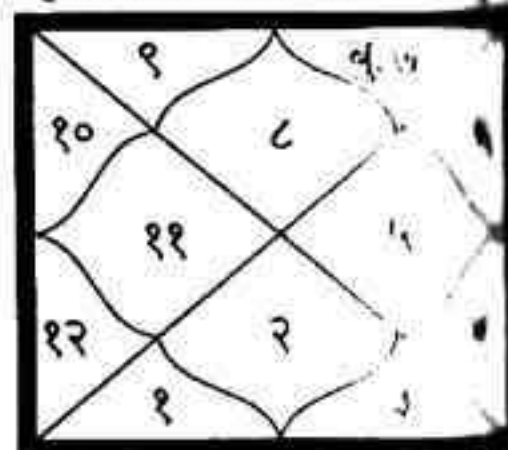
'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '...
में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः प्रथमभाव

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति प्रभाव एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में भी श्रेष्ठ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को
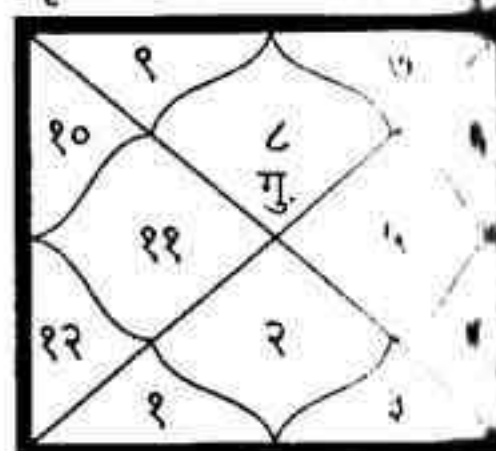
के कारण स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सामान्य कठिनाइयां आती हैं, परंतु बाद में स्त्री तथा रोजगार दोनों ही पक्षों से शक्ति मिलती है। नवीं उच्चदृष्टि से भाग्यभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा जातक धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति भाग्यवान तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः द्वितीयभावः गुरु

१२७

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक धन का संचय करता है तथा कुटुंब का सुख प्राप्त करता है, परंतु गुरु के पंचमेश होने के कारण संतानपक्ष के सुख में कुछ कमी आती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में अपनी बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान, सहयोग तथा सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान तथा धनवान होता है।
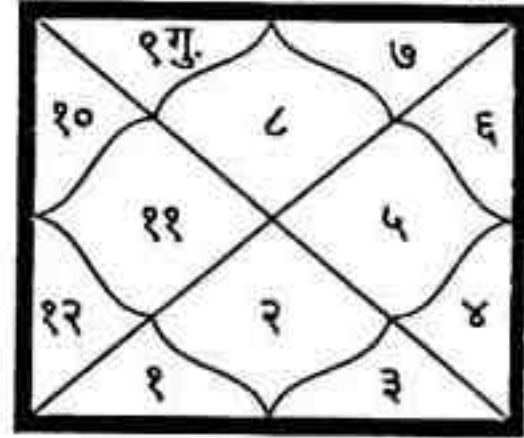
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन तथा पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख में बाधा तथा पराक्रम में कमजोरी बनी रहती है। विद्या, संतान तथा कुटुंब का सुख भी कम रहता है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है और व्यावसायिक क्षेत्र में कठिन परिश्रम से सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की अच्छी उन्नति होती है तथा धर्मपालन में रुचि बनी रहती है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी का योग अच्छा बनता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

वृश्चिक लग्नः तृतीयभावः गुरु
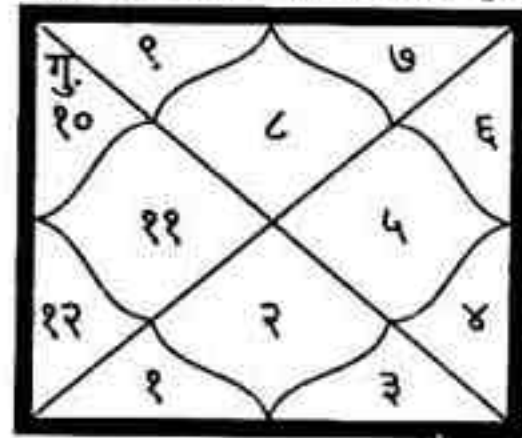
१२८

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का माता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा संतान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ शक्ति मिलती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, यश, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के संबंध से साधारण लाभ होता है।

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव
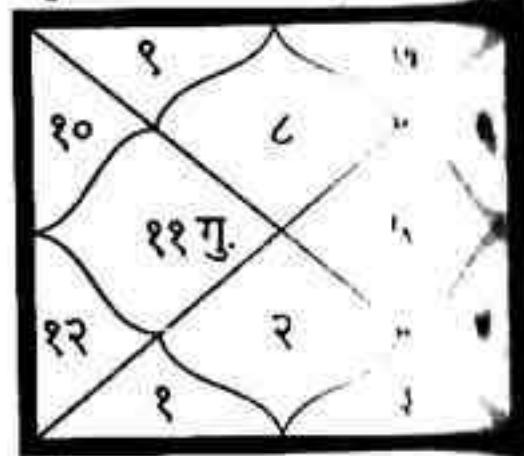
९ १० ८ ११ गु. १२ २ १

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। साथ ही उसे धन एवं कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्र तथा उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी बनी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, सौंदर्य, एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा जातक यश, सम्मान, प्रतिष्ठा, धन, ऐश्वर्य आदि सभी वस्तुएं प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव
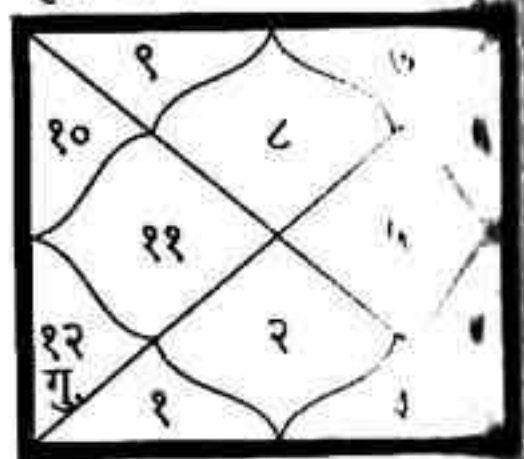
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल से शत्रु पक्ष में काम निकालता है तथा धन एवं कुटुंब के कारण झंझटों में फंसता है। विद्या तथा संतानपक्ष में भी कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति-सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से व्ययभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति

वृश्चिक लग्न: षष्ठभाव

९ १० ८ ११ १२ २ गु. १ ३
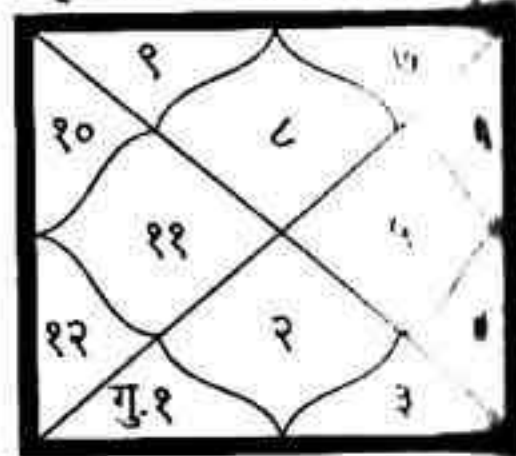
मिलती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब से कुछ वैमनस्य के साथ शक्ति मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः सप्तमभावः गुरु

१३२

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को कुछ मतभेदों के बावजूद भी स्त्री का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है एवं बुद्धि-योग से व्यवसाय में लाभ होता है। साथ ही विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: जातक की आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौंदर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पुरुषार्थ में भी कमी का अनुभव होता है।
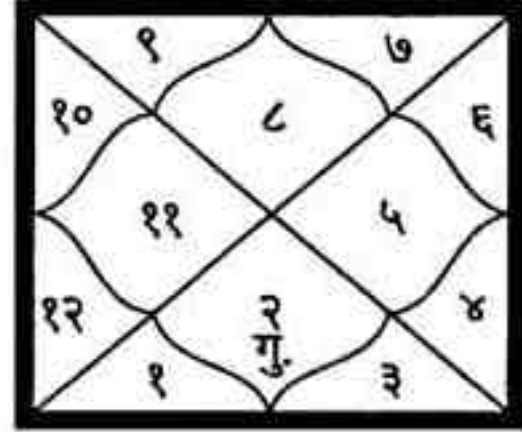
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः अष्टमभावः गुरु

१३३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। परंतु विद्या, बुद्धि, संतान, धन एवं कुटुंब के पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से कुछ लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब की शक्ति प्राप्त होती है एवं नवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ परेशानियां उपस्थित होती हैं, परंतु जातक अपने बुद्धि-बल से सुख-भोग करता रहता है।
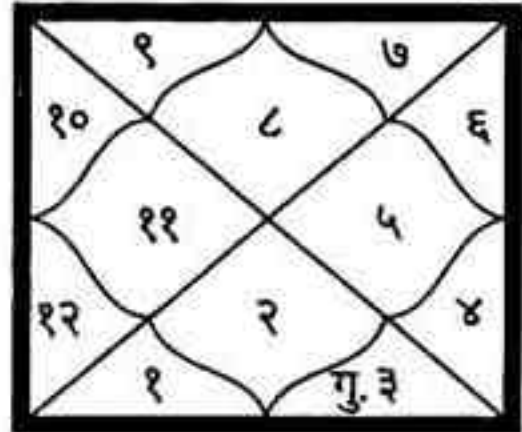
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन करता है। उसे धन तथा कुटुंब का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है और उसे मान-सम्मान मिलता रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम भी क्षीण होता है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने से संतान, विद्या तथा बुद्धि की विशेष [illegible] होती है, जिसके कारण जातक यशस्वी भी बनता है।
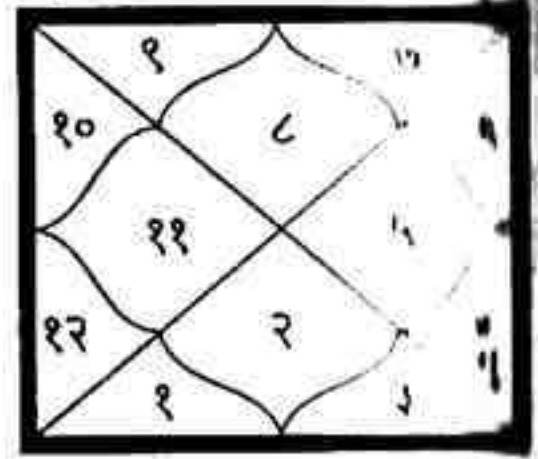
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

दसवें केंद्र, राज्य, पिता तथा व्यवासय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-सम्मान, लाभ तथा सफलता की प्राप्ति होती है। पांचवीं दृष्टि से स्वराशि धनु में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब के सुख की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असंतोष के साथ प्राप्त होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु तथा झगड़ों के क्षेत्र में बुद्धिमानी द्वारा सफलता एवं विजय प्राप्त होती है।
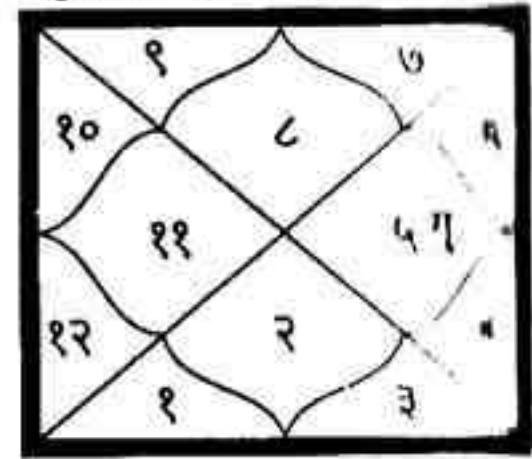
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती रहती है। साथ ही धन एवं कुटुंब का सुख भी अच्छा मिलता है। यहां से गुरु पांचवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को शत्रु की नीच राशि में देखता है, अतः भाई-बहन के सुख में कमी आती है तथा पराक्रम की भी हानि होती है। सातवीं दृष्टि से पंचमभाव में अपनी ही राशि को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में विशेष उन्नति प्राप्त होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव
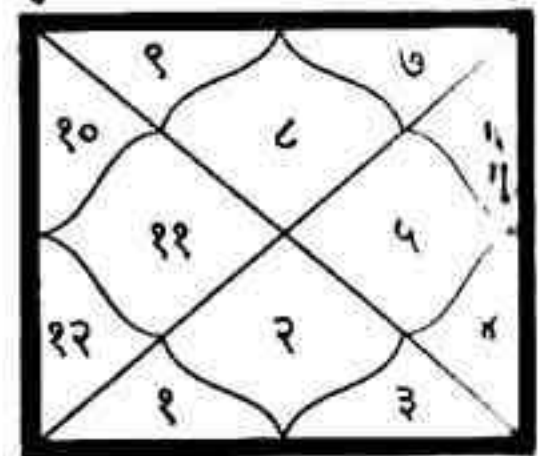
देखने से स्त्री के साथ कुछ वैमनस्य रहते हुए भी लाभ होता है तथा दैनिक व्यवसाय क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः द्वादशभावः गुरु

१३७

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों में भी कमजोरी बनी रहती है। साथ ही धन, कुटुंब, संतान तथा विद्या के क्षेत्र में भी कमी का अनुभव होता है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि, मकान आदि के सुख में कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में चतुराई से काम निकालता है तथा प्रभाव स्थापित करता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। ऐसे जातक का चित्त प्रायः अशांत बना रहता है।
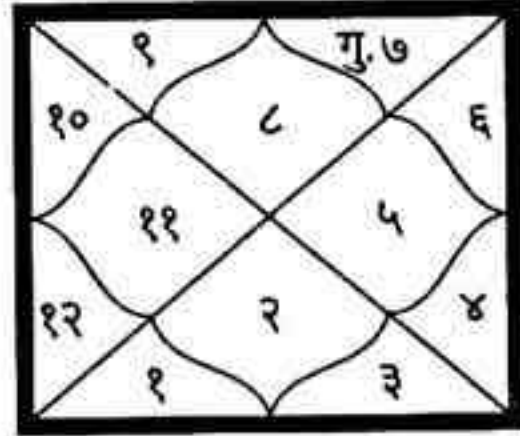
'वृश्चिक' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः प्रथमभावः शुक्र

१३८

पहले केंद्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, परंतु वह प्रभावशाली, चतुर तथा कार्य-कुशल भी होता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परंतु शुक्र के व्ययेश होने के कारण जातक को सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।
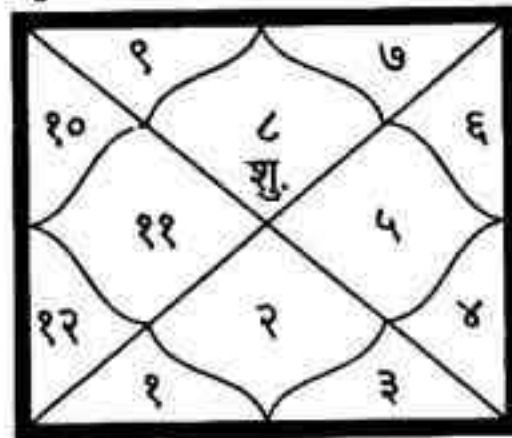
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के कौटुंबिक सुख में कमी रहती है तथा शुक्र के व्ययेश होने के कारण धन का लाभ तो होता है, परंतु खर्च अधिक होने से परेशानी बनी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक की आयु में तो वृद्धि होती है, परंतु पुरातत्त्व का लाभ कम होता है। फिर भी, ऐसा जातक धनी तथा चतुर माना जाता है।
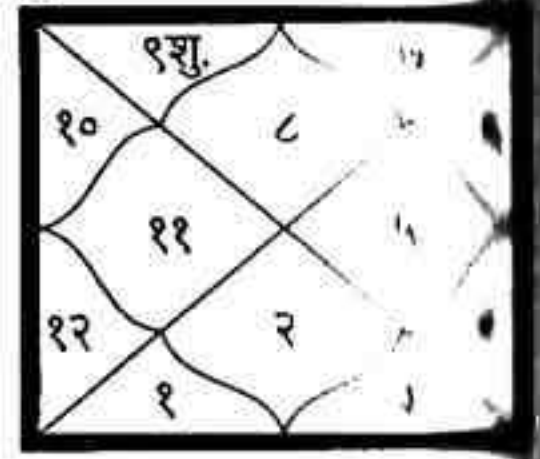
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना [illegible]

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहन के सुख एवं पुरुषार्थ में कुछ कमी बनी रहती है। वह खर्च अधिक करता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी उठाता है। वह अत्यंत चतुराई से अपने घर का खर्च चलाता है। स्त्री के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक की भाग्योन्नति कुछ कमजोरी के साथ होती है और वह धर्म का भी थोड़ा-बहुत पालन करता है।
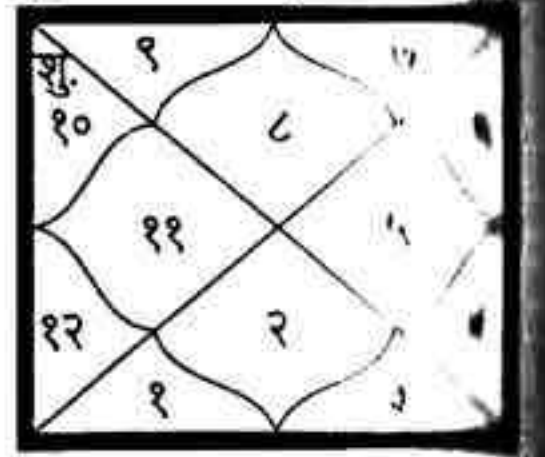
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना [illegible]

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं भवन के स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है। इसी प्रकार भूमि, मकान तथा स्त्री के पक्ष में भी कमजोरी बनी रहती है। उसका खर्च आराम से चलता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सुख प्राप्त होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सुख-सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है।
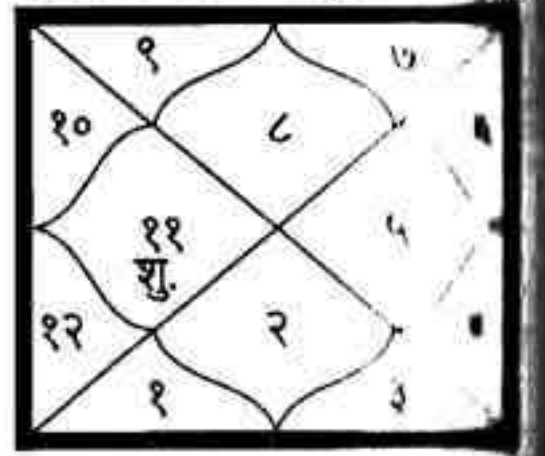
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना [illegible]

वृश्चिक लग्नः पंचमभावः शुक्र

१४२

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में कुछ कमियों के साथ सफलता मिलती है, परंतु वह किसी विशेष कला का जानकार अवश्य होता है। ऐसा व्यक्ति चतुर तथा स्त्री के प्रभाव में रहने वाला होता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं।
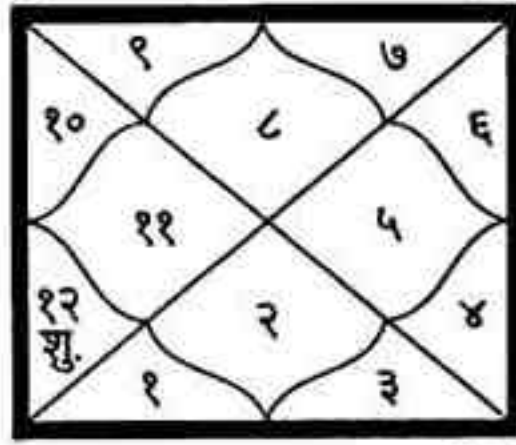
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः षष्ठभावः शुक्र

१४३

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शांतिपूर्ण उपायों द्वारा अपना काम निकालता है। उसे अपनी गृहस्थी के कार्य-संचालन में भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से परेशानी होती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही सामान्य लाभ प्राप्त होता है।
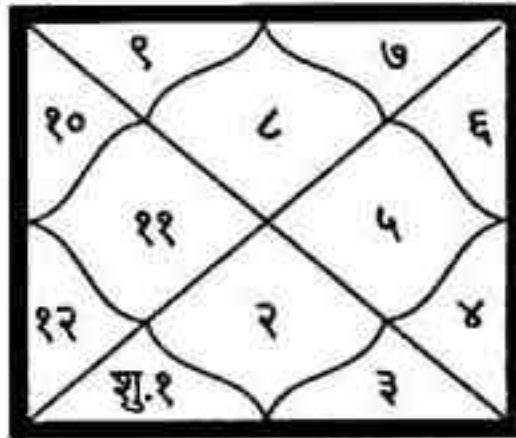
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः सप्तमभावः शुक्र

१४४

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं शक्ति प्राप्त होती है। बाहरी स्थानों के संबंध से उसे अपना खर्च चलाने में सहायता मिलती है। ऐसा व्यक्ति चतुर तथा बुद्धिमान भी होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता बनी रहती है, फिर भी वह प्रभावशाली, यशस्वी व्यावहारिक तथा कार्य कुशल व्यक्ति होता है।
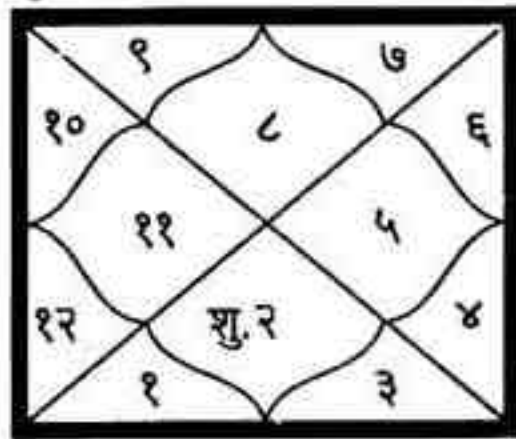
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु, पुरातत्त्व, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में संकटों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त चतुराई तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करता रहता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय तथा कौटुंबिक सुख में भी कठिनाइयां आती हैं। वह बड़ी ही चतुराई से काम लेकर किसी प्रकार अपनी इज्जत को बचाए रखता है।
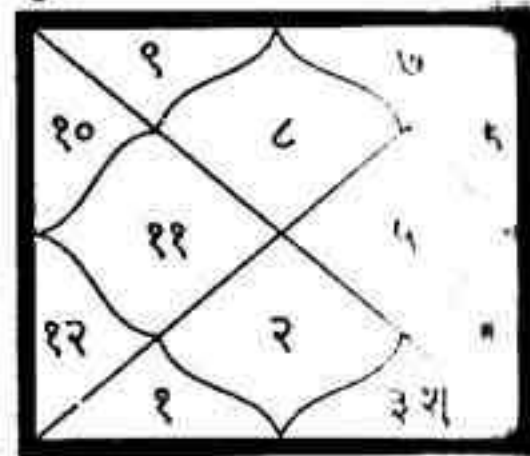
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्त्री के संबंध में भी कुछ परेशानी रहती है, परंतु वह चतुराई से अपना काम निकालता है और बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। यहां से व्ययेश शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी कुछ असंतोष बना रहता है।
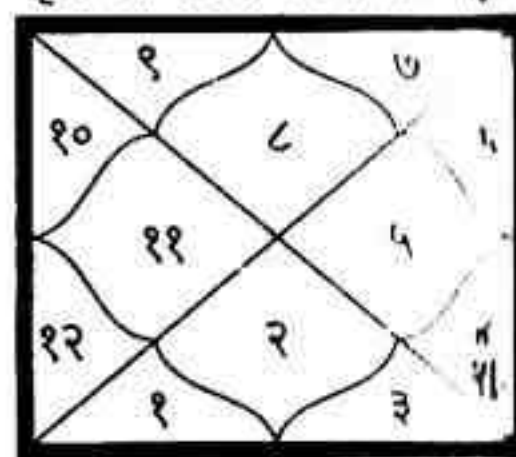
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों एवं कमियों के साथ सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में भी कुछ कमी आती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख-सहयोग प्राप्त होता है तथा भूमि एवं मकानादि का सुख भी मिलता है।
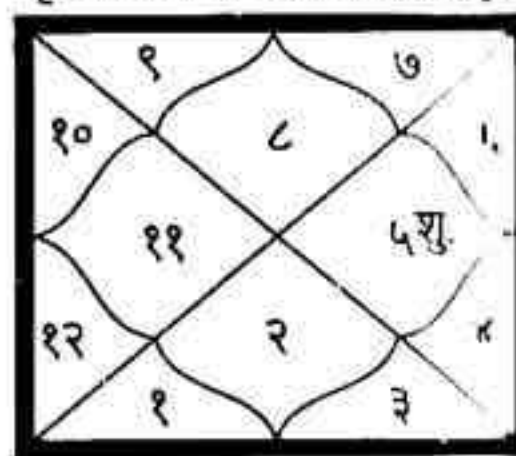
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में कमी आती है। साथ ही स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानी बनी रहती है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से चतुराई द्वारा थोड़ा लाभ भी मिलता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु गुरु की मीन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि की शक्ति तो प्राप्त होती है, परंतु संतान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। सामान्यतः ऐसा जातक विद्वान, बुद्धिमान, चतुर तथा कूटनीतिज्ञ होता है।

वृश्चिक लग्नः एकादशभावः शुक्र
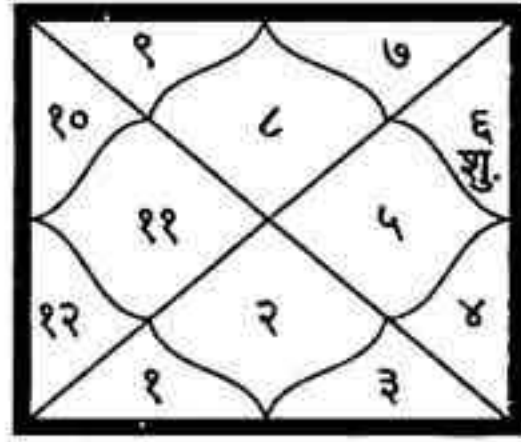
१४८

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ एवं शक्ति प्राप्त होती है। स्त्री के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय में कठिनाइयां आती हैं, जबकि बाहरी स्थानों के व्यवसाय में सफलता मिलती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः द्वादशभावः शुक्र
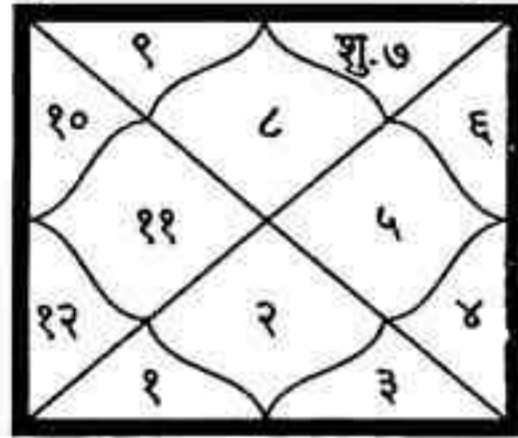
१४९

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शरीर में शांति एवं उग्रता दोनों का ही दर्शन होता है। उसे माता, भूमि तथा मकान का भी सामान्य सुख मिलता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

वृश्चिक लग्नः प्रथमभावः शनि
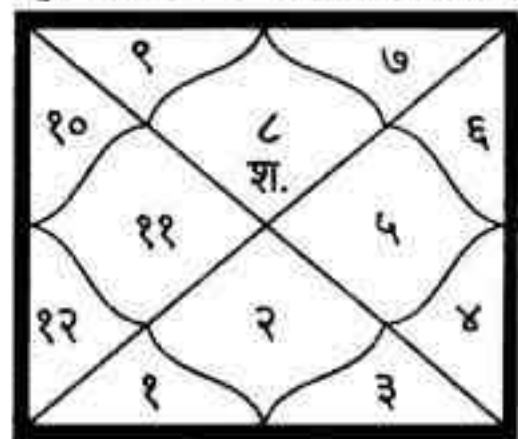
१५०

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: द्वितीयभाव: शनि

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब का सामान्य सुख प्राप्त होता है, परंतु भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।
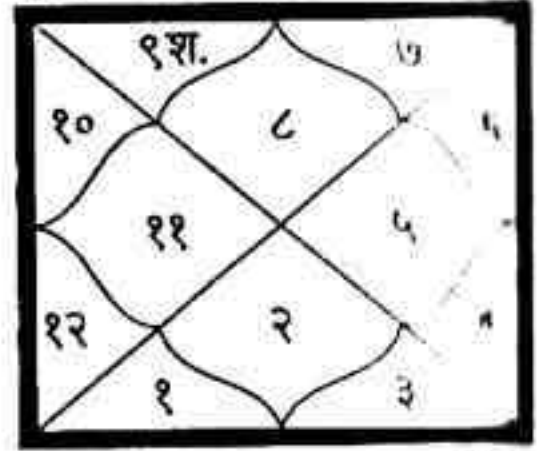
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: तृतीयभाव: शनि

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं संतान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति होती है तथा कुछ मतभेदों के साथ धर्म का पालन होता है दसवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च आराम से चलता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शांति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।
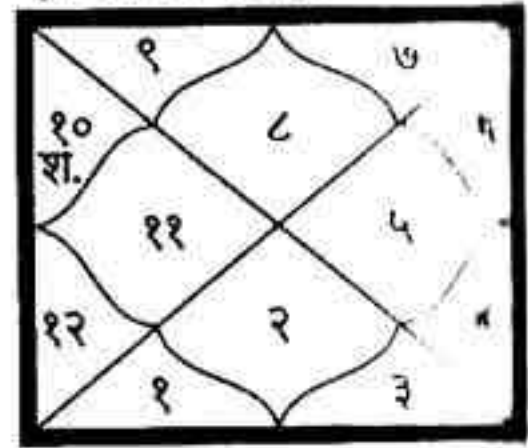
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव: शनि

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के स्थान में अपनी ही कुंभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्रीय शनि के प्रभाव से जातक को माता का सुख विशेष रूप से मिलता है। साथ ही भूमि, मकान आदि का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है और भाई-बहन एवं पराक्रम की वृद्धि होती है। यहां से शनि तीसरी नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक को शत्रु-

से अशांति रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से मतभेद है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती। दसवीं शत्रुदृष्टि प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौंदर्य में कुछ कमी रहती है तथा जातक अधिक श्रमी होता है।
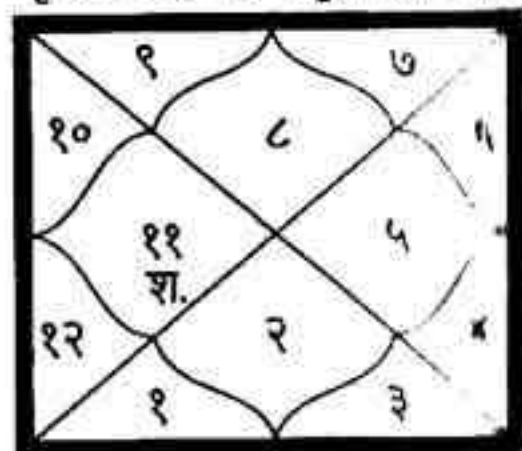
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव: शनि

१५४

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव जातक को संतान का सुख मिलता है, परंतु उससे मतभेद रहता है। ऐसा व्यक्ति वाचाल, चतुर तथा होशियार है। उसका माता से वैमनस्य रहता है तथा मकान, आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। यहां से शनि री मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: उसे तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति है, सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से मी अच्छी रहती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव देखने के कारण कुटुंब से वैमनस्य बना रहता है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी धन विशेष वृद्धि नहीं हो पाती।
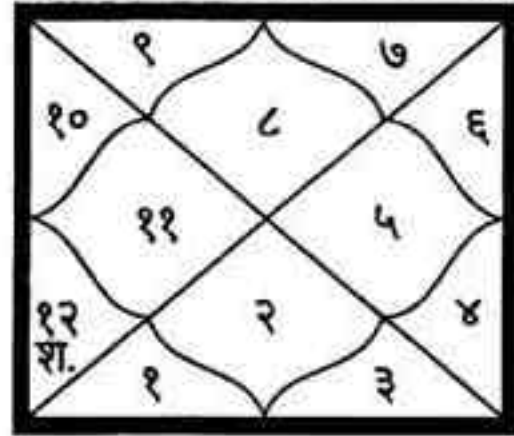
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: षष्ठभाव: शनि

१५५

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक शत्रु- में गुप्त युक्ति से काम निकालता है। उसे भाई-बहन, भूमि एवं मकान आदि का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त है, यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखने कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध लाभ मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव देखने से विरोध रहते हुए भी भाई-बहन का सुख प्राप्त है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।
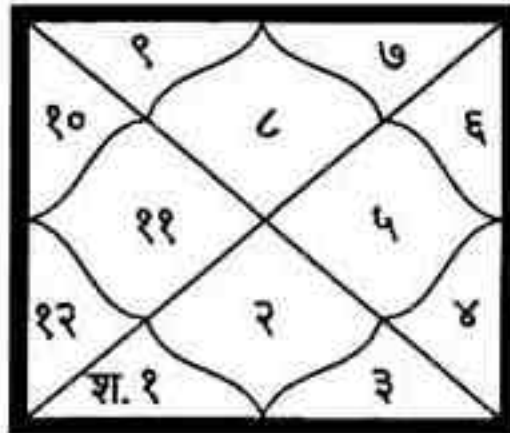
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः सप्तमभाव

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौंदर्य में कमी रहती है तथा जातक को अधिक शारीरिक श्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से अपनी राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा मकान का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में आमोद प्रमोद सुखी तथा संतुष्ट बना रहता है एवं प्रभावशाली होता है।
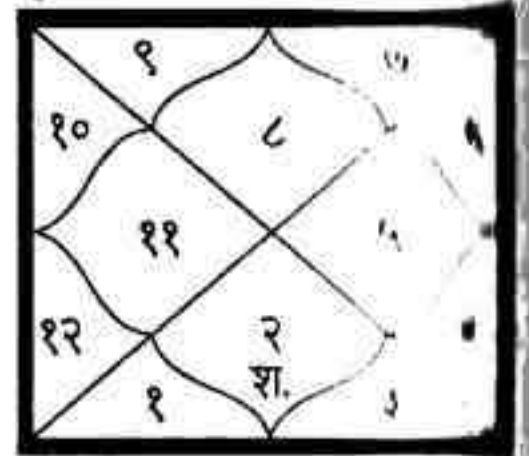
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्नः अष्टमभाव

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परंतु माता के सुख में बहुत कमी रहती है तथा भूमि, मकान एवं भाई-बहनों के सुख में भी हानि उठानी पड़ती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता से वैमनस्य, राजकीय क्षेत्र में असफलता एवं व्यावसायिक क्षेत्र में आलस्य का सामना करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुंब से वैमनस्य बना रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या और संतान के पक्ष में भी त्रुटि रहती है, परंतु दैनिक जीवन कुछ शान का बना रहता है।
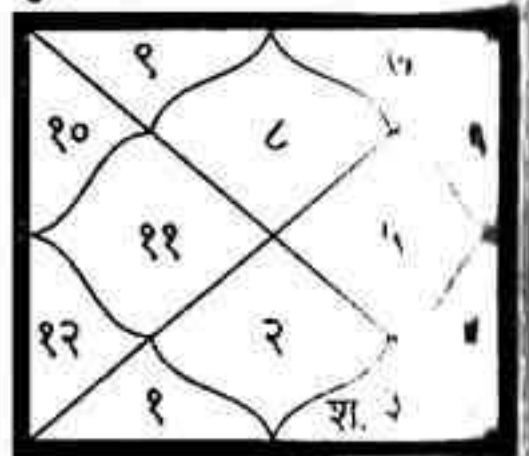
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक लग्नः नवमभाव

नवें, त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ असंतोष के साथ धर्म का पालन करता है तथा कुछ रुकावटों के साथ भाग्योन्नति होती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है तथा धन का प्रचुर लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं
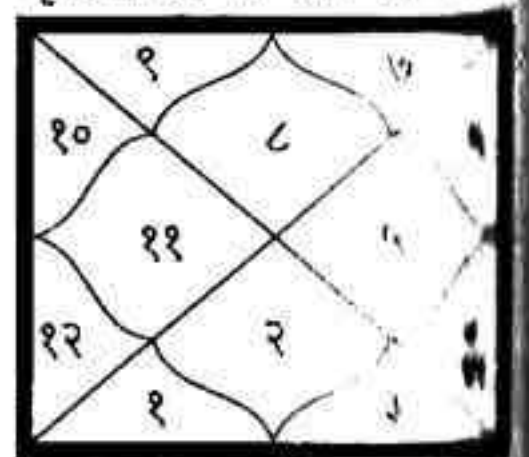
तीसरी नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी उठानी पड़ती है तथा ननिहाल का पक्ष भी कमजोर बना रहता है। फिर भी ऐसा जातक भाग्यवान समझा जाता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः दशमभावः शनि

९५९

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सफलता, मान तथा लाभ प्राप्त करता है। इसी प्रकार उसे भाई-बहन का सुख भी कुछ कम मिल पाता है, परंतु पराक्रम में वृद्धि होती है। यहां से शनि तीसरी मित्र तथा उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ एवं शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता से कुछ मतभेद रहता है, परंतु भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू वातावरण आनंदमय बना रहता है।
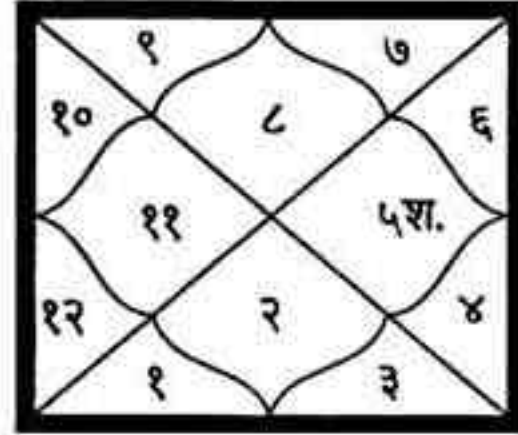
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः एकादशभावः शनि

९६०

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है और उसके कारण वह सुखी जीवन व्यतीत करता है। साथ ही उसे भाई-बहन, माता एवं भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौंदर्य में कमी आती है तथा शरीर को आराम नहीं मिल पाता। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं संतान का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक को दीर्घायु की प्राप्ति होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। संक्षेप में ऐसा जातक भाग्यवान् होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।
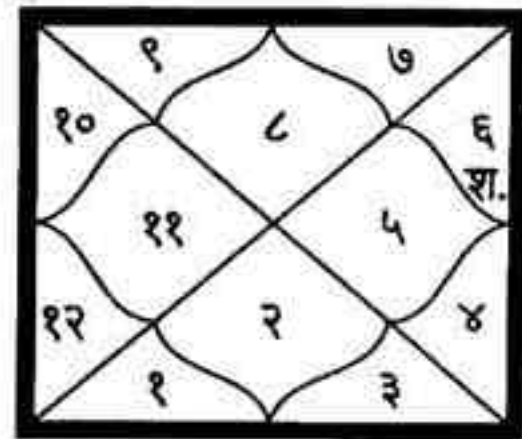
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: द्वादशभाव: श[illegible]

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। साथ ही भाई-बहन, माता एवं भूमि आदि के सुख में कुछ कमी आती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक के धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुंब से असंतोष रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक अमीरी [illegible] का जीवन बिताता है।
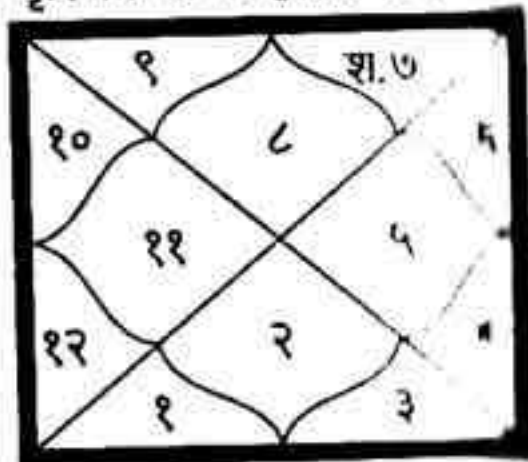
'वृश्चिक' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्न: प्रथमभाव: [illegible]

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी गुप्त चिंता अथवा कष्ट का निवास रहता है। वह अपनी उन्नति के लिए अत्यधिक कठिन परिश्रम करता हुआ गुप्त युक्तिओं का आश्रय लेता है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव तेज होता है। वह स्वार्थ साधने में चतुर होता है। उसके शारीरिक-सौंदर्य में कमी रहती है और कभी-कभी उसे मृत्यु तुल्य शारीरिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है।
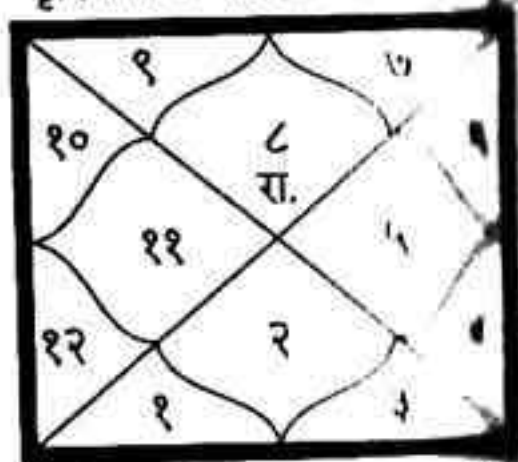
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित [illegible] के प्रभाव से जातक को अपने कुटुंब के संबंध में चिंता एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उसे धन प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है, फिर भी वह अभावग्रस्त तथा ऋणी ही बना रहता है। उसकी धन संबंधी चिंताएं दूर नहीं हो पातीं।

वृश्चिक लग्न: द्वितीयभाव: [illegible]
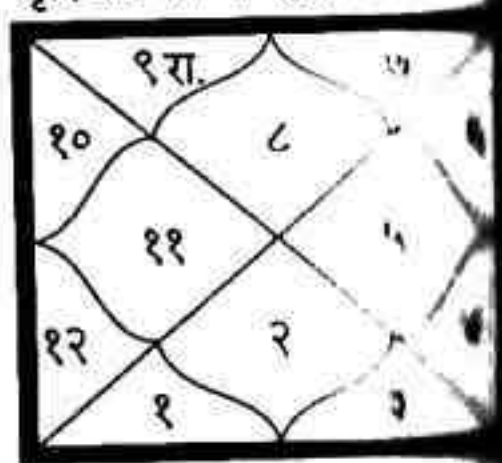
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः तृतीयभावः राहु

९६४

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह कठिन कर्म करने वाला, परिश्रमी, महान, पुरुषार्थी, चतुर, गुप्त युक्तियों का जानकार, हिम्मतवर तथा धैर्यवान होता है। कभी-कभी हिम्मत हारने का अवसर आ जाने पर भी वह अपने धैर्य को नहीं खोता और किसी-किसी समय असाधारण साहस का प्रदर्शन भी कर बैठता है। ऐसे व्यक्ति को भाई-बहनों का सुख तो मिलता है, परंतु उनकी ओर से अनेक प्रकार की चिंताएं भी बनी रहती हैं।
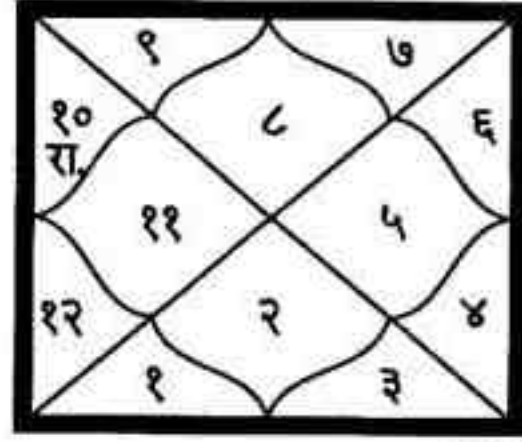
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः चतुर्थभावः राहु

९६५

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है तथा उसके घरेलू वातावरण में भी कभी-कभी बड़े संकट उठ खड़े होते हैं, परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर उनका निराकरण कर देता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा होशियार भी होता है।
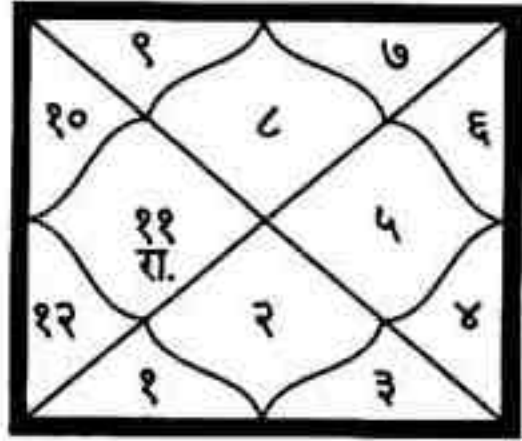
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः पंचमभावः राहु

९६६

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परंतु वह गुप्त युक्तियों और चतुराइयों में प्रवीण होता है। उसकी बोल-चाल से उसकी होशियारी तथा बुद्धिमानी प्रकट होती है। संतानपक्ष में उसे पहले बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, बाद में उसे कुछ सफलता मिलती है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क हर समय परेशान रहता है, परंतु वह अपनी परेशानी किसी पर जाहिर नहीं होने देता।
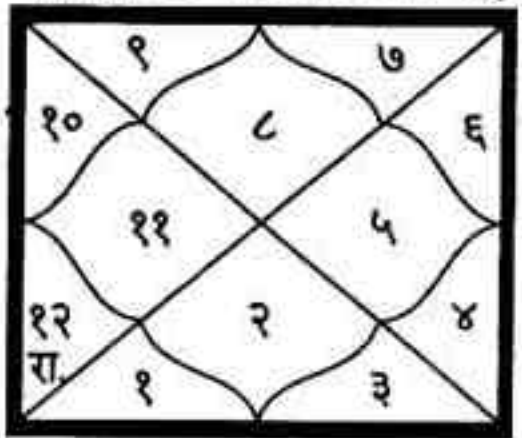
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा विजयी होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, हिम्मत, चतुराई तथा धैर्य के बल पर सभी मुसीबतों, कठिनाइयों, संघर्षों रोगों, झंझटों, झगड़ों तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है और बड़ी-से-बड़ी मुसीबतों के समय में भी हिम्मत नहीं हारता है।

वृश्चिक लग्नः षष्ठभाव
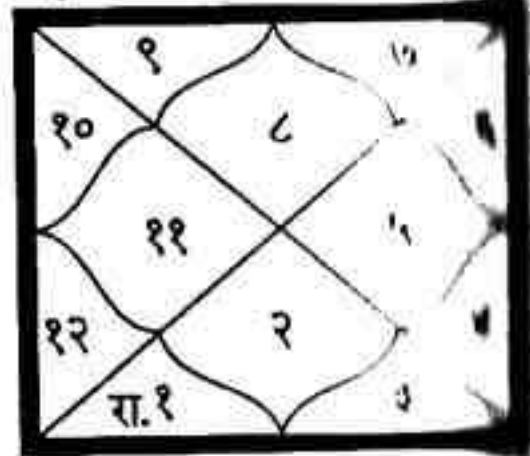
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '
में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों एवं चतुराई के बल पर उन सब पर विजय प्राप्त करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले व्यक्ति को स्त्री तथा व्यवसाय के कारण किसी समय घोर संकटों में भी फंस जाना पड़ता है, परंतु वह येन केन प्रकारेण उन मुसीबतों को पार कर लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान, तथा चतुर होता है।

वृश्चिक लग्नः सप्तमभाव।
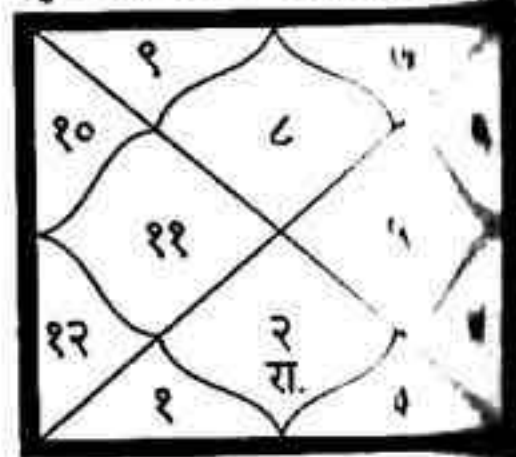
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '
में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन उमंग और उत्साह से पूर्ण बना रहता है। वह बड़ी शान-शौकत से जिंदगी बिताता है, परंतु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है और पेट में विकार भी हो जाता है। ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः अष्टमभाव।
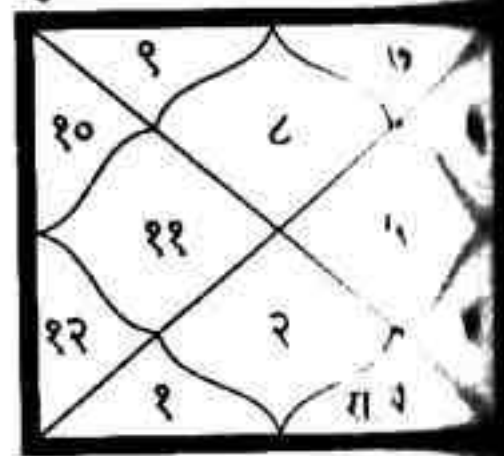
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '
में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने ... चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से ... की भाग्योन्नति में बड़ी बाधाएं आती हैं तथा ... के प्रति भी उसकी अश्रद्धा बनी रहती है। ऐसा ... मानसिक चिंताओं से ग्रस्त बना रहता है। वह ... बार निराश भी हो जाता है तथा अपनी भाग्योन्नति ... लिए न्याय-विरुद्ध आचरण भी करता है। अनेक प्रकार ... मुसीबतें उठाने के बाद अंत में उसे थोड़ी-बहुत ... प्राप्त होती है।

वृश्चिक लग्न: नवमभाव: राहु

९ ७ १० ८ ६ ११ ५ १२ २ ४ रा. १ ३
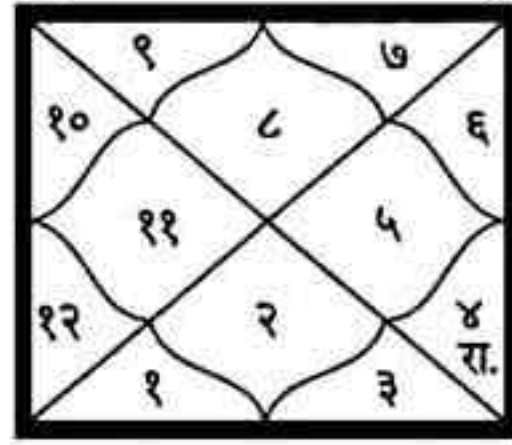
१७०

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में ... शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव ... जातक को अपने पिता के द्वारा परेशानी उठानी पड़ती ... इसी प्रकार राज्य के क्षेत्र से भी कष्ट एवं निराशा का ... करना होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी ... बाधाएं आती हैं। ऐसे व्यक्ति की मान-प्रतिष्ठा पर ...-कभी जबर्दस्त संकट आ जाता है। फिर भी वह ... चातुर्य, धैर्य एवं साहस के बल पर उन्नति के लिए ...शील बना रहता है।

वृश्चिक लग्न: दशमभाव: राहु
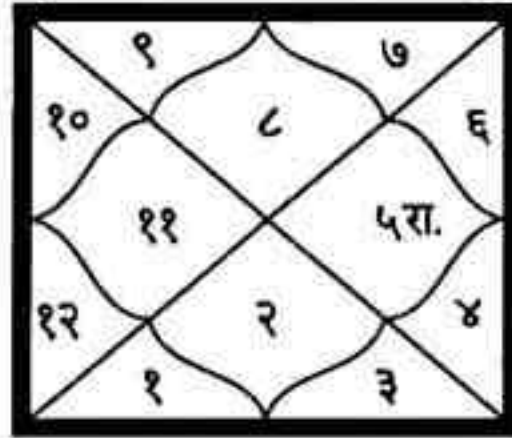
१७१

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या ... पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने क्षेत्र ... विशेष सफलता प्राप्त होती है। वह अपनी बुद्धि, चातुर्य, ...-शक्ति एवं गुप्त युक्तियों द्वारा विशेष लाभ कमाता ... अधिक मुनाफा कमाने के लिए वह उचित-अनुचित ... विचार भी नहीं करता। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ साधने में ... होता है और उसे कभी-कभी अनायास ही मुफ्त ... धन भी मिल जाता है। इतने पर भी वह अपनी ... के संबंध में असंतुष्ट बना रहता है।

वृश्चिक लग्न: एकादशभाव: राहु
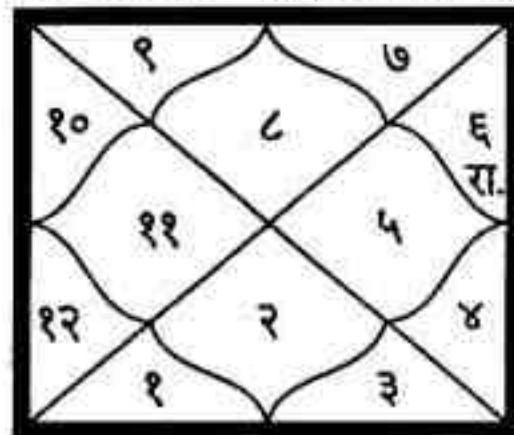
१७२

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, जिसके कारण उसे प्राय: परेशानियों एवं चिंताओं का शिकार बना रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ उठाता है। परंतु ऐसे व्यक्तियों को कभी आकस्मिक धन-लाभ होता है, कभी अत्यधिक आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है, तो कभी अन्य प्रकार की कठिनाइयां वहन करनी पड़ती हैं।

वृश्चिक लग्न: द्वादशभाव:
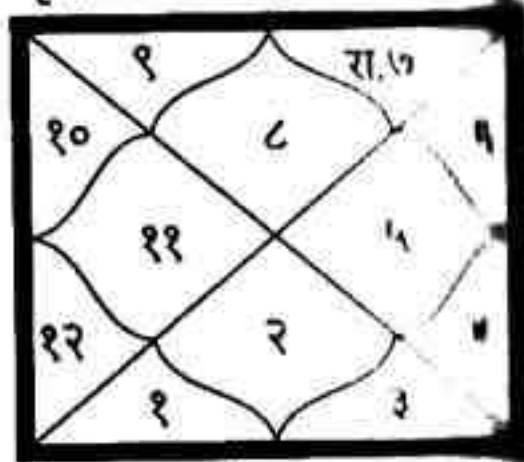
'वृश्चिक' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर कई बार चोट लगती है तथा शारीरिक सौंदर्य में कमी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव उग्र होता है। वह शरीर से कठिन परिश्रम करने वाला, परंतु दिमाग का कमजोर होता है। उसे चेचक आदि की बीमारी भी हो सकती है, जिसके स्थायी चिह्न शरीर पर बने रहेंगे। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ अधिक दौड़-धूप करने पर अधिक थक जाता है तथा परेशानी का अनुभव करता है।

वृश्चिक लग्न: प्रथमभाव:
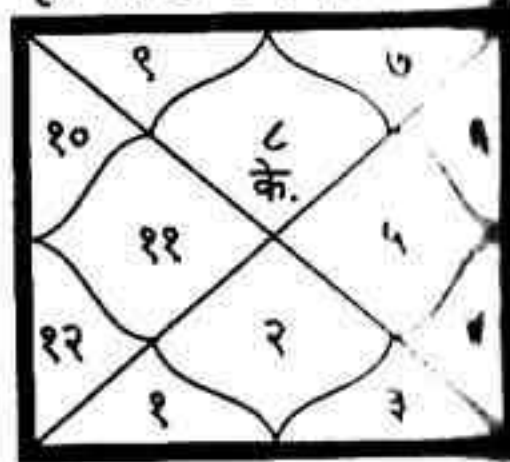
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को धन की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, परंतु कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा को बचाए रखने के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है और उसके कौटुंबिक-सुख में भी कुछ-न-कुछ कमी बनी रहती है।

वृश्चिक लग्न: द्वितीयभाव:
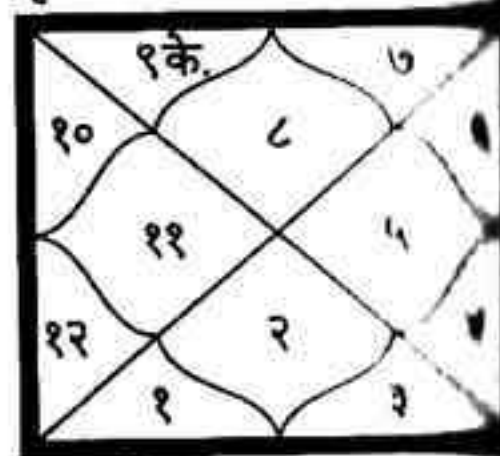
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, साहसी तथा धैर्यवान होता है। भीतर से कमजोरी का अनुभव करने पर भी वह बाहर से बड़ी हिम्मत का प्रदर्शन करता है। उसे झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त होती है, परंतु भाई-बहन के संबंधों से उसे सदैव ही परेशानी एवं कष्ट का अनुभव होता रहता है।

वृश्चिक लग्न: तृतीयभाव: केतु
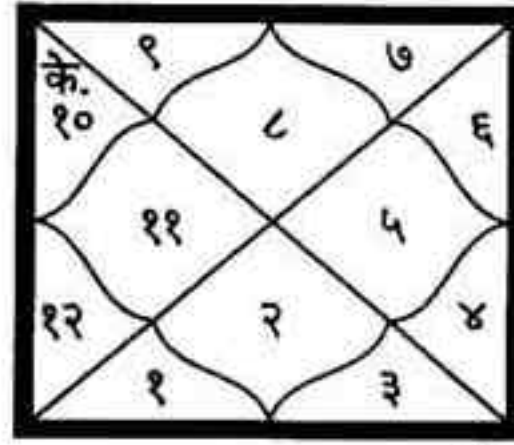
९७६

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के कारण परेशानी उठानी पड़ती है तथा भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति का हृदय सदैव अशांत रहता है। वह कठिन परिश्रम करके सुख-चैन पाना चाहता है, परंतु उसे मनचाही सफलता नहीं मिलती। स्थान परिवर्तन कर देने पर उसे थोड़ा-बहुत सुख मिल जाता है, परंतु घर में सदैव अशांति भी बनी रहती है।

वृश्चिक लग्न: चतुर्थभाव: केतु
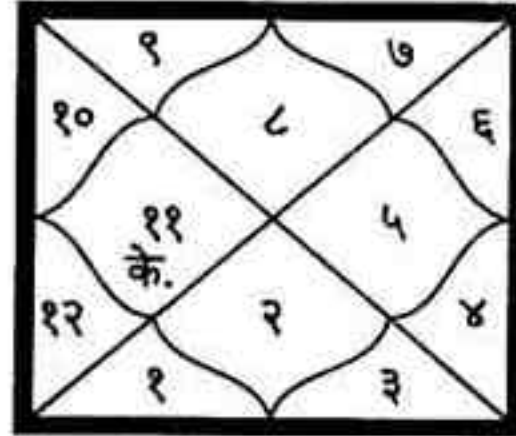
९७७

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा संतान के पक्ष से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा जिद्दी, दृढ़-निश्चयी, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला, साहसी, निर्भय तथा धैर्यवान होता है। उसके मस्तिष्क में गुप्त चिंताओं का निवास रहता है, परंतु वह उन्हें किसी पर प्रकट नहीं होने देता। उसका बातचीत करने का ढंग भी अच्छा नहीं होता।

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव: केतु
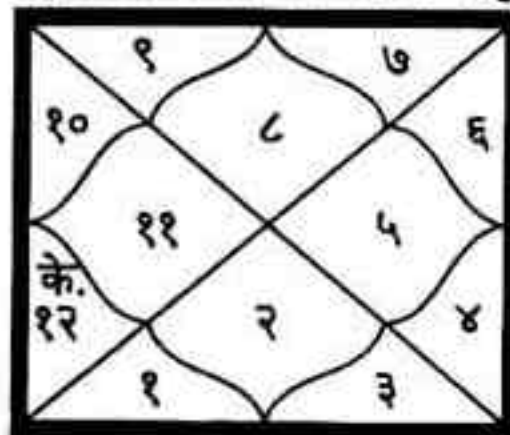
९७८

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा सभी मुसीबतों, संकटों, कठिनाइयों, झगड़ों एवं शत्रुओं पर अपने साहस, धैर्य, गुप्त युक्तियों एवं बहादुरी के बल पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। उसके ननिहाल का पक्ष भी कमजोर रहता है।

वृश्चिक लग्नः षष्ठभाव: केतु
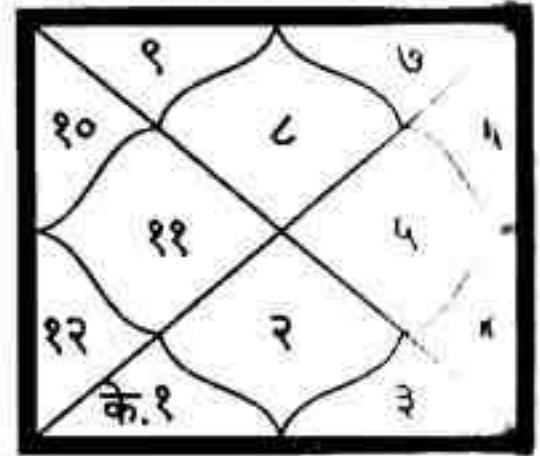
९, १०, ८, ११, ५, १२, २, के.१, ३, ७

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः सप्तमभाव: केतु

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से घोर कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा गृहस्थी के सुख में अनेक प्रकार के व्यवधान एवं संकट उठ खड़े होते हैं। उसे अपने दैनिक व्यापार के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा जननेंद्रिय में विकार भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य, हठ, गुप्त युक्ति, साहस एवं धैर्य के बल पर किसी प्रकार कठिनाइयों का निवारण करने में कुछ समर्थ होता है, परंतु उसका जीवन संघर्षमय ही बना रहता है।
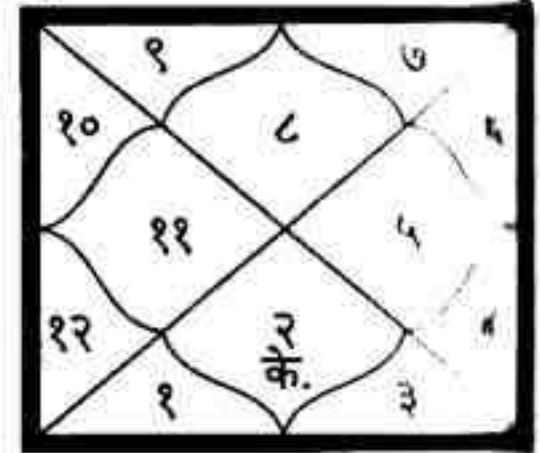
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

वृश्चिक लग्नः अष्टमभाव: केतु

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के संबंध में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है, फिर भी वह संकटों से छुटकारा नहीं पाता।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में महान संकट उपस्थित होते रहते हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति हर समय मानसिक चिंताओं से घिरा रहता है। वह कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा वह अपने भाग्य को बनाने का प्रयत्न करता है, परंतु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

वृश्चिक लग्न: नवमभाव: केतु
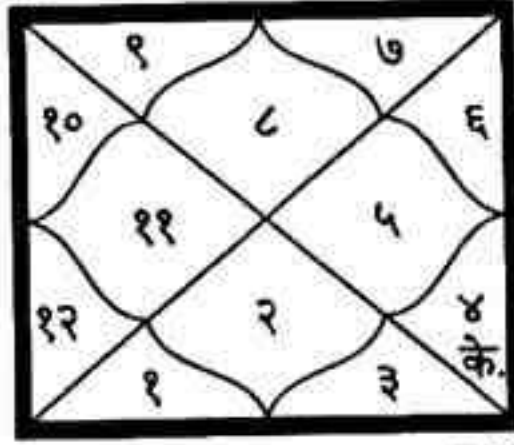
१८२

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है, राज्य के क्षेत्र में मान भंग होता है तथा परेशानियां उठानी पड़ती हैं एवं व्यवसाय की उन्नति में घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति किसी-किसी समय घोर संकट में भी फंस जाता है, परंतु वह अपने धैर्य, साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अंततः कुछ राहत पा लेता है। फिर भी उसका जीवन सुखी नहीं रहता।

वृश्चिक लग्न: दशमभाव: केतु
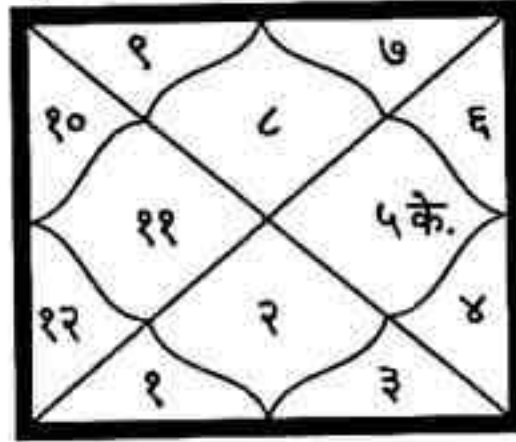
१८३

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। कभी-कभी उसे आकस्मिक धन का लाभ भी हो जाता है और कभी-कभी संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी तथा चालबाज होता है। वह सदैव अपना स्वार्थ पूरा करने की इच्छा रखता है। इतने पर भी उसे अपने लाभ से संतोष नहीं होता। वह परिश्रम एवं हिम्मत के साथ और अधिक आमदनी बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता है।

वृश्चिक लग्न: एकादशभाव: केतु
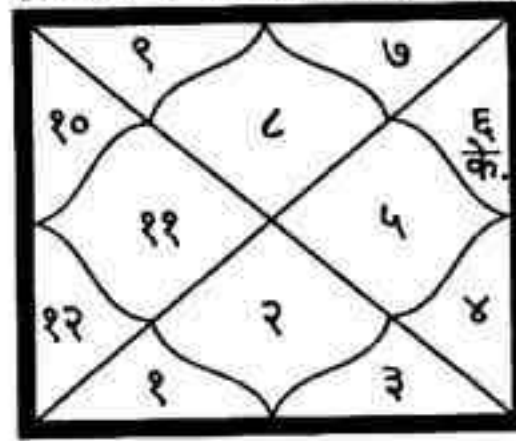
१८४

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु वह बड़ी चतुराई, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अपने खर्च को चलाता रहता है। ऐसे व्यक्ति को बाहरी स्थानों के संबंध से कठिन परिश्रम एवं चतुराई द्वारा लाभ प्राप्त होता है। किसी समय उसे अपने खर्च के कारण घोर संकट का सामना भी करना पड़ता है, फिर भी वह अपने साहस तथा धैर्य को नहीं छोड़ता।
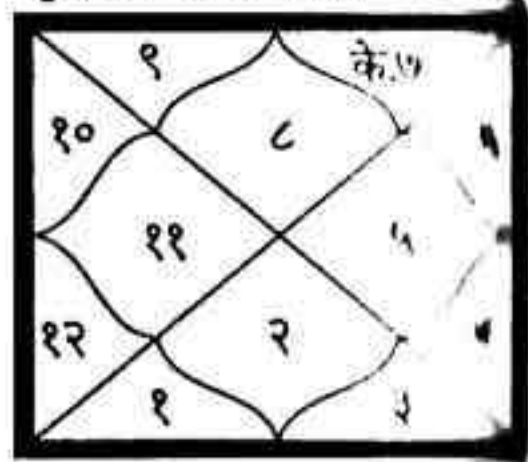
'वृश्चिक' लग्न का फलादेश समाप्त
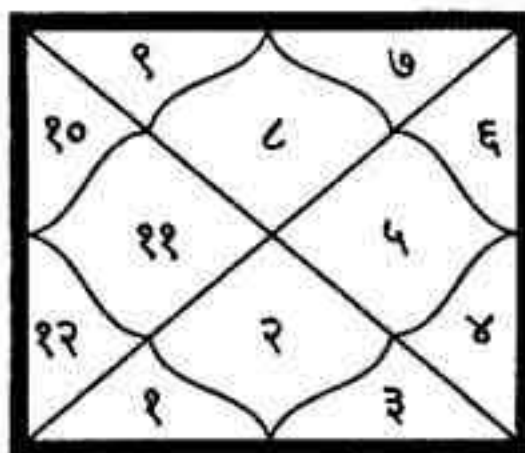
धनु लग्न
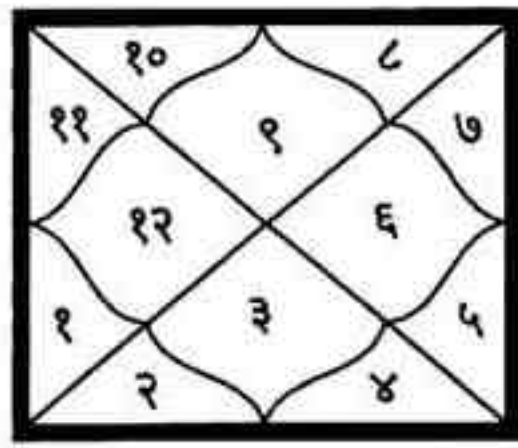
धनु लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: सप्तमभाव सूर्य

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन के अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से सुख प्राप्त करता है। उसका गृहस्थ जीवन आनंद से व्यतीत होता है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य की शक्ति का भरोसा रखता है तथा ईश्वर भक्त भी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सुख एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। वह धर्म का पालन करता है तथा भाग्यवान होता है, परंतु उसकी स्त्री का स्वभाव कुछ तेज होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: अष्टमभाव सूर्य

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन प्रभावशाली रहता है, परंतु भाग्योन्नति में बहुत-सी रुकावटें आती हैं और विलंब से भाग्य की वृद्धि होती है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि के द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय के मार्ग में कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा कौटुंबिक सुख में भी कमी आती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में कुछ कमी आती है, साथ ही भाई-बहनों से भी कुछ मतभेद रहता है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ के मुकाबले भाग्य पर अधिक आश्रित रहता है, परंतु वह भाग्यवान समझा जाता है तथा उसका जीवन सामान्यतः सुखी रहता है।

धनु लग्न: नवमभाव सूर्य

'धनु' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाला जातक कार्य करने में कुशल, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, घोड़ों को रखने वाला, मित्रों के काम आने वाला, राजा के समीप रहने वाला, ज्ञानवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, सत्यप्रतिज्ञ, बुद्धिमान, सुंदर, सती-गुणी, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, धनी, ऐश्वर्यवान, कवि, लेखक, व्यवसायी, यात्रा-प्रेमी, पराक्रमी, अल्प संततिवान, प्रेम के वशीभूत रहने वाला, पिंगल वर्ण, घोड़े के समान जांघों वाला, बड़े दांतों वाला तथा प्रतिभाशाली होता है।

ऐसा व्यक्ति बाल्यावस्था में अधिक सुख भोगने वाला, मध्यमावस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला तथा अंतिम अवस्था में धन-धान्य तथा ऐश्वर्य से पूर्ण होता है। उसे २२ अथवा २३ वर्ष की आयु में धन का विशेष लाभ होता है।

'धनु' लग्न

१८८

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुंडली' में दी गई होती है, उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायीरूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'धनु' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या

९८९ के अनुसार पड़ता रहेगा, परंतु यदि दैनिक ग्रह गोचर में कुंडली देखते समय [illegible] 'धनु' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली-संख्या [illegible] अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, [illegible] तक कि वह 'मकर' राशि से हटकर 'कुंभ' राशि में नहीं चला जाता। 'कुंभ' राशि में [illegible] वह 'धनु' राशि के अनुरूप प्रभाव डालना आरंभ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म [illegible] में सूर्य 'धनु' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुंडली संख्या ९८९ में वर्णि[illegible] देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'मकर' राशि के 'द्वितीयभाव' में [illegible], तो उदाहरण-कुंडली संख्या ११०१ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों [illegible] समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान जीवन पर प्रभावकारी [illegible] चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित [illegible] ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली-संख्या ९८९ से १०९६ तक में किया गया है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों [illegible] किन उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए [illegible] विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उसके अनुसार ग्रहों की तात्कालि[illegible] के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों [illegible] स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठीक फलादेश [illegible] ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश [illegible] अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह [illegible] अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या [illegible] पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी [illegible] में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त [illegible] झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी [illegible] अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुंडली के किसी भाव में [illegible] एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टि [illegible] हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के [illegible] में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश [illegible] किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० [illegible] जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। [illegible] ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु [illegible] नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग [illegible]

है। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' भी कहा है—चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव —इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की —इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में गया है, अत: इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८९ से १००० तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९९० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ९९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ९९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १००० के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १००१ से १०१२ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'चंद्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १००७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण संख्या १००९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०१० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०११ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१२ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१३ से १०२४ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०२० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०२४ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०२५ से १०३७ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०३० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १०३६ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का [illegible] फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०३७ से १०४८ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' [illegible]भावी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली [illegible] १०४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली [illegible] १०४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली [illegible] १०४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली [illegible] १०४८ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०४९ से १०६० तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०६० के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०६१ से १०७२ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७२ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७३ से १०८४ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८४ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८५ से १०९६ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९६ के अनुसार समझना चाहिए।

'धनु' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः प्रथमभावः सूर्य

९८९

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक शक्ति एवं अधिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, धर्म-पालक तथा ईश्वर-भक्त होता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को सुंदर तथा भाग्यशालिनी स्त्री मिलती है और उससे सहयोग भी प्राप्त होता है। साथ ही दैनिक व्यवसाय में लाभ होता है और गृहस्थी का सुख भी प्राप्त होता है।
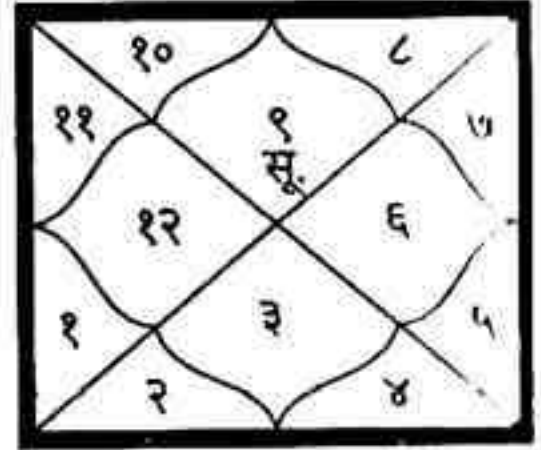
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः द्वितीयभावः सूर्य

९९०

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छी सफलता मिलती है। उसे कुटुंब का सुख भी कुछ मतभेदों के साथ प्राप्त होता है। स्वार्थ-सिद्धि की दृष्टि से वह धर्म का पालन भी करता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है, पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा भाग्योन्नति में भी सहायता प्राप्त होती है।
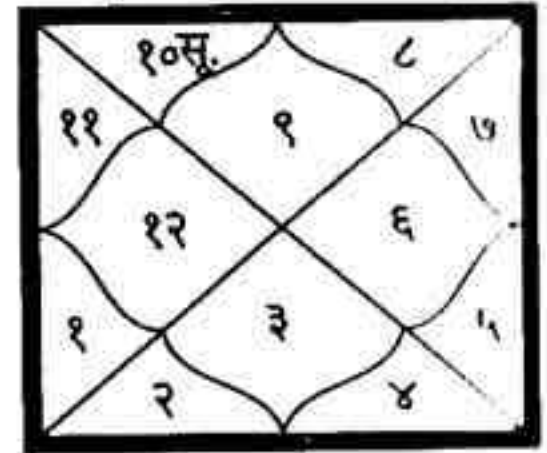
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः तृतीयभावः सूर्य

९९१

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख तो कुछ असंतोष के साथ मिलता है, परंतु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर पर भरोसा रखने वाला तथा पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करने वाला होता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ के द्वारा जातक के भाग्य की अत्याधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथोचित पालन करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी, हिम्मती तथा शक्तिशाली होता है।
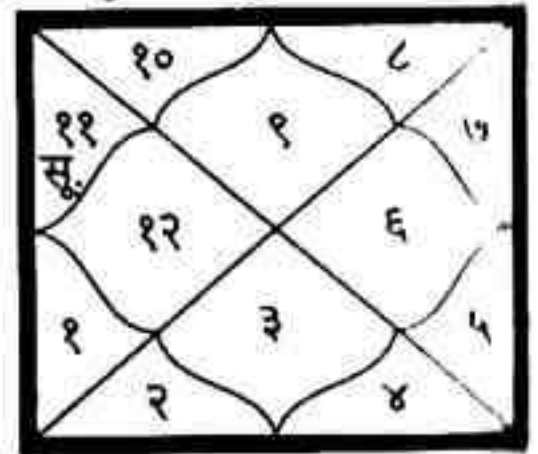
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख बहुत मिलता है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति भी प्राप्त होती है। उसकी भाग्योन्नति होती रहती है तथा धर्म में भी रुचि बनी रहती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ एवं उन्नति के योग प्राप्त होते रहते हैं। वह धनी, यशस्वी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य
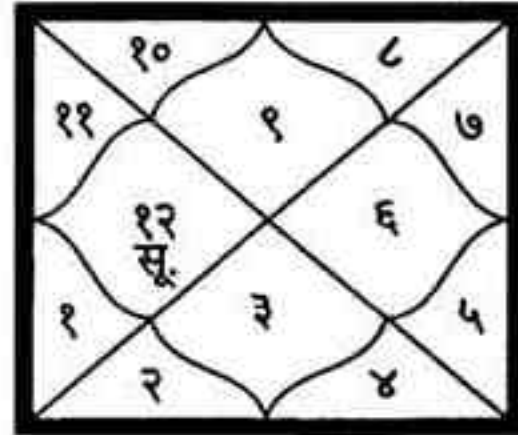
१९२

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को संतान का सुख एवं विद्या तथा बुद्धि का लाभ अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विद्वान, ज्ञानी, बुद्धिमान तथा धार्मिक विचारों का होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। उसकी वाणी प्रखर होती है, जिसके कारण उसे लाभ के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। इसमें शिष्टाचार एवं सज्जनता की कमी रहती है, अत: ऐसा व्यक्ति अपनी सामाजिक अथवा आर्थिक उन्नति अधिक नहीं कर पाता।
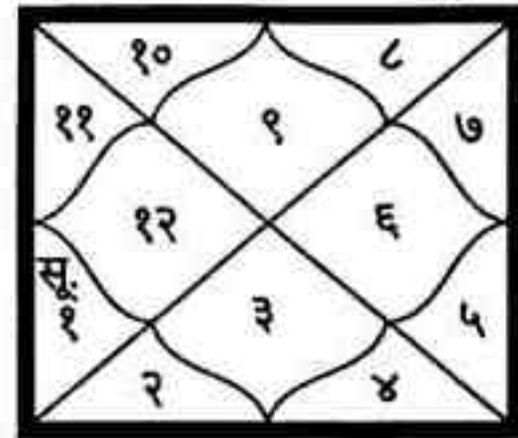
धनु लग्न: पंचमभाव: सूर्य

१९३

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अत्यधिक प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-झंझट के कार्यों से भाग्योन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है। धर्म का पालन करने में उसे विशेष रुचि नहीं होती। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु उसे बाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है, जिसके कारण कार्य चलता रहता है तथा भाग्य में वृद्धि होती है।

धनु लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

१९४

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्न: सप्तमभाव: सूर्य

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन के अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से सुख प्राप्त करता है। उसका गृहस्थ जीवन आनंद से व्यतीत होता है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य की शक्ति का भरोसा रखता है तथा ईश्वर-भक्त भी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सुख एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। वह धर्म का पालन करता है तथा भाग्यवान होता है, परंतु उसकी स्त्री का स्वभाव कुछ तेज होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्न: अष्टमभाव: सूर्य

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन प्रभावशाली रहता है, परंतु भाग्योन्नति में बहुत-सी रुकावटें आती हैं और विलंब से भाग्य की वृद्धि होती है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि के द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन-संचय के मार्ग में कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा कौटुंबिक सुख में भी कमी आती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक के पराक्रम में कुछ कमी आती है, साथ ही भाई-बहनों से भी कुछ मतभेद रहता है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ के मुकाबले भाग्य पर अधिक आश्रित रहता है, परंतु वह भाग्यवान समझा जाता है तथा उसका जीवन सामान्यत: सुखी रहता है।

धनु लग्न: नवमभाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा बहुत सहयोग मिलता है, राज्य के क्षेत्र से सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय में उन्नति होती रहती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है तथा धर्म का भी यथोचित पालन करता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। वह प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है।

धनु लग्नः दशमभावः सूर्य
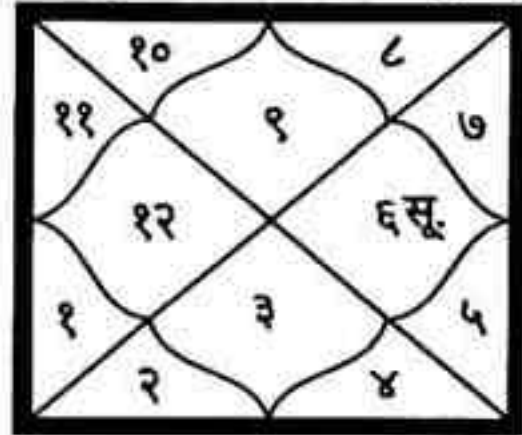
९९८

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि तो होती है, परंतु उसमें कुछ कठिनाइयां भी उपस्थित होती रहती है। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। वह विद्वान, बुद्धिमान, गुणवान, धर्मज्ञ, सज्जन तथा श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्नः एकादशभावः सूर्य
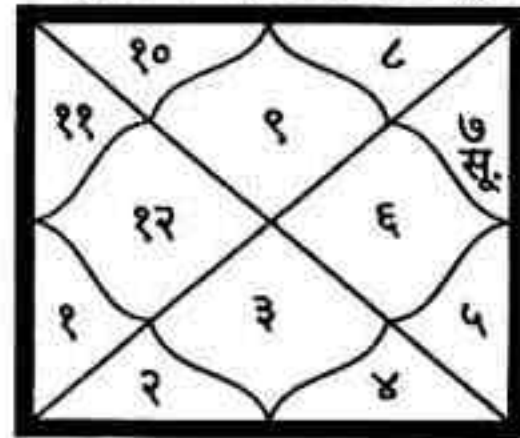
९९९

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ विलंब के साथ लाभ एवं सफलता का अवसर प्राप्त करता है। वह धर्म का पालन करने में अधिक रुचि नहीं रखता, परंतु उसका खर्च धार्मिक एवं परोपकार के मामलों में ही अधिक होता है। यहां से सूर्य अपनी-अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रुओं पर प्रभाव रखने वाला होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है।

धनु लग्नः द्वादशभावः सूर्य
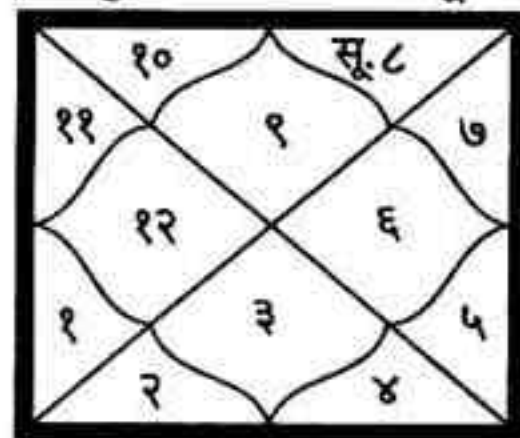
१०००

'धनु' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः प्रथमभावः चंद्र

१००१

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को आयु की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परंतु पुरातत्त्व के लाभ में कठिनाइयां आती हैं। उसका शरीर सुंदर तथा स्वस्थ होता है, मन में अनेक प्रकार के विचार उठते रहते हैं तथा जीवन में सुख-दुःख दोनों का ही समन्वय बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री की शक्ति कुछ कठिनाइयों के बाद मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी परेशानियां आती रहती हैं।
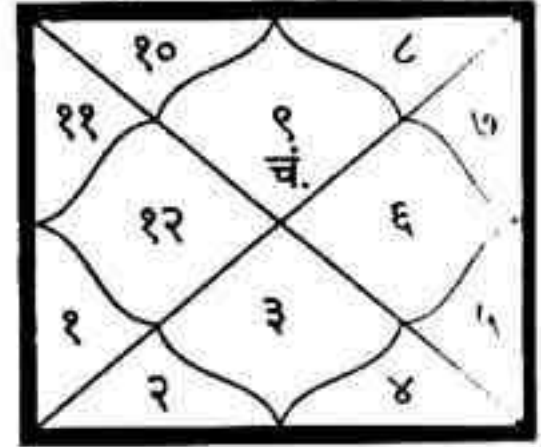
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः द्वितीयभावः चंद्र

१००२

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कौटुंबिक सुख में भी कमी बनी रहती है। उसे पुरातत्त्व द्वारा धन प्राप्ति के साधन मिलते रहते हैं तथा आयु की वृद्धि भी होती है। यहां से चंद्रमा अपनी ही कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका जीवन अमीरी ढंग का होता है, परंतु मन में कुछ बेचैनी-सी भी बनी रहती है।
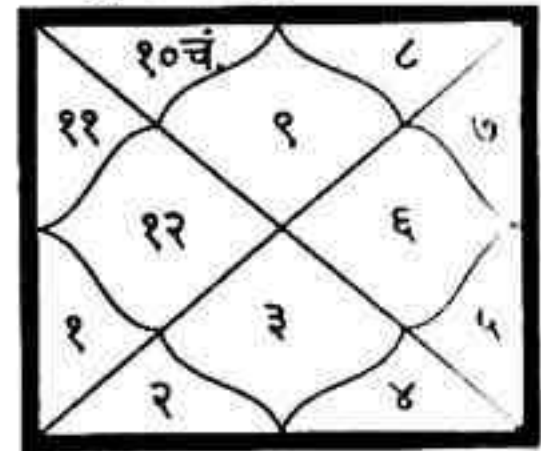
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। सामान्यतः ऐसा जातक भाग्यवान होता है, परंतु उसे जीवन में संघर्षों का सामना भी निरंतर करना पड़ता है।

धनु लग्नः तृतीयभावः चंद्र
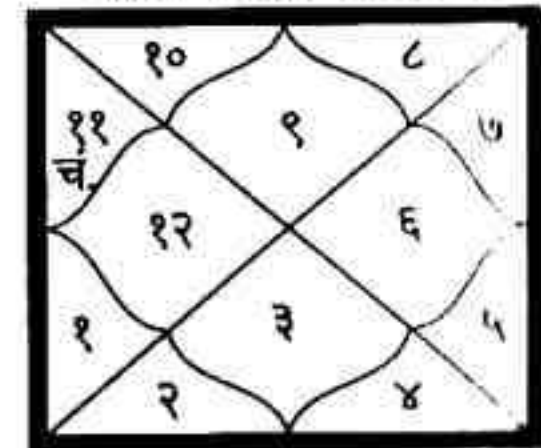
१००३

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः चतुर्थभावः चंद्र

१००४

चौथे, केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा मातृभूमि से अलग जाकर रहना पड़ता है। परंतु उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है और दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
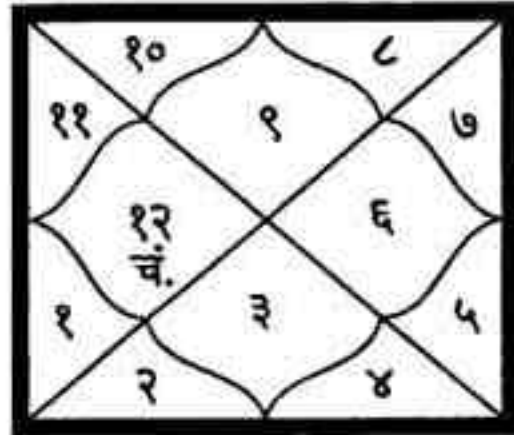
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः पंचमभावः चंद्र

१००५

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी का सामना करना पड़ता है। उसके मस्तिष्क में चिंताएं घर किए रहती हैं, परंतु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है तथा दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के संबंध में भी परेशानी उठानी पड़ती है तथा बड़े मनोयोग तथा परिश्रम के बाद कुछ सफलता मिलती है।
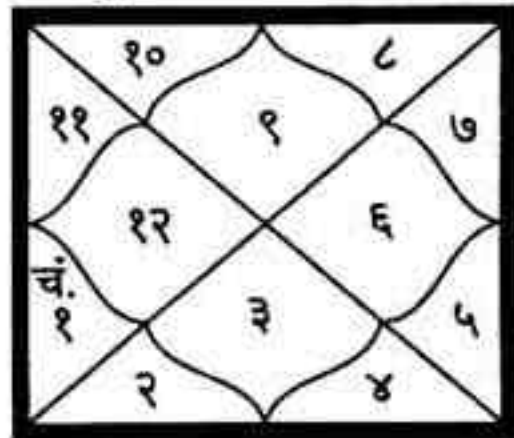
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाए रखता है। उसके दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयां तो आती हैं, फिर भी वह आनंदित बना रहता है। अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ भी होता है, साथ ही शत्रु पक्ष से झगड़े-झंझटों के कारण कुछ मानसिक परेशानी भी बनी रहती है। यहां से चंद्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के संबंध में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी अरुचिकर रहता है।

धनु लग्नः षष्ठभावः चंद्र
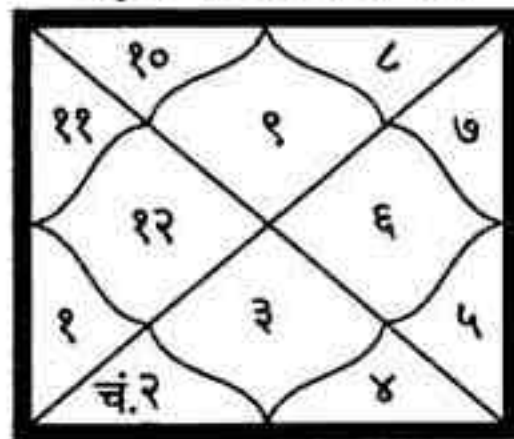
१००६

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः सप्तमभावः चंद्र

१००७

सातवें केंद्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयां आती रहती हैं, परंतु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है और दैनिक जीवन में आनंद का वातावरण भी थोड़ा-बहुत बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शारीरिक सौंदर्य तो अच्छा होता है, परंतु उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहता। वह थोड़े-से परिश्रम अथवा सामान्य परेशानियों के उपस्थित होने पर अधिक थक कर शिथिल हो जाता है।
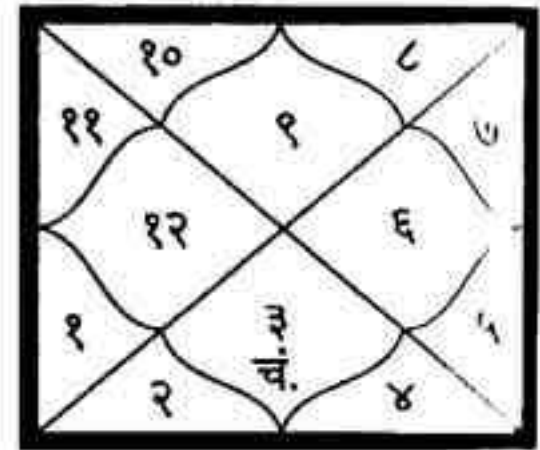
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः अष्टमभावः चंद्र

१००८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व की शक्ति का भी यथेष्ट लाभ मिलता है। उसका जीवन बड़े ठाट-बाट का रहता है, परंतु मन में थोड़ी-बहुत अशांति भी बनी रहती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन के संबंध में चिंता बनी रहती है तथा कुटुंब से भी अधिक सुख नहीं मिल पाता। उसे धन तथा कुटुंब दोनों के ही संबंध में परेशानी एवं चिंताओं का शिकार बने रहना पड़ता है।
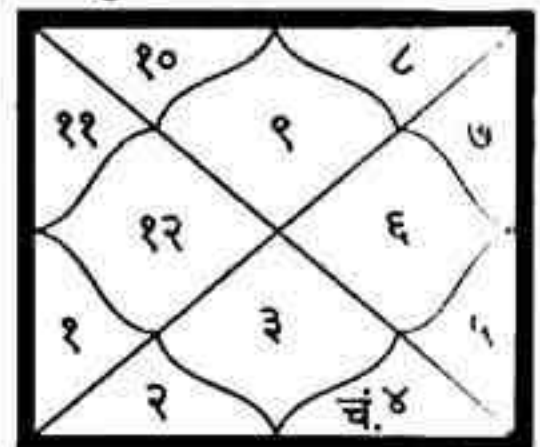
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः नवमभावः चंद्र

१००९

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ परेशानियां आती हैं तथा यश भी कम मिल पाता है, साथ ही धर्म का भी यथा-विधि पालन नहीं होता, परंतु उसकी आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होने से भाग्य में वृद्धि भी होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का अपने भाई-बहनों
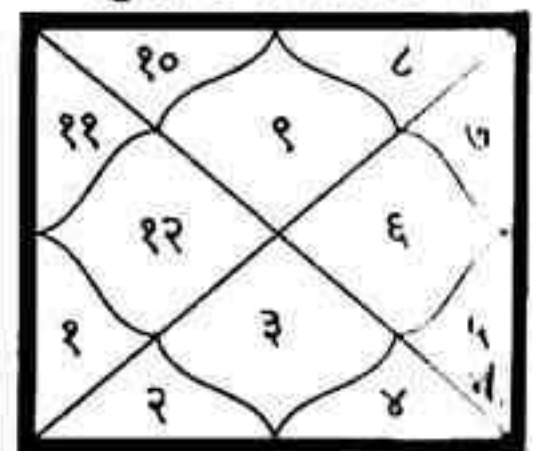
के साथ मतभेद बना रहता है तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं हो पाती। वह अपने मनोबल द्वारा सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: दशमभाव: चंद्र

१०१०

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है, जिसके कारण जीवन प्रभावशाली एवं ठाट-बाट का बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख मिलता तो है, परंतु उसमें कमी और परेशानी बनी रहती है।
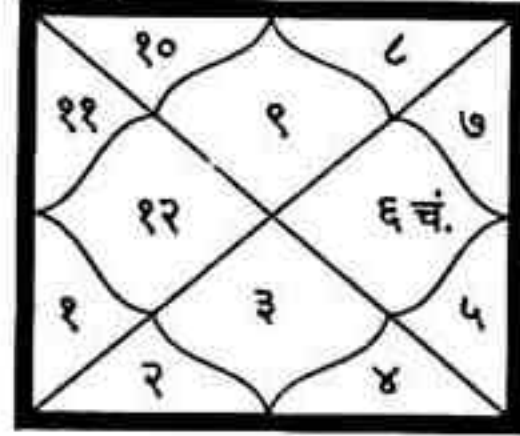
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित अष्टमेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ लाभ प्राप्त होता रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन आनंदमय बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतानपक्ष से कुछ कष्ट तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में कमी रहती है। इसके साथ ही मस्तिष्क में विविध प्रकार की चिंताओं का निवास भी बना रहता है।

धनु लग्न: एकादशभाव: चंद्र
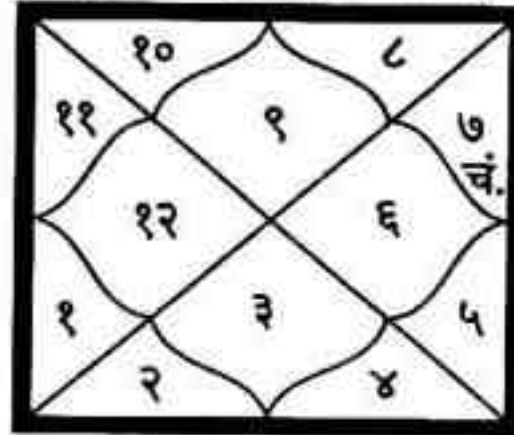
१०११

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: द्वादशभाव: चंद्र

१०१२

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कष्ट मिलता है। ऐसे व्यक्ति को आयु एवं पुरातत्त्व की भी हानि होती है। मानसिक चिंताएं घेरे रहती हैं और उसका जीवन अशांतिपूर्ण रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी
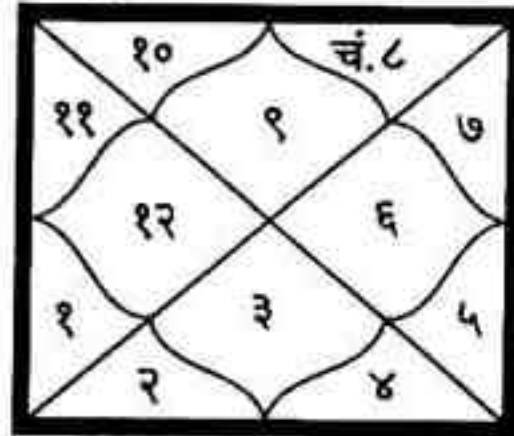
सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाए रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों पर विजय प्राप्त करता है।

'धनु' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः प्रथमभाव: मंगल

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति उत्तम रहती है और शारीरिक श्रम तथा बुद्धि योग से बड़े काम करता है। उसे विद्या, संतान एवं बाहरी स्थानों से भी सामान्य लाभ होता है, परंतु मंगल के व्ययेश होने के कारण शारीरिक-सौंदर्य में कमी रहती है तथा अहंकार की मात्रा भी बढ़ी रहती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि का सामान्य सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा आठवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कुछ कमजोरी आती है।
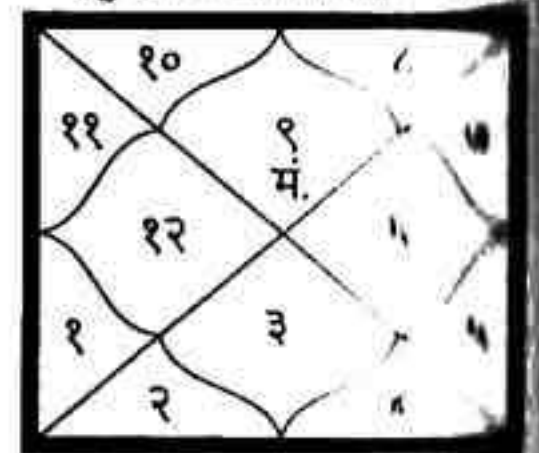
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः द्वितीयभाव: मंगल

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक बुद्धि-योग तथा बाहरी संबंधों से धन का सामान्य संचय करता है तथा कौटुंबिक-सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या तथा संतान की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को मित्र की राशि में देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमजोरी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से बड़ी कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति में थोड़ी सफलता मिलती है तथा धर्म का पालन करने में भी कुछ कमी बनी रहती है। मंगल के व्ययेश होने के कारण जातक का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या तथा संतान के पक्ष में भी कमी होती है तथा खर्च अधिक रहता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: शत्रुपक्ष में प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझटों में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य उन्नति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में न्यूनाधिक सफलता मिलती रहती है। संक्षेप में, ऐसे व्यक्ति का जीवन उतार-चढ़ावपूर्ण तथा संघर्षमय रहता है।

धनु लग्नः तृतीयभावः मंगल

१०१५

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख की विशेष हानि होती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राय: प्राप्त नहीं हो पाता। संतानपक्ष तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ काम चलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ है।

धनु लग्नः चतुर्थभावः मंगल

१०१६

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या एवं संतान के क्षेत्र में परेशानियों के बाद थोड़ी सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से मित्र चंद्रमा की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमजोरी रहती है तथा पेट में विकार बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-योग एवं बाहरी स्थानों के संबंधों से आमदनी के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है तथा
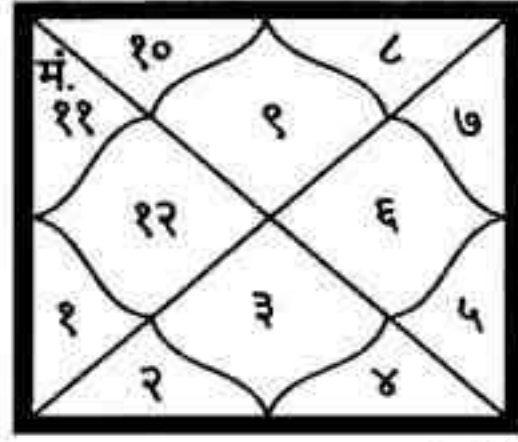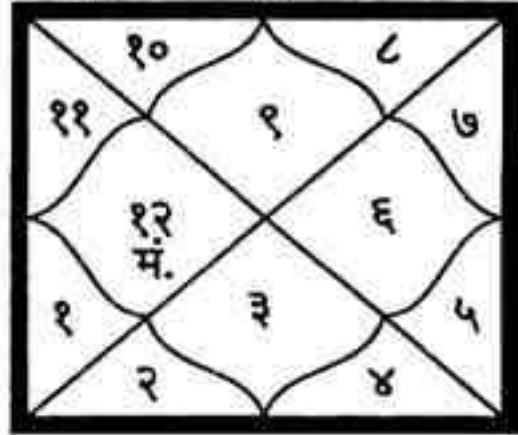
धनु लग्नः पंचमभावः मंगल
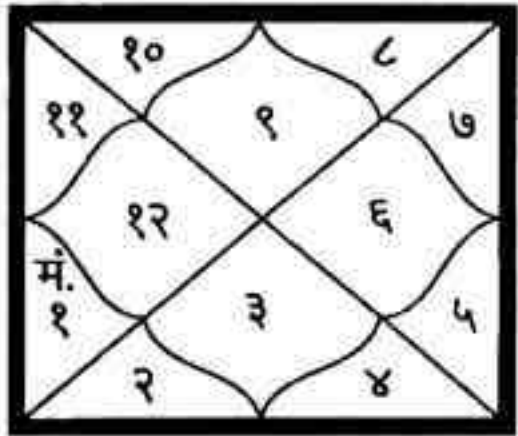
१०१७

आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है जिसके कारण कुछ मानसिक परेशानी बनी रहती है, परंतु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः षष्ठभावः मंगल

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में भी सफलता मिलती है, परंतु संतान से परेशानी तथा विद्या में कमी रहती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ परेशानी तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता से परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध में भी कठिनाइयां आती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा मस्तिष्क में परेशानी बनी रहती है।
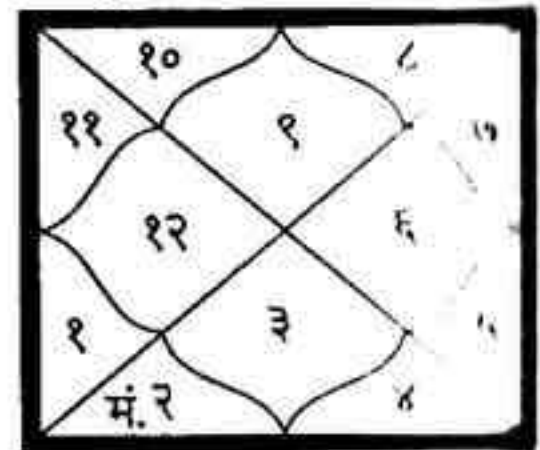
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः सप्तमभावः मंगल

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाई एवं हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से संबंध कुछ अच्छा रहता है तथा बुद्धि-बल से जातक अपना खर्च चलाता है। चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है एवं आठवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय के मार्ग में उन्नति होती है तथा कुटुंब का सुख भी सामान्य रूप में अच्छा प्राप्त होता है।
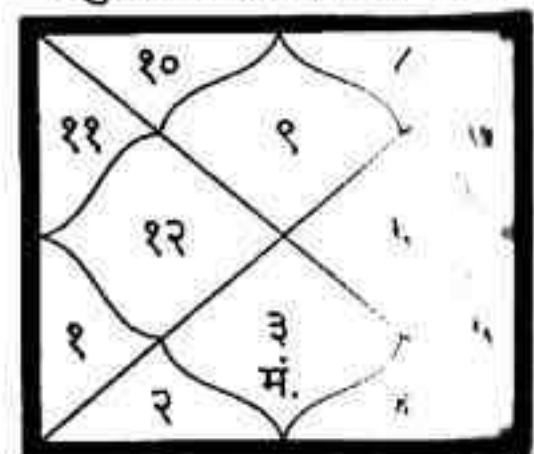
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश एवं नीच के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति का ह्रास होता है। पेट में विकार रहता है तथा चिंता एवं परेशानियां घेरे रहती हैं। संतानपक्ष से कष्ट और विद्या पक्ष में कमजोरी तथा बाहरी स्थानों के संबंध से अशांति बनी रहती है। चौथी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुंब की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों से विरोध रहता है।

धनु लग्न: अष्टमभाव: मंगल
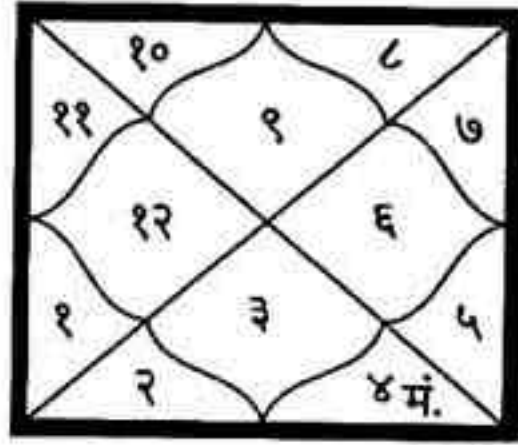
१०२०

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धन के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म के पक्ष की कुछ त्रुटिपूर्ण उन्नति होती है। इसी प्रकार विद्या एवं संतान के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों एवं कमियों के साथ सामान्य सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के अच्छे संबंध से खर्च की पूर्ति होती है तथा शक्ति मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों से विरोध रहता है तथा पुरुषार्थ में कमी आती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

धनु लग्न: नवमभाव: मंगल
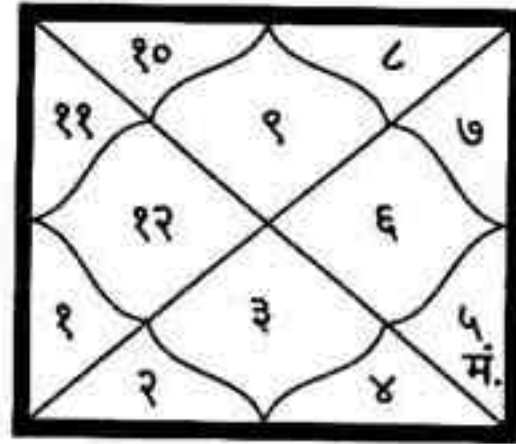
१०२१

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को पिता के सुख की हानि होती है, व्यवसाय में भी नुकसान रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में थोड़ा प्रभाव बढ़ता है, परंतु ऐसा व्यक्ति अपने बुद्धि-बल से किसी बाहरी स्थान में काम करके बहुत सम्मान प्राप्त करता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौंदर्य

धनु लग्न: दशमभाव: मंगल
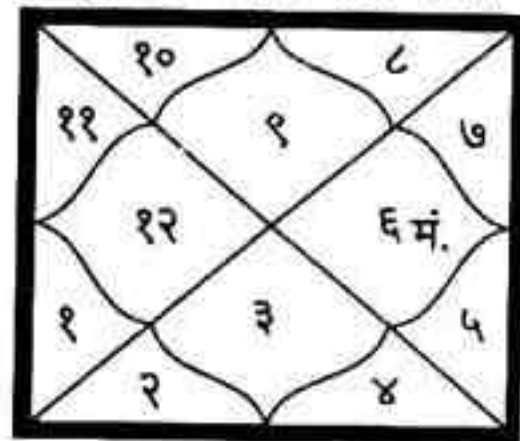
१०२२

में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख भी कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ तो होता है, परंतु विद्या एवं संतान के पक्ष में कुछ कठिनाई भी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः एकादशभावः मंगल

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। उसका खर्च भी अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ परेशानी के साथ लाभ भी होता है। चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय के लिए विशेष श्रम करना पड़ता है तथा कौटुंबिक सुख का भी लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या एवं संतानपक्ष से लाभ होता है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बड़ा प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में जातक को सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।
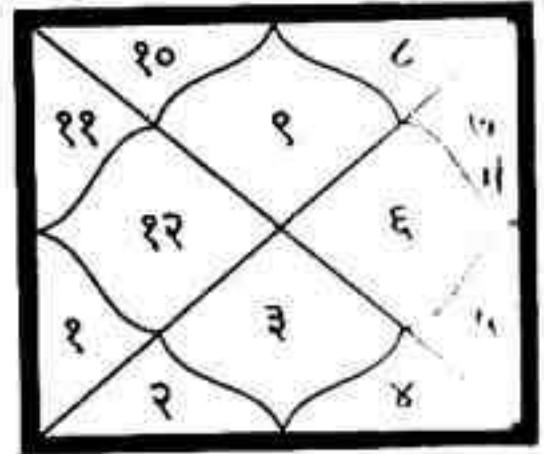
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः द्वादशभावः मंगल

बारहवें व्यय स्थान में अपना ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से बुद्धि-योग द्वारा सफलता मिलती रहती है। परंतु संतान के पक्ष में हानि एवं विद्या के पक्ष में कमजोरी रहती है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से भाई-बहनों से वैमनस्य रहता है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष से संकट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाइयां आती हैं। ऐसा व्यक्ति आत्म बल द्वारा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ उठाता है।
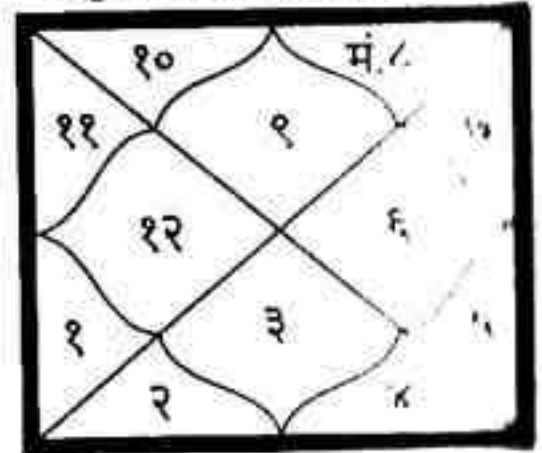
'धनु' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः प्रथमभावः बुध

१०२५

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक शक्ति एवं विवेक शक्ति प्राप्त होती है, साथ ही उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह यशस्वी तथा सम्मानित भी होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को सुंदर स्त्री मिलती है तथा ससुराल से यथेष्ट धन का लाभ होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे पर्याप्त सफलता मिलती है। ऐसा जातक सदैव उमंग और उत्साह से परिपूर्ण, धनी, सुखी तथा यशस्वी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः द्वितीयभावः बुध

१०२६

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन-संचय की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा कौटुंबिक सुख भी मिलता है। उसे पिता द्वारा लाभ, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा भी मिलती है, परंतु स्त्री के सुख में कमी रहती है। यहां से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण तथा ठाट-बाट का रहता है तथा विवेक-बुद्धि द्वारा वह निरंतर उन्नति करता चला जाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ की वृद्धि होती है और उसे भाई-बहनों का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पिता, राज्य, व्यवसाय एवं स्त्री के पक्ष में भी सफलता मिलती है तथा यश और मान की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसा जातक धनी, सुखी धर्मात्मा, यशस्वी एवं हिम्मतवाला होता है।
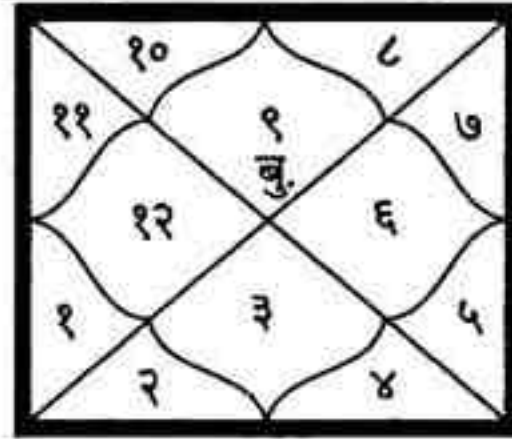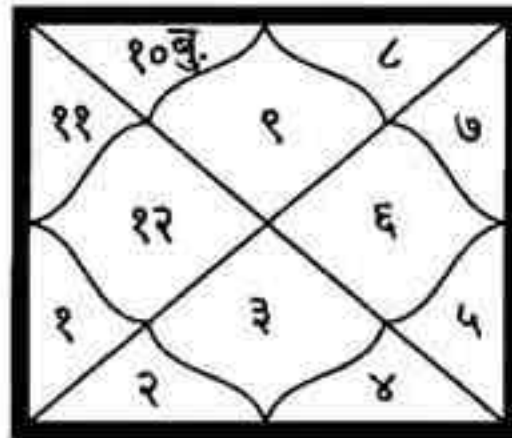
धनु लग्नः तृतीयभावः बुध
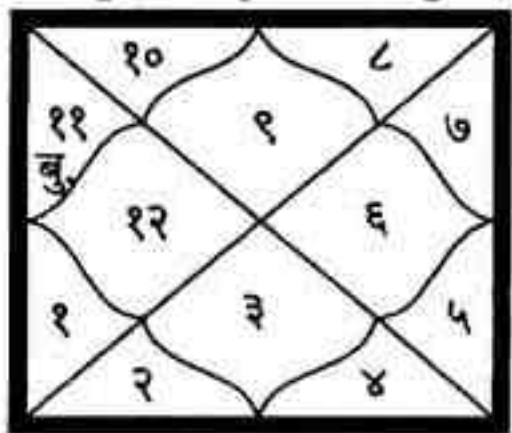
१०२७

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है। साथ ही स्त्री तथा गृहस्थी संबंधी अन्य सुख में कुछ कठिनाइयां आती हैं। यहां से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक कुछ कमी के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता है और अपनी भाग्योन्नति करता है।
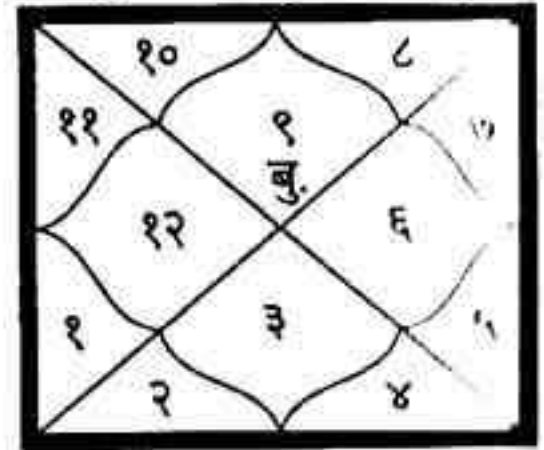
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा संतान का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। इसके साथ ही स्त्री, गृहस्थी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी उन्नति होती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपनी श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति बातचीत करने में बड़ा निपुण, चतुर तथा बुद्धिमान होता है। उसे सर्वत्र यश तथा सम्मान प्राप्त होता रहता है।
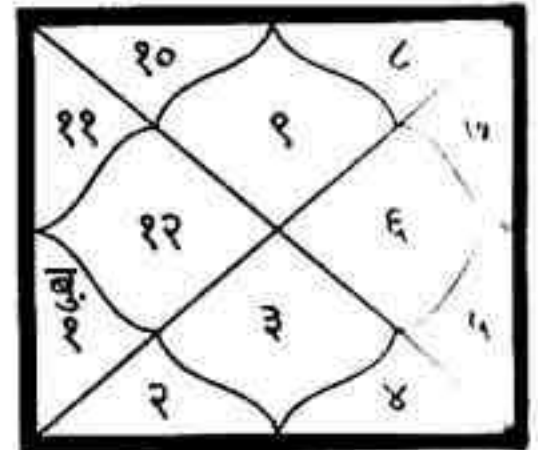
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक बुद्धि द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है। उसे पिता के सुख की कमी रहती है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। राज्य के क्षेत्र से भी उसे असंतोष रहता है, परंतु नाना के पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से जातक को लाभ मिलता रहता है।
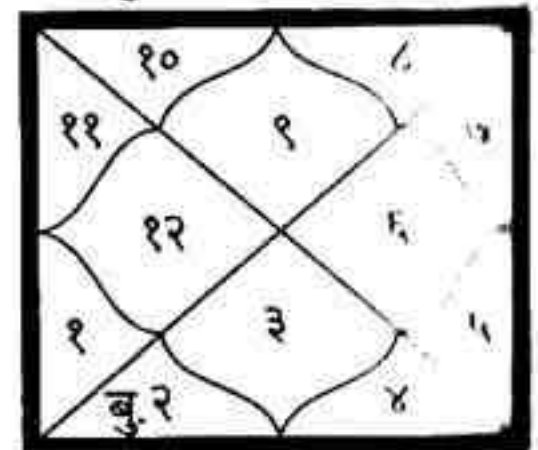
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: सप्तमभाव: बुध

१०३१

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सुंदर स्त्री मिलती है तथा स्त्री पक्ष से लाभ भी होता है। इसी प्रकार वह अपनी विवेक बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। साथ ही पिता एवं राज्य द्वारा भी सहयोग एवं सम्मान मिलता है। वह वैभावशाली तथा यशस्वी होता है और घरेलू सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त करता रहता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह सुखी, यशस्वी, भोगी तथा धनी होता है।
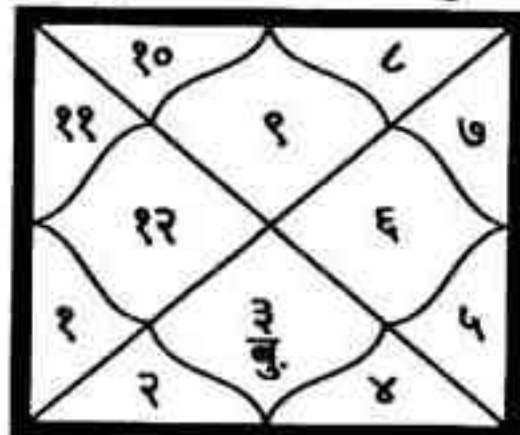
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: अष्टमभाव: बुध

१०३२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। उसकी दिनचर्या ठाट-बाट से पूर्ण बनी रहती है, परंतु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उसे काफी कठिनाइयों और कभी-कभी बड़े घाटे का सामना करना पड़ता है। राजकीय क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन एवं कुटुंब की वृद्धि तथा सुख के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।
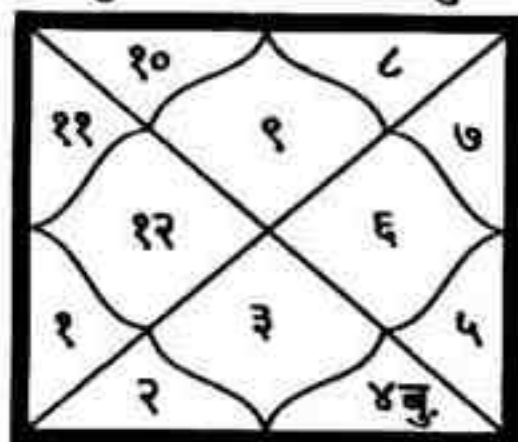
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: नवमभाव: बुध

१०३३

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यवान होता है, साथ ही धार्मिक क्षेत्र में भी उसे उन्नति मिलती है। उसे पिता, स्त्री, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है। वह विवेक-बुद्धि से पर्याप्त यश एवं सम्मान भी अर्जित करता है।
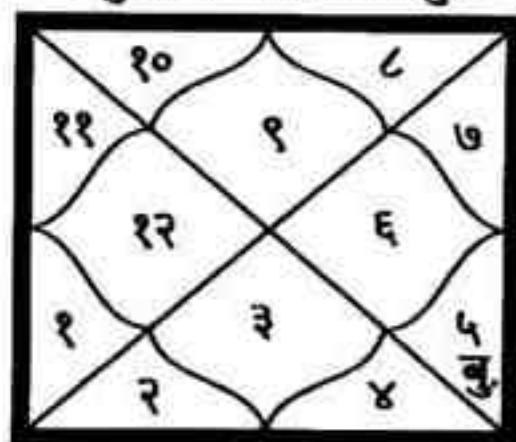
यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में तृतीयभाव को देखता है। अतः जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। वह अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यावसायिक तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करता हुआ जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः दशमभावः ५

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा विशेष सहयोग मिलता है। राजकीय क्षेत्र में सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय में प्रचुर लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति को स्त्री पक्ष तथा गृहस्थी से भी सुख एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। वह वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है तथा यश एवं सम्मान प्राप्त करता रहता है। यहां से बुध अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख में कमी रहती है। साथ ही जन्मभूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कुछ परेशानियां आती हैं।
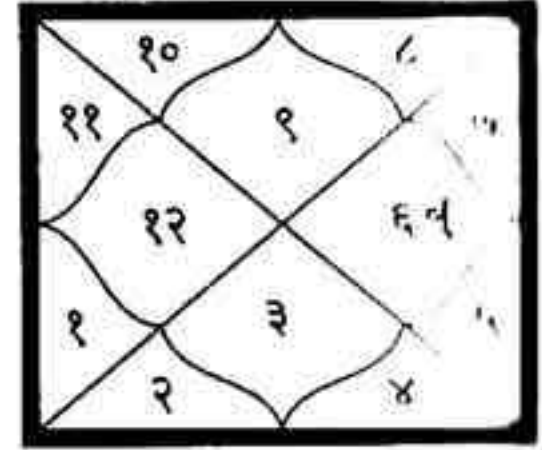
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः एकादशभावः ५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को व्यवसाय द्वारा प्रचुर लाभ प्राप्त होता है। उसे पिता के द्वारा सहयोग, स्त्री के द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा धन तथा यश की खूब वृद्धि करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि खूब प्राप्त होती है तथा संतानपक्ष में भी सुख एवं सफलता मिलती रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा सम्मानित जीवन व्यतीत करता है और उसे प्रशंसा प्राप्त होती रहती है।
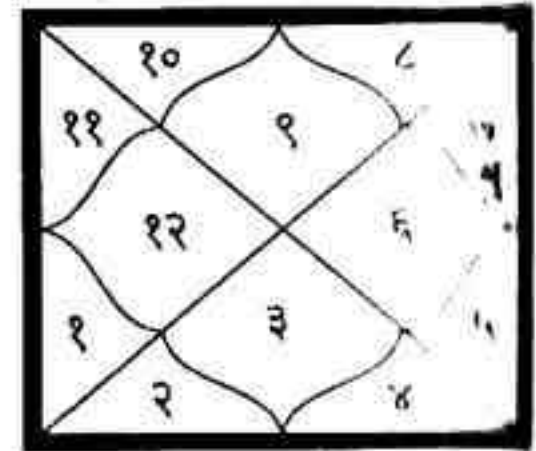
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः द्वादशभावः बुध

१०३६

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता है, परंतु अपने ही स्थान में रहकर व्यवसाय करने से उसे हानि उठानी पड़ती है। स्त्री तथा पिता के सुख की हानि होती है तथा राजकीय क्षेत्र भी लाभदायक नहीं रहता। घरेलू इज्जत की रक्षा करने के लिए भी बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रुपक्ष एवं झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।
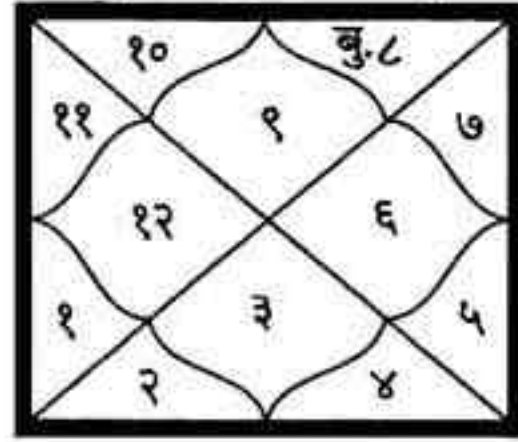
'धनु' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः प्रथमभावः गुरु

१०३७

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से शारीरिक सौंदर्य एवं सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी तथा आनंदी होता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः उसे विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में भी सुख, सफलता एवं निपुणता की प्राप्ति होती है। उसकी वाणी में मधुरता तथा बड़प्पन का आभास मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख भी प्राप्त होता है और नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन होता है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, धर्मात्मा, विद्वान, गुणी, धनी तथा यशस्वी होता है।
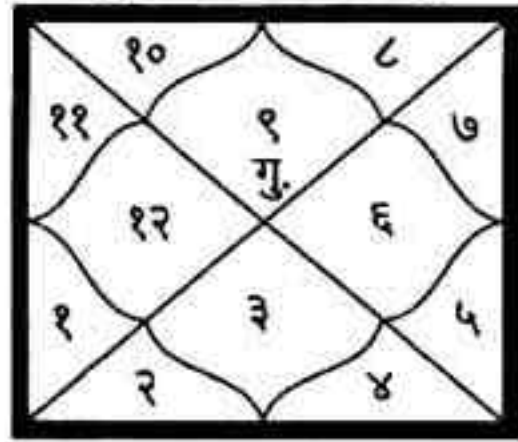
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः द्वितीयभावः गुरु

१०३८

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के धन की हानि होती है तथा कुटुंब पक्ष से परेशानी रहती है। शारीरिक सुख, स्वास्थ्य और सौंदर्य में भी कमी आती है तथा माता एवं भूमि का पक्ष भी कमजोर रहता है। यहां
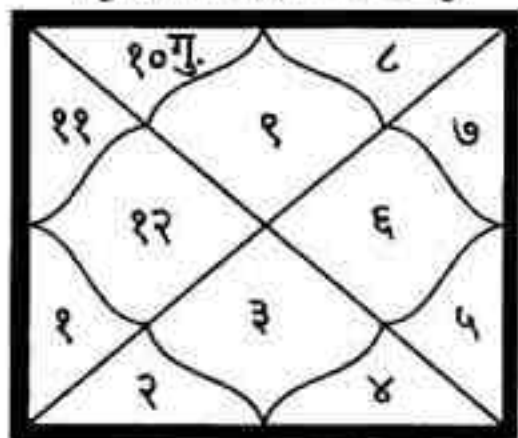
से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में प्रभावशाली होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में बुद्धिमानी से काम निकालता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है और नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, सम्मान, सहयोग तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति उन्नतिशील तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होता है। पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा माता, भूमि एवं मकान का सुख सामान्य रहता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है अतः स्त्री-पक्ष से सुख और सौंदर्य की प्राप्ति होती है एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म-पालन में रुचि रहती है। नवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति कुछ परेशानियों के साथ ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है।

धनु लग्न: तृतीयभाव: गुरु
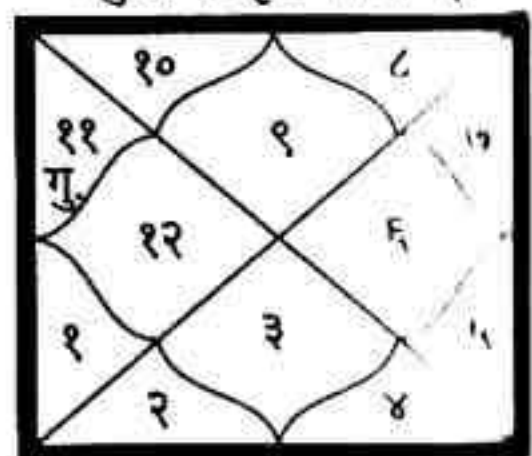
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है। यहां से गुरु पांचवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का विशेष लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता के सुख, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च का संचालन भली-भांति होता रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी लाभ प्राप्त होता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्न: चतुर्थभाव: गुरु
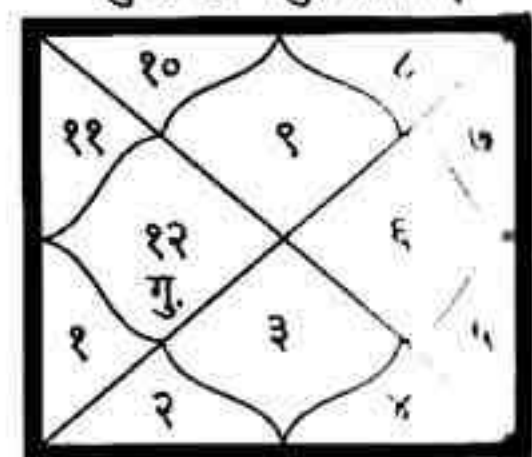
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है तथा संतानपक्ष से भी सुख प्राप्त होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: उसके भाग्य की वृद्धि होती है, धर्म-पालन में रुचि रहती है, साथ ही यश भी प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, भाग्यवान तथा स्वाभिमानी होता है।

धनु लग्न: पंचमभाव: गुरु
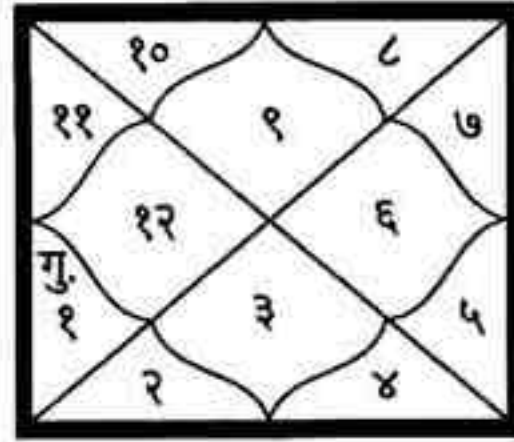
१०४१

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग तथा शत्रु-भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष, झगड़ों एवं रोग आदि के कारण कुछ परेशानियां रहती हैं तथा बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। शारीरिक सुख, स्वास्थ्य एवं सौंदर्य में भी कमी आती है। माता का सुख अल्प रहता है तथा मातृभूमि, मकान आदि से भी विच्छेद हो जाता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, मान, लाभ, सहयोग एवं शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सुख मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक को धन तथा कुटुंब की ओर से चिंता तथा परेशानी बनी रहती है।

धनु लग्न: षष्ठभाव: गुरु
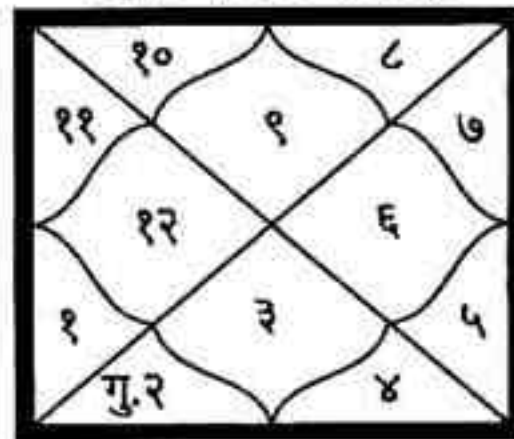
१०४२

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सुख एवं सौंदर्य की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी खूब सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने दैनिक कार्यों का सफलतापूर्वक संचालन करता है तथा सम्मान बना रहता है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी के क्षेत्र में कुछ

धनु लग्न: सप्तमभाव: गुरु
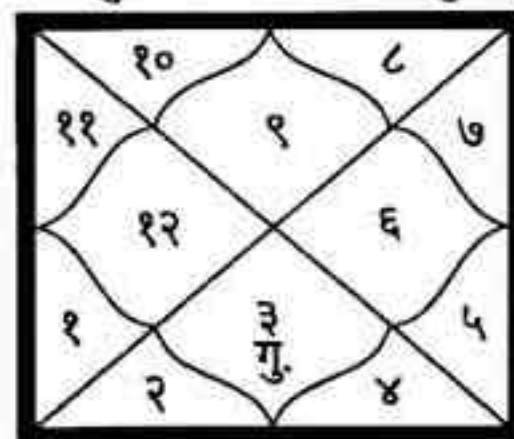
१०४३

असंतोष बना रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से [illegible] सौंदर्य, सरलता एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव [illegible] के कारण भाई-बहन से असंतोष रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि में भी रुकावटें [illegible]

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

धनु लग्न: अष्टमभाव: गु[illegible]

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परंतु शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आ जाती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ मिलता है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में द्वितीयभाव को देखने से धन के संबंध में चिंता बनी रहती है तथा कौटुंबिक सुख में कमी आती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि व मकान आदि का सुख कुछ त्रुटियों के साथ [illegible] तथा घरेलू सुख में कठिनाइयां आती रहती हैं।
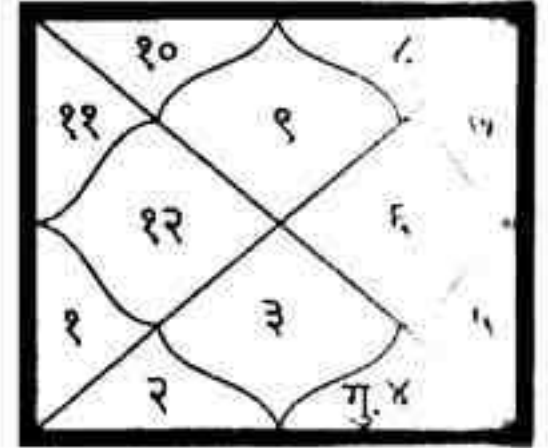
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का भी विधिवत् पालन करता है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं दृष्टि से प्रथमभाव को अपनी ही राशि में देखता है, अत: जातक को शारीरिक सौंदर्य, सुख, स्वास्थ्य एवं यश की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन के सुख में कुछ असंतोष रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि भी रुचिकर रूप में नहीं हो पाती। नवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतानपक्ष [illegible] मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि भी होती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी [illegible] है और वह यशस्वी, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्न: नवमभाव: गु[illegible]
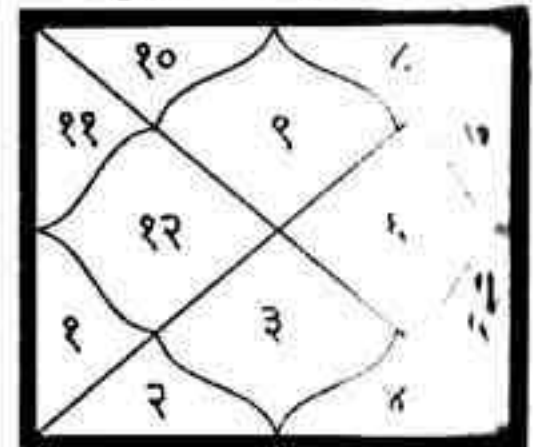
१० ११ ९ १२ १ ३ २

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

धनु लग्नः दशमभावः गुरु

१०४६

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता का सुख, राज्य से प्रतिष्ठा, व्यवसाय में सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शरीर से सुंदर तथा स्वाभिमानी होता है। यहां से गुरु पांचवीं नीच-दृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुंब के पक्ष से असंतोष रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में बड़ी होशियारी से काम लेता है। कुछ कठिनाइयां उठाने के बावजूद भी वह अपने शत्रुओं पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होता है।
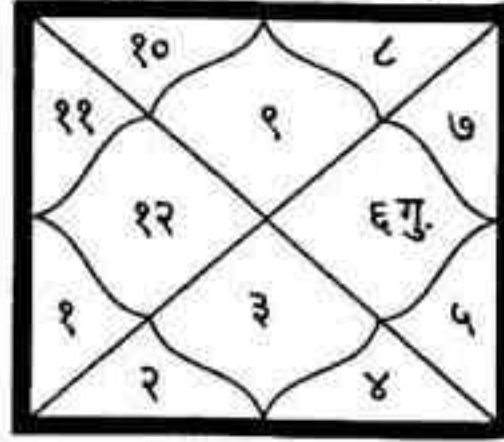
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः एकादशभावः गुरु

१०४७

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा अपनी आमदनी को बढ़ाता है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। धन वृद्धि के लिए वह निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहनों से असंतोष रहता है तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि नहीं हो पाती। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री का सुख तथा व्यवसाय द्वारा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।
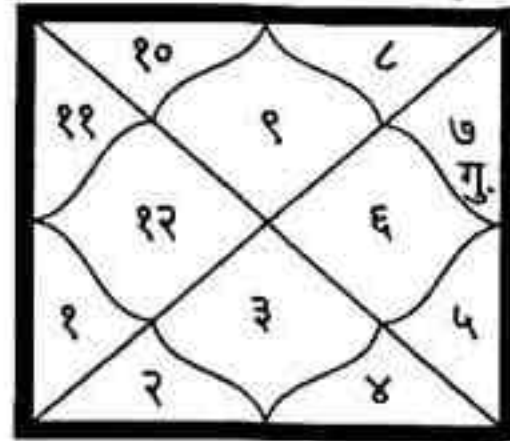
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः द्वादशभावः गुरु

१०४८

बारहवें व्यय-भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से सुख प्राप्त होता है। उसे भ्रमण करना पड़ता है तथा शरीर में कुछ कमजोरी भी बनी रहती है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता,
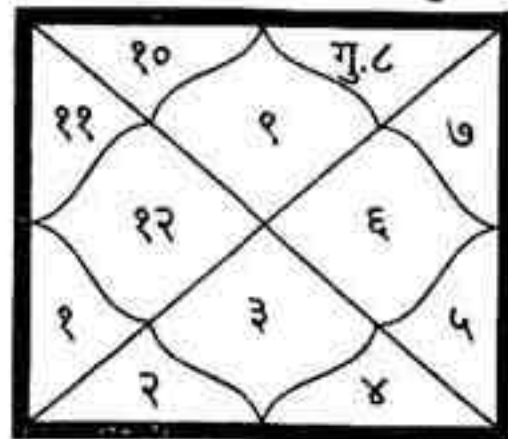
भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से श... में अपनी बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों में शांतिपूर्वक काम ... सफलता पाता है। नवीं उच्चदृष्टि से मित्र चंद्र की राशि में अष्टमभाव को देखने ... जातक की आयु की वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसे ... दैनिक जीवन शानदारी का रहता है।

'धनु' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्न: प्रथमभाव: शुक्र

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है, परंतु वह बड़ा परिश्रमी तथा चतुर होता है, अत: शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है एवं झगड़े-झंझट के मार्ग से लाभ उठाता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को स्त्री द्वारा कुछ मतभेद के साथ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम एवं चातुर्य के द्वारा लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।
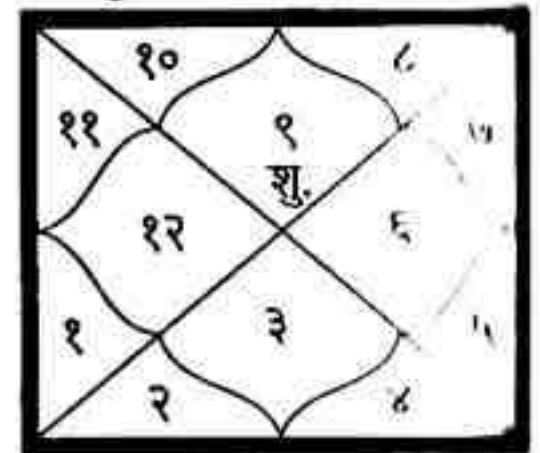
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ धन की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुंब के साथ उसका मतभेद बना रहता है। शत्रु-पक्ष से लाभ उठाने और उस पर प्रभाव जमाने में जातक को सफलता मिलती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली होता है और कठिन परिश्रम द्वारा द्रव्योपार्जन करता है।
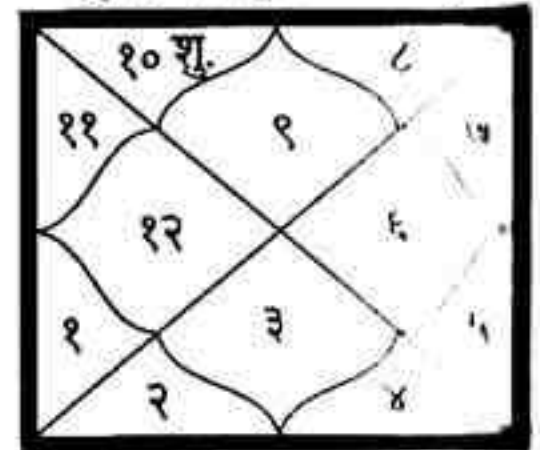
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, पुरुषार्थ द्वारा वह धन भी उपार्जित करता है। भाई-बहनों का सुख कुछ मतभेद के साथ मिलता है तथा शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयां आती हैं तथा धर्म की ओर भी विशेष रुचि नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ को प्रधानता देता है और सामान्यत: सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्न: तृतीयभाव: शुक्र
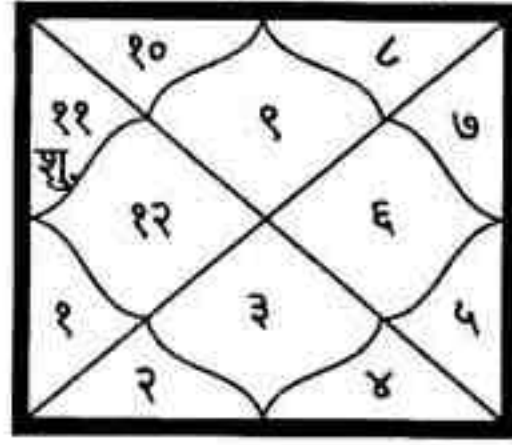
१०५१

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च का शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र बुध की कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता से हानि तथा राजकीय क्षेत्र से असफलता प्राप्त होती है। व्यवसाय की उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने के मार्ग में भी उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

धनु लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र
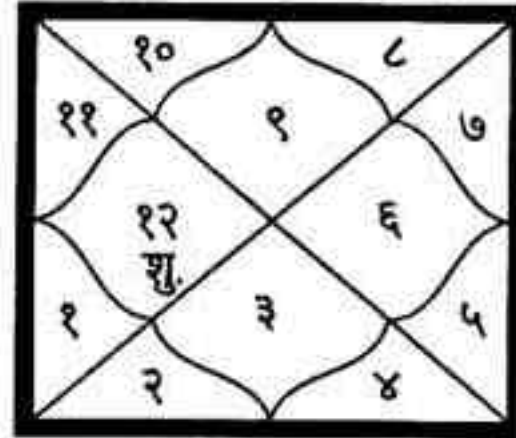
१०५२

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि की प्राप्ति होती है। वाणी की शक्ति, कला एवं चातुर्य का लाभ भी होता है, परंतु संतानपक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में एकादशभाव को देखता है। जातक अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर विजयी होता है तथा झगड़े-झंझट, मुकदमे आदि के द्वारा लाभ उठाता है।

धनु लग्न: पंचमभाव: शुक्र
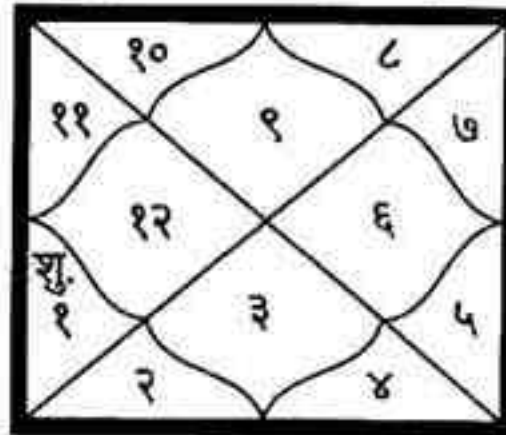
१०५३

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः षष्ठभावः शुक्र

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्रीय शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग से लाभ उठाने वाला होता है। उसे परिश्रम द्वारा धन एवं आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। साथ ही ननिहाल पक्ष से भी लाभ होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से अच्छा लाभ कुछ कठिनाइयों के साथ होता रहता है।
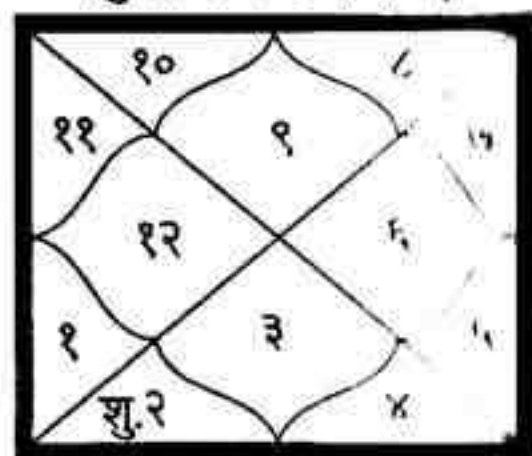
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

धनु लग्नः सप्तमभावः शुक्र

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से कुछ मतभेद के साथ लाभ प्राप्त करता है। इसी प्रकार व्यावसायिक क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त करता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है। उसकी मूत्रेंद्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक दृष्टि से प्रभावशाली रहता है, परंतु आमदनी के क्षेत्र में उसे विशेष परिश्रम एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः अष्टमभावः शुक्र

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ मिलता है। आमदनी के मार्ग में उसे कठिनाइयों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा लाभ मिलता है। शत्रु पक्ष से भी उसे कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है और उसे कुटुंब का सहयोग भी प्राप्त होता है।
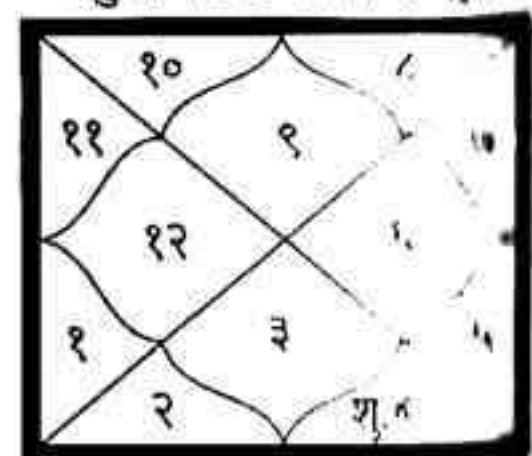
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः नवमभावः शुक्र

१०५७

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपनी भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा धर्म के पक्ष में भी उसे थोड़ी ही श्रद्धा रहती है। वह अपने चातुर्य के बल पर शत्रु पक्ष से लाभ भी उठाता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है, जिसके कारण उसे सफलताएं मिलती रहती हैं और वह भाग्यवान समझा जाता है।
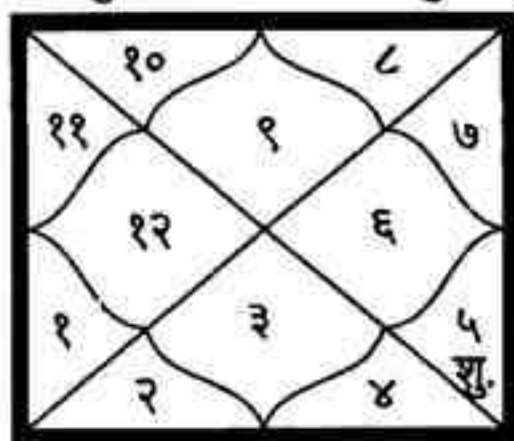
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः दशमभावः शुक्र

१०५८

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से परेशानी, राज्य पक्ष से प्रतिष्ठा में कमी एवं व्यवसाय पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है। उसकी भाग्योन्नति में शत्रु पक्ष के कारण रुकावटें आती हैं, परंतु गुप्त चातुर्य के बल पर वह अपना काम निकालता रहता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं उच्च-दृष्टि से शत्रु गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, जिससे जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है, साथ ही घर के भीतर भी उसका प्रभाव बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः एकादशभावः शुक्र

१०५९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है और उसे शत्रु पक्ष से भी विशेष लाभ मिलता है। झंगड़े-झंझट के मामलों से वह फायदा तो उठाता है, परंतु उसके कारण उसे परेशानियां भी सहनी पड़ती हैं। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। बाद में वह बड़ा चतुर, गुणी तथा विद्वान बन जाता है। उसे संतानपक्ष से भी कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ प्राप्त होता रहता है।
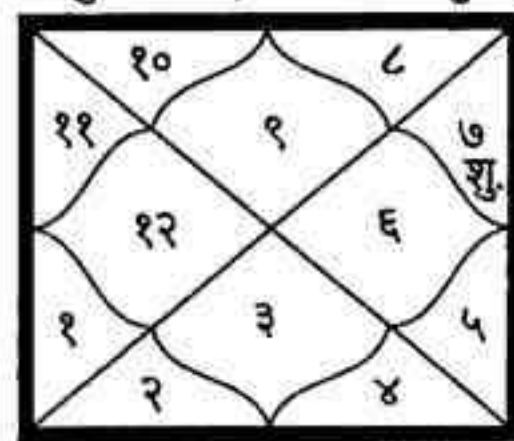
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता रहता है। उसे झगड़े-झंझटों के कारण कुछ परेशानी भी उठानी पड़ती है, परंतु अपने गुप्त चातुर्य के बल पर वह उससे भी लाभ उठा लेता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

धनु लग्न: द्वादशभाव: शुक्र
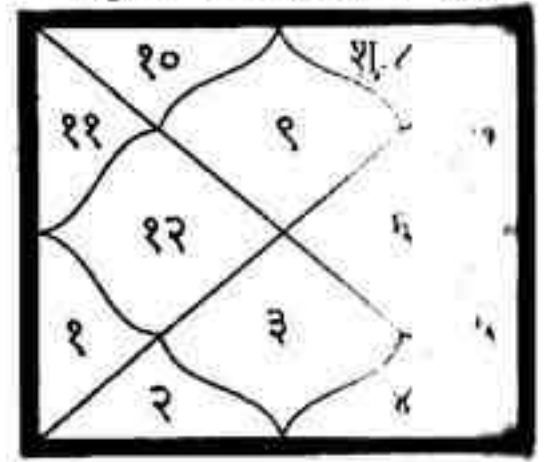
'धनु' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: प्रथमभाव: शनि

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौंदर्य में कुछ कमी बनी रहती है। वह शारीरिक श्रम से धन तथा कुटुंब की शक्ति प्राप्त करता है। यहां से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः उसे भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख एवं शक्ति प्राप्त होती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से सुख, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।
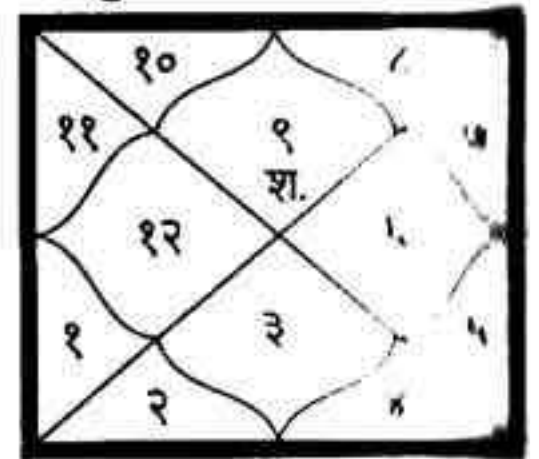
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: द्वितीयभाव: शनि

१० श. ११ ९ १२ १ ३ २

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब का सुख प्राप्त होता है, परंतु भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने
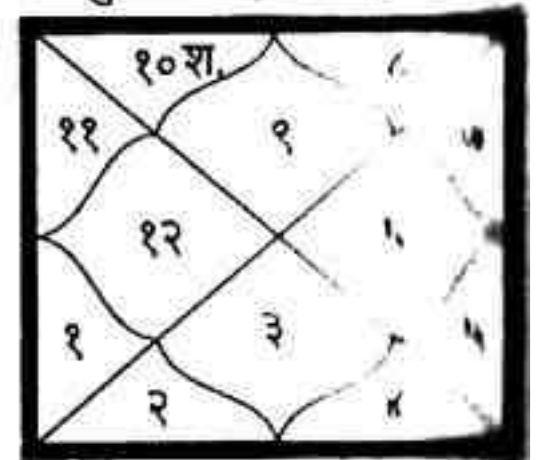
के कारण आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है और कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ भी होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः तृतीयभावः शनि

१०६३

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही कुंभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख कुछ त्रुटिपूर्ण बना रहता है। यहां से शनि तीसरी नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः संतानपक्ष से कष्ट का अनुभव होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा यश की उन्नति में कमी आती है तथा धर्म पर श्रद्धा भी कम रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी अधिक अच्छा नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता तथा धन कमाता है।
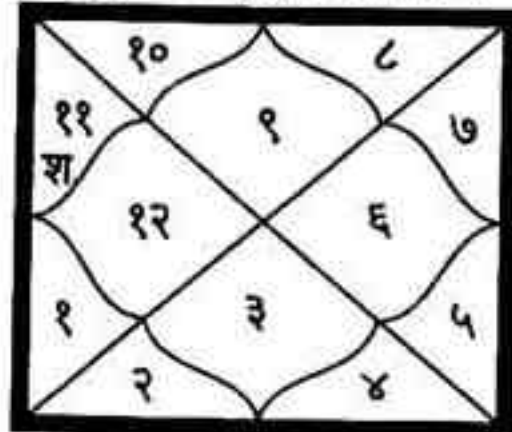
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः चतुर्थभावः शनि

१०६४

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई-बहन एवं कुटुंब का सुख भी संतोषजनक नहीं रहता। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक का शत्रु पक्ष पर बड़ा प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा, सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा घरेलू सुख में भी विघ्न आते रहते हैं।
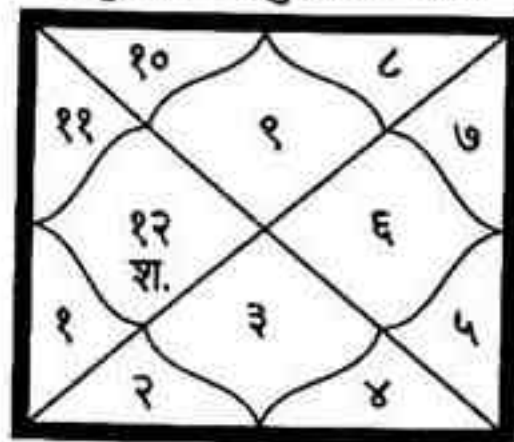
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति वार्तालाप करने में रूखा तथा मन में छिपाव रखने वाला होता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा परिश्रम के द्वारा विशेष लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने में कारण कुटुंब तथा धन-संचय के लिए शनि विशेष चिंतित बना रहता है और गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर कुछ सफलता भी पाता है।

धनु लग्न: पंचमभाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। उसका भाई-बहन एवं कुटुंब से कुछ विरोध रहता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु की शक्ति में तो वृद्धि होती है, परंतु पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से मंगल राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी हानि भी होती है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन की शक्ति तो मिलती है परंतु उनसे वैमनस्य रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखने वाला, बहादुर तथा हिम्मतवाला होता है।

धनु लग्न: षष्ठभाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक व्यवसाय द्वारा खूब धन कमाता है तथा स्त्री पक्ष से भी उसे शक्ति मिलती है, परंतु स्त्री द्वारा सुख थोड़ा ही मिलता है। भाई-बहनों से अच्छा संपर्क रहता है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: भाग्योन्नति में रुकावटें पड़ती हैं तथा धर्म के मामले में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से

धनु लग्न: सप्तमभाव: शनि
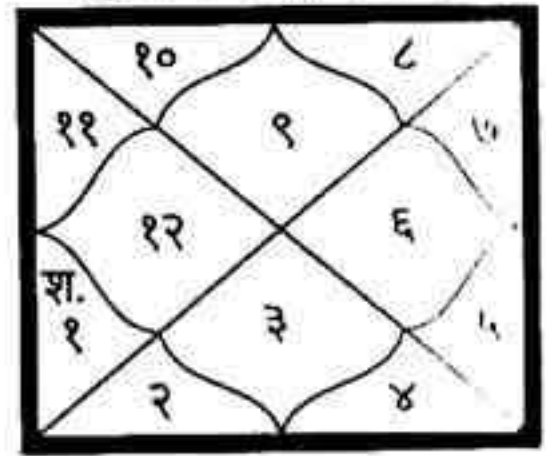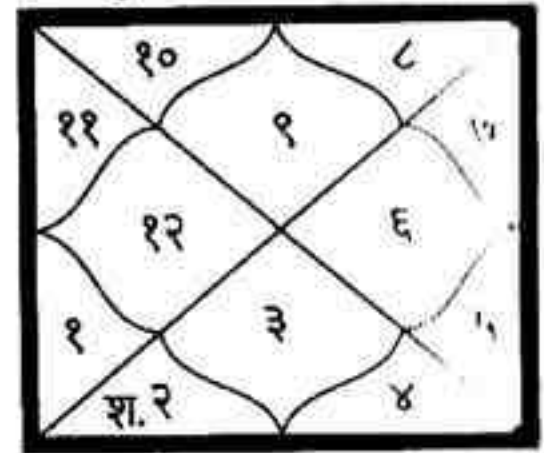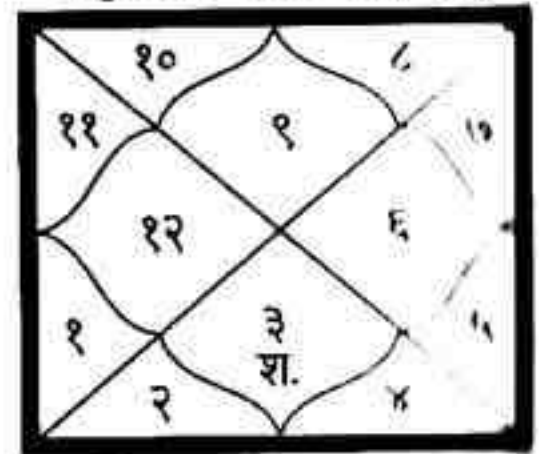
शरीर में कुछ कष्ट रहता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में कमी आती है और भूमि, मकान आदि का सुख भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होता है। जातक को स्थान परिवर्तन भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: अष्टमभाव: शनि

१०६८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। परंतु दैनिक जीवन का सुख, धन के संचय तथा भाई-बहन के सुख में कमी बनी रहती है और धन-प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता से सहयोग, राज्य से मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-कुटुंब का सामान्य सुख मिलता है तथा दसवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने के करण विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कमजोरी बनी रहती है।
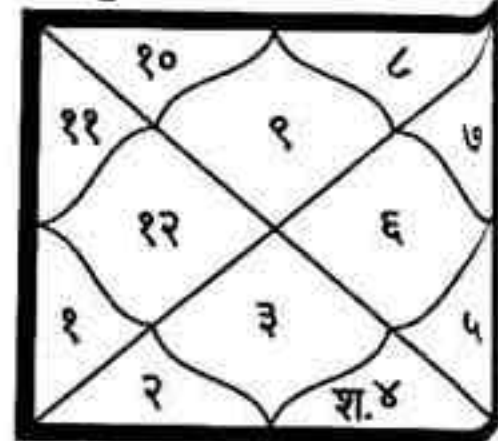
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: नवमभाव: शनि

१०६९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति एवं धर्म पालन में बाधाएं आती हैं एवं धन तथा कुटुंब का सामान्य सुख प्राप्त है। यहां से शनि तीसरी उच्च-दृष्टि से मित्र की राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ भी हो जाता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक का शत्रु-पक्ष में अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझट के मार्गों से उसे लाभ प्राप्त होता है।
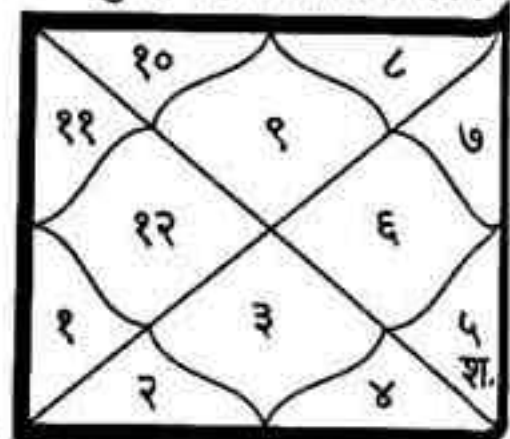
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है। वह समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। उसे भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के संबंध भी असंतोषजनक रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष [illegible] मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है।

धनु लग्न: दशमभाव: श[illegible]
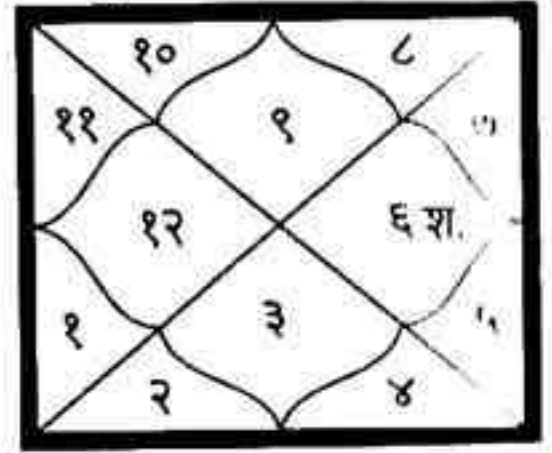
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादश[illegible]' [illegible] 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

धनु लग्न: एकादशभाव: श[illegible]

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक धन का लाभ भी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को कुटुंब तथा भाई-बहन का सुख भी मिलता है एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आ जाती है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में पंचमभाव को देखने से संतान से कष्ट रहता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी प्राप्त होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परंतु दैनिक [illegible] परेशानियों का अनुभव होता रहता है।
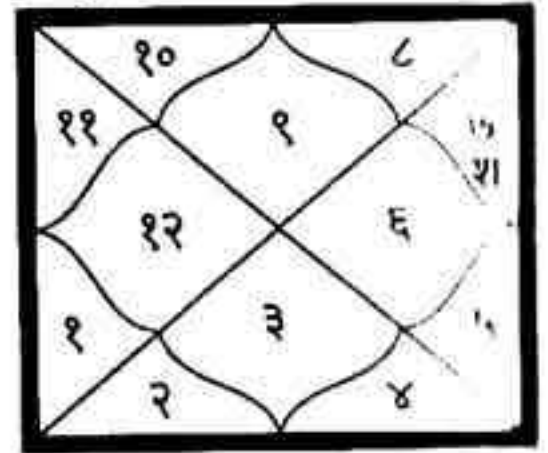
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में '[illegible]' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: द्वादशभाव: श[illegible]

बारहवें व्यय भाव में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ असंतोषपूर्ण लाभ होता है। साथ ही धन, कुटुंब तथा भाई-बहन के सुख में भी कमी रहती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: धन तथा कुटुंब की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से
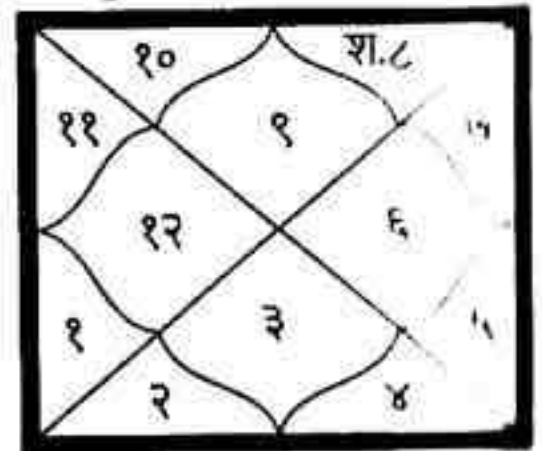
षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष पर प्रभाव बनाए रखता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर लाभ उठाता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति कठिनाइयों के साथ होती है तथा धर्म का पालन भी कम हो पाता है।

'धनु' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: प्रथमभाव: राहु

१०७३

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनुराशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य पर भी कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के बल पर उन्नति करता है। परंतु उन्नति एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। कभी-कभी उसे कठिन शारीरिक कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा जातक देखने में सज्जन लगता है, परंतु भीतर से चालाक होता है। उसके मन में चिंताओं का निवास भी बना रहता है।
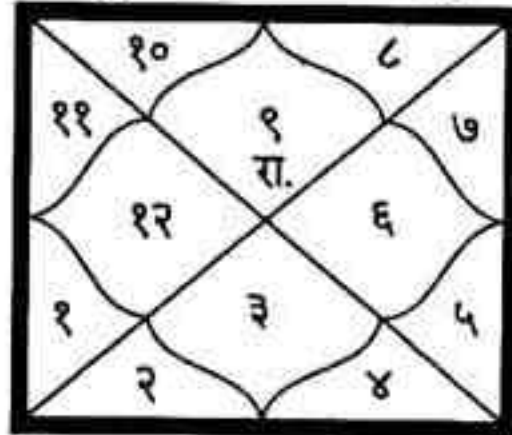
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: द्वितीयभाव: राहु

१०७४

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा उसके कौटुंबिक सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने कुटुंब अथवा धन के कारणों से कभी-कभी घोर संकटों का शिकार बन जाता है। वह अक्सर ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं परिश्रम के बल पर कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है।
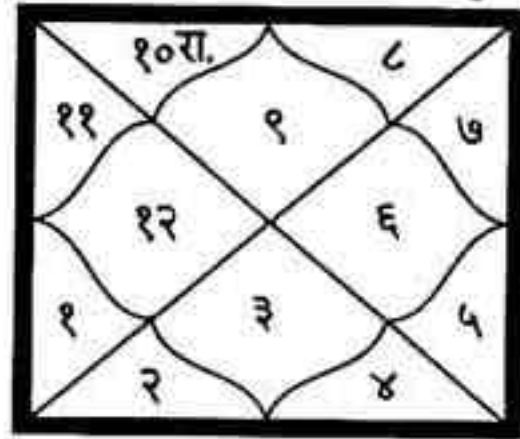
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: तृतीयभाव: राहु

१०७५

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। गुप्त युक्तियों तथा चतुराई के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए वह अत्यधिक परिश्रम भी करता है। परंतु कभी-कभी घोर संकटों का
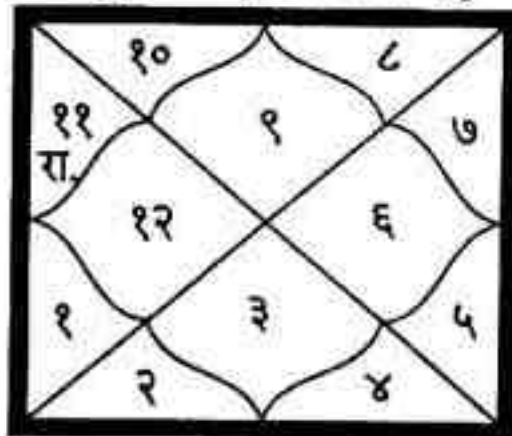
सामना भी करता है। वह इतना धैर्यवान होता है कि संकटों को चुपचाप पार कर [illegible] घबराता नहीं है। ऐसे व्यक्ति का भाई-बहनों के साथ सुखपूर्ण संबंध नहीं रहता। [illegible] उसे कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' [illegible] की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बहुत कमी रहती है तथा घर में भी संकट का वातावरण बना रहता है, जिसे वह बड़ी चतुराई, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर निपटाता है, फिर भी उसे कभी-कभी घोर मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। उसे भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त नहीं होता। अशांति उसके चारों ओर मंडराती रहती है।
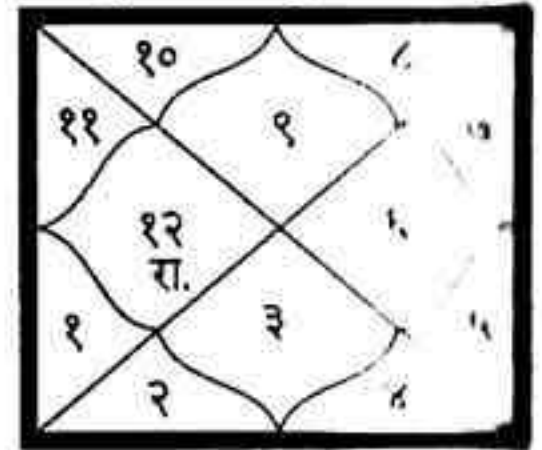
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश [illegible] अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा चिंताएं बनी रहती हैं। विद्या प्राप्त करने में भी उसे बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं और बड़े परिश्रम, धैर्य तथा हिम्मत के साथ काम लेने पर वह थोड़ी-बहुत विद्या सीख पाता है। उसकी बोली में रूखापन रहता है तथा गुप्त युक्ति एवं चातुर्य के बल पर वह अपना काम चलाता है। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार की चिंताएं घर किए रहती हैं।
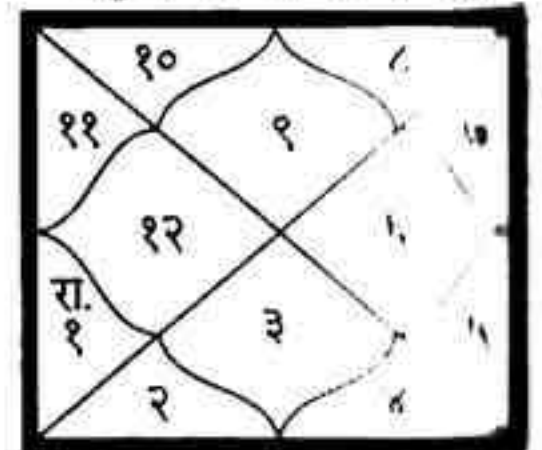
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' [illegible] की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखता है। वह अपनी बुद्धि, चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा धैर्यवान होता है। वह मामा के पक्ष को कुछ हानि पहुंचाता है, साथ ही मन के भीतर किसी-न-किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव भी करता रहता है।
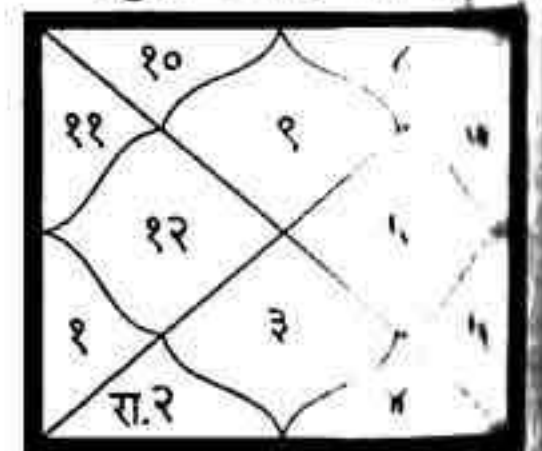
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: सप्तमभाव: राहु

१०७९

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च की राहु के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से विशेष शक्ति प्राप्त करता है। उसके एक से अधिक विवाह होने की संभावना रहती है। वह अपने व्यवसाय की वृद्धि के लिए अनेक प्रकार के उपाय, साधन एवं चतुराइयों का सहारा लेता है। कभी-कभी उसके गृहस्थी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां भी आती हैं परंतु उनसे वह बहुत जल्दी छुटकारा पा लेता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।
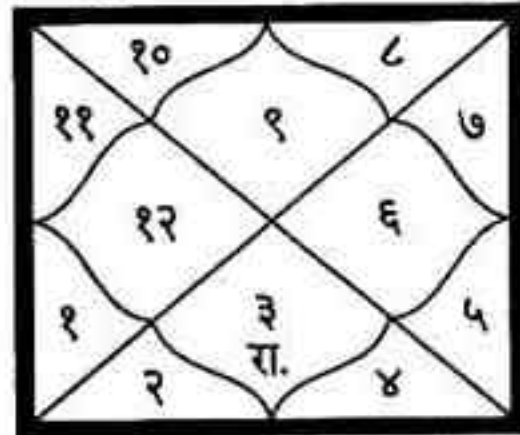
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: अष्टमभाव: राहु

१०८०

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के पक्ष में कई बार संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी मृत्यु-तुल्य स्थिति भी बन जाती है। उसके पेट में विकार रहता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की हानि भी होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के आश्रय से अपने जीवन को चलाता है। परंतु उसे परेशानियां घेरे ही रहती हैं और उसे जीवन भर संघर्ष करना पड़ता है।
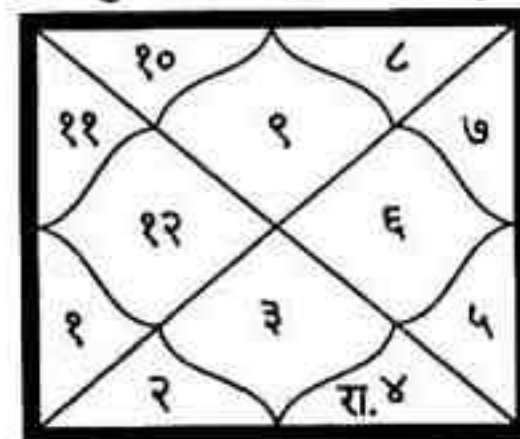
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्न: नवमभाव: राहु

१०८१

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में प्राय: घोर संकट आते रहते हैं तथा कभी-कभी बड़ी हानियों का शिकार भी होना पड़ता है। धर्म के मामले में भी उसकी अधिक निष्ठा नहीं होती। ऐसे लोग प्राय: अधार्मिक अथवा अनीश्वरवादी भी होते हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। वह कभी हिम्मत नहीं हारता और अधिकाधिक परिश्रम करने से भी नहीं घबराता।
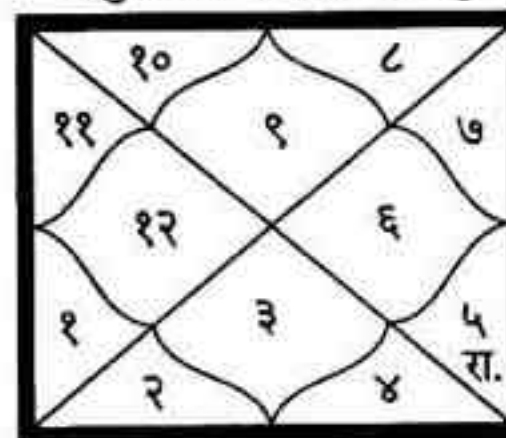
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा परेशानी, राज्य द्वारा संकट तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, बुद्धिबल, चातुर्य एवं हिम्मत के बल पर उन्नति करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है, परंतु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती। वह सदैव चिंतित भी रहता है और कभी-कभी घोर संकटों में भी फंस जाता है।
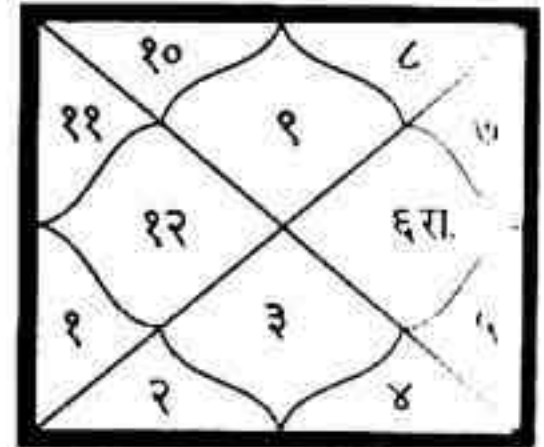
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अपनी चतुराई एवं बुद्धिबल से अधिक लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसकी आमदनी के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयां आ जाती हैं, परंतु उस समय भी वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता और हिम्मत से काम लेकर उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। संक्षेप में ऐसा व्यक्ति धनोपार्जन खूब करता है और समाज में धनी समझा जाता है।
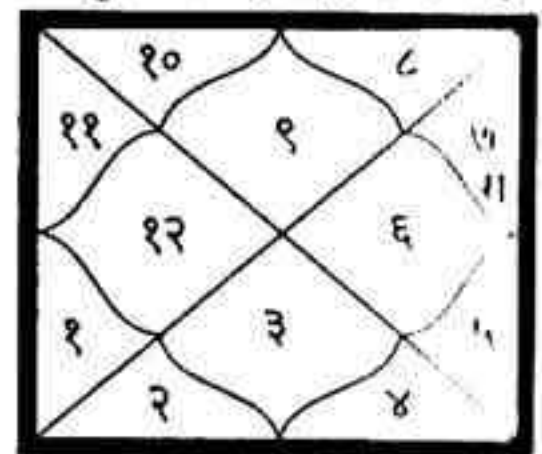
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण चिंता, परेशानी एवं झंझटों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कष्ट का अनुभव होता है, परंतु ऐसा व्यक्ति हिम्मत, धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है और संकट के समय में भी घबराता नहीं है।
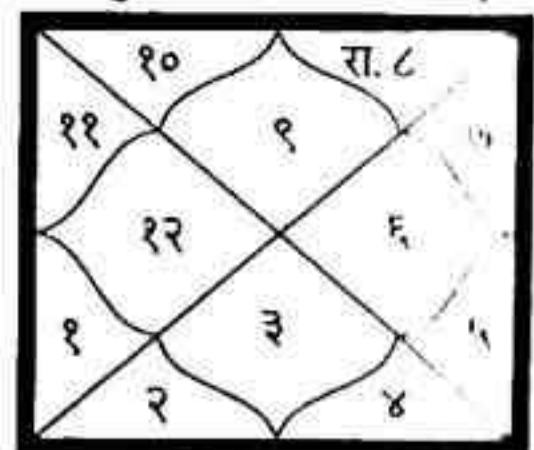
'धनु' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं आकार में वृद्धि होती है। वह बड़ा बहादुर, हिम्मतवाला, जिद्दी तथा हठी स्वभाव का होता है, परंतु उसके शारीरिक सौंदर्य में कमी अवश्य आ जाती है। वह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा मन के भीतर चिंतित बने रहने पर भी वह किसी के सामने अपनी चिंताओं को प्रकट नहीं करता।

धनु लग्न: प्रथमभाव: केतु

१०८५

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु ' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को कौटुंबिक सुख में कमी बनी रहती है और कोई-न-कोई क्लेश उठ खड़ा होता है। वह धन प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करता है, परंतु कभी-कभी उसे धन के विषय में भी संकटों का सामना करना होता है और ऋण लेकर भी अपना काम चलाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान तथा हिम्मती होता है।

धनु लग्न: द्वितीयभाव: केतु

१०८६

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के सुख में कुछ कमी एवं कष्ट का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का धैर्य एवं साहस के साथ मुकाबला करता है। वह गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा कठिन परिश्रम द्वारा अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है।

धनु लग्न: तृतीयभाव: केतु

१०८७

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के
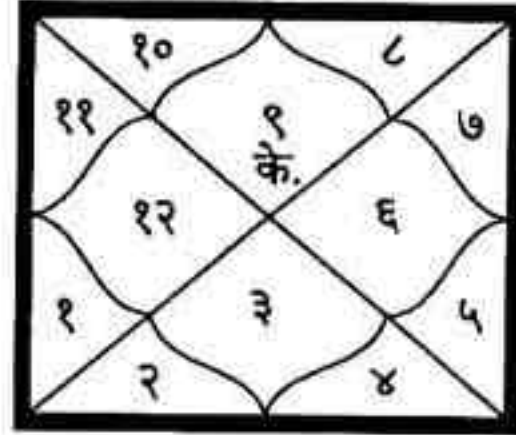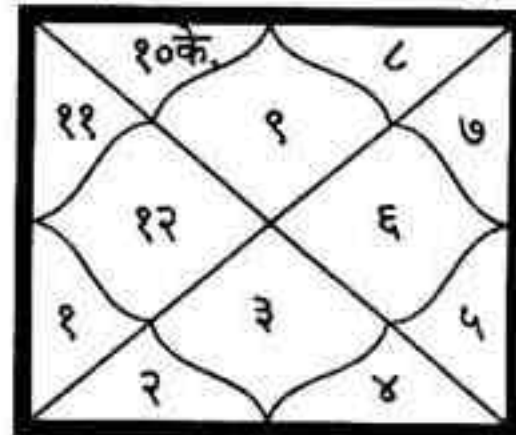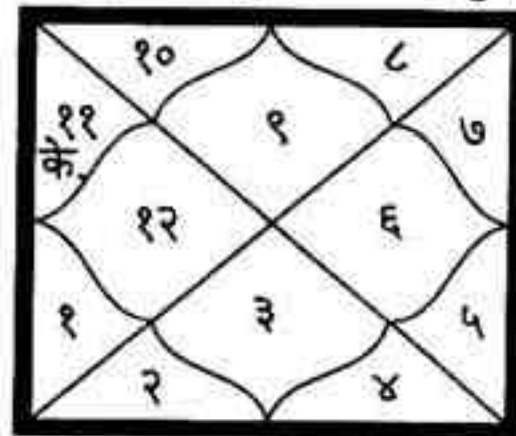
प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी हानि उठानी पड़ती है। साथ ही उसे मातृभूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है। उसे भूमि तथा मकान आदि का सुख भी प्राप्त नहीं होता। घरेलू संकट भी उसको घेरे रहते हैं। परंतु ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, गुप्त धैर्यवान, संतोषी तथा परिश्रमी होता है, अतः वह सुख-प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है और अंत में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

धनु लग्नः चतुर्थभावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि तथा संतान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से बड़ी हानि उठानी पड़ती है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद बहुत थोड़ी सफलता मिल पाती है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम करने वाला, जिद्दी तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। उसके मस्तिष्क में हर समय चिंताओं का निवास रहता है, परंतु वह अपनी परेशानियों को किसी के सामने प्रकट नहीं करता।

धनु लग्नः पंचमभावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट, मुकदमे आदि में विजय, सफलता एवं लाभ प्राप्त करता है। वह गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं चतुराई के बल पर अपनी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। शत्रु पक्ष द्वारा महान संकटों में डाल दिए जाने पर भी वह अपनी हिम्मत और बहादुरी को नहीं छोड़ता।

धनु लग्नः षष्ठभावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में विशेष हानि अथवा कठिनाई का सामना करना पड़ता है, साथ ही उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी बड़ी परेशानियां

धनु लग्नः सप्तमभावः केतु
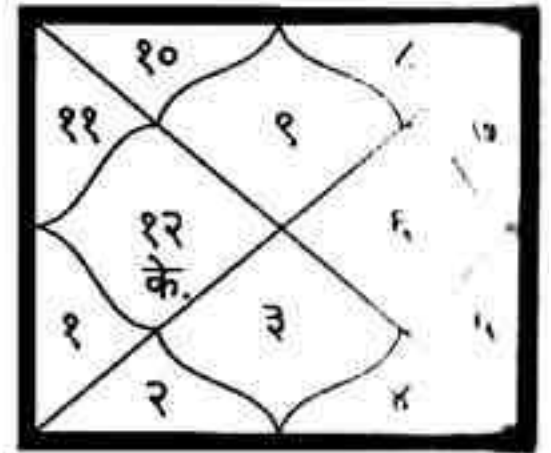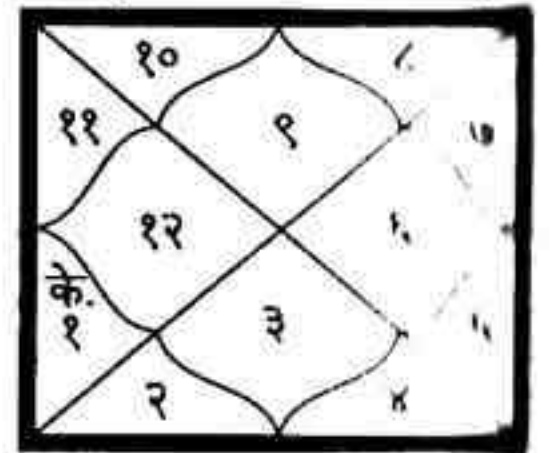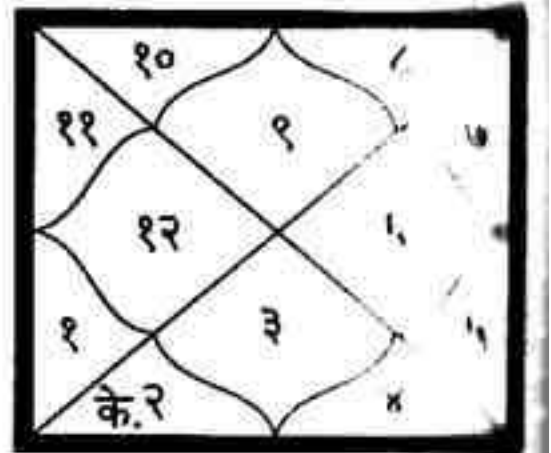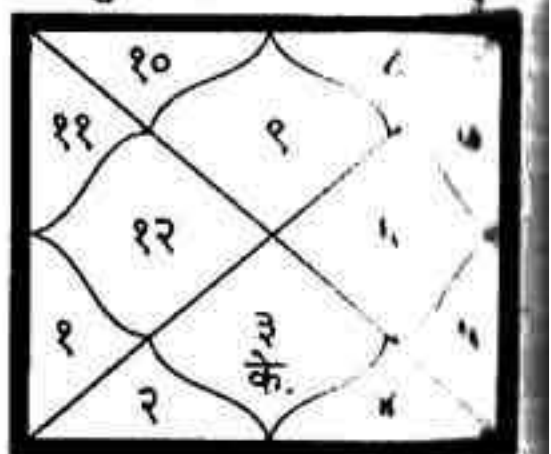
उठानी पड़ती हैं। कभी-कभी घर तथा व्यवसाय के क्षेत्र में घोर संकट उठ खड़े होते हैं, परंतु वह हर बार धैर्य एवं साहस के साथ उनका मुकाबला करता है। वह परिश्रम तथा युक्ति-बल से अपने गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करता रहता है, परंतु उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः अष्टमभावः केतु

१०९२

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के जीवन (आयु) पर बड़े-बड़े संकट आते हैं और उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट उठाना पड़ता है। उसके पेट में विकार रहता है तथा दैनिक जीवन में भी अनेक प्रकार की परेशानियां बनी रहती हैं। उसकी पुरातत्त्व शक्ति को हानि पहुंचती है तथा और भी अनेक प्रकार के संकट उपस्थित होते रहते हैं। वह अपने जीवन को चलाने के लिए गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम का सहारा लेता है, परंतु उसे सुख नहीं मिल पाता।
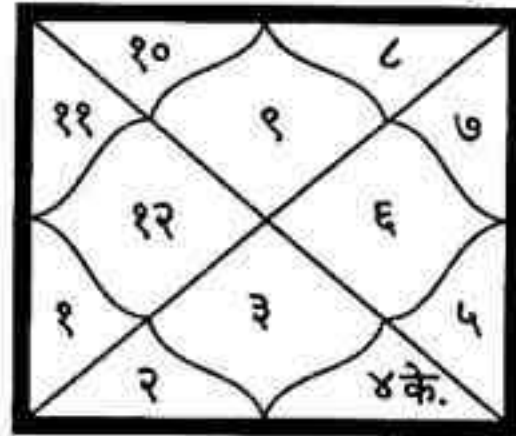
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः नवमभावः केतु

१०९३

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़ी-बड़ी बांधाएं आती रहती हैं। वह उन्हें हटाने के लिए घोर परिश्रम, गुप्त युक्ति-बल, साहस तथा धैर्य का आश्रय लेता है, फिर भी उसका भाग्य दुर्बल ही बना रहता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर पर भी कम ही विश्वास करता है। वह प्रायः असफलताओं से जूझता है तथा गुप्त चिंताओं से ग्रस्त बना रहता है। उसके यश में भी कमी आ जाती है। उसका संपूर्ण जीवन संघर्ष करते हुए बीतता है।
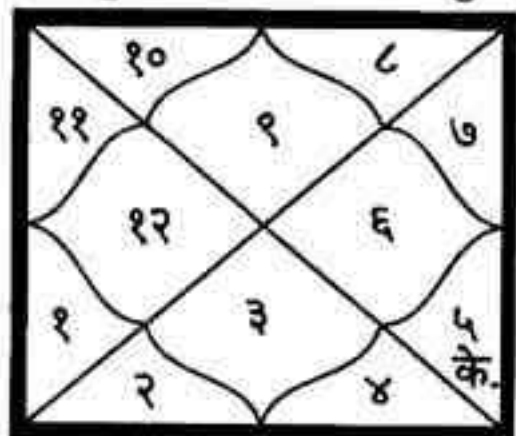
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनु लग्नः दशमभावः केतु

१०९४

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है तथा अत्यधिक परिश्रम करने एवं युक्ति-बल का आश्रय लेने पर भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, हिम्मत एवं परिश्रम के योग से कुछ समय बाद सामान्य सफलता प्राप्त कर लेता है, परंतु वह अधिक धनी, सुखी अथवा यशस्वी नहीं बन पाता।
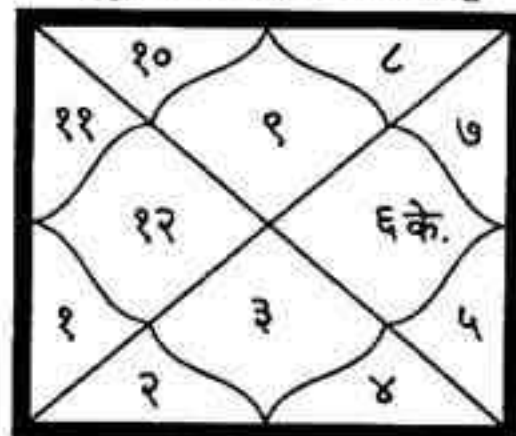
धनु लग्नः एकादशभाव केतु

१०९५

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। वह कठोर परिश्रम द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसके सामने कठिनाइयां एवं संकट भी उपस्थित हो जाते हैं, परंतु अपनी गुप्त युक्तियों, बुद्धि तथा परिश्रम के बल पर उन मुसीबतों पर विजय प्राप्त कर लेता है। इतना सब होने पर भी उसे पूर्ण संतोषजनक लाभ नहीं मिल पाता।

धनु लग्नः द्वादशभाव केतु

१०९६

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे बहुत परेशानी उठानी पड़ती है तथा कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पडता है। बाहरी स्थानों के संबंध से भी परेशानियां प्राप्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, हिम्मत, बुद्धि-बल एवं परिश्रम का आश्रय लेकर कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है, परंतु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती।
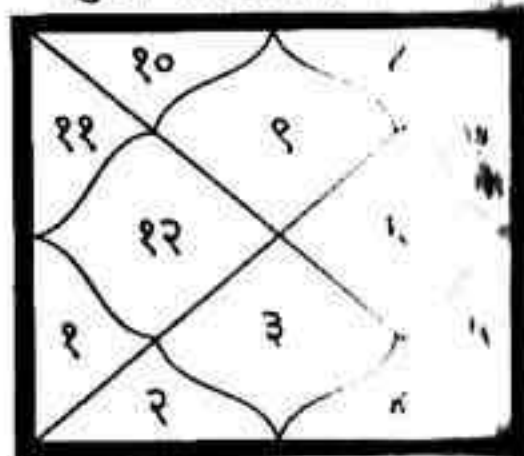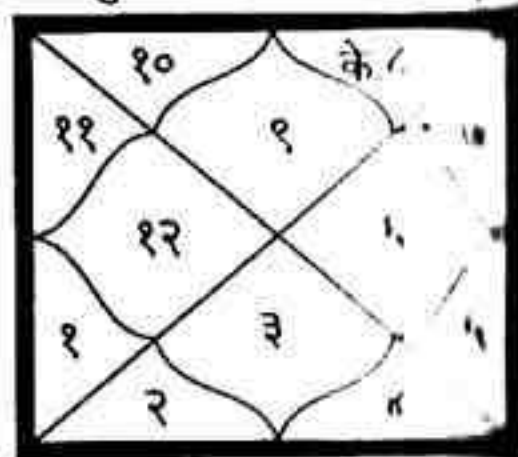
'धनु' लग्न का फलादेश समाप्त
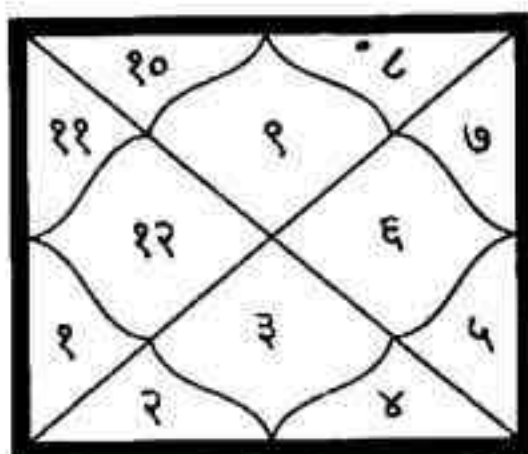
१०९७

मकर लग्न
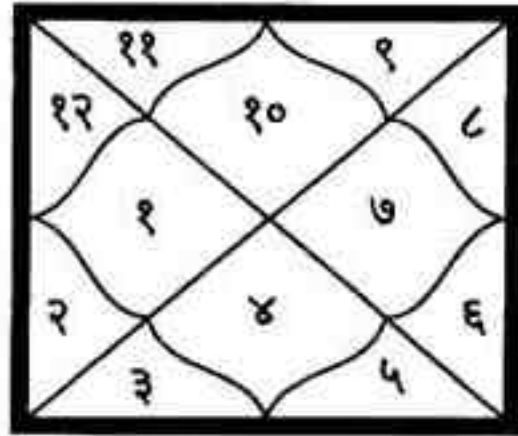
मकर लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है। धर्म-पालन में त्रुटि बनी रहती है तथा यश भी कम ही मिल पाता है, परंतु आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है, जिसके कारण जातक भाग्यवानों जैसा जीवन व्यतीत करता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ परेशानी बनी रहती है तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं हो पाती।

मकर लग्न: नवमभाव: सूर्य

११ ९ १२ १० ८ १ ७ ६ २ ४ सू. ३ ५
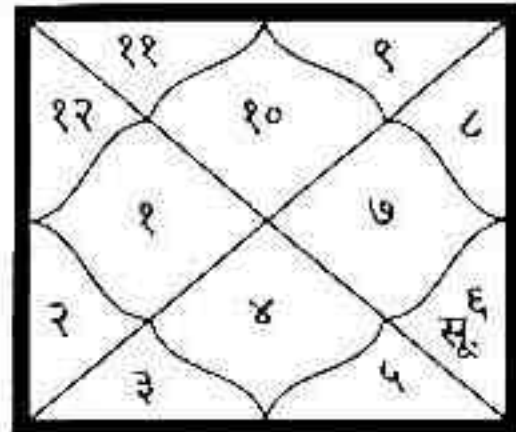
११०८

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु की तुला राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता के संबंध में घोर कष्ट उठाना पड़ता है। राज्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा में कमी आती है तथा व्यवसाय की उन्नति में भी बाधाएं उपस्थित होती रहती हैं। इसके साथ ही जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी कुछ ह्रास होता है। यहां से जातक अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

मकर लग्न: दशमभाव: सूर्य
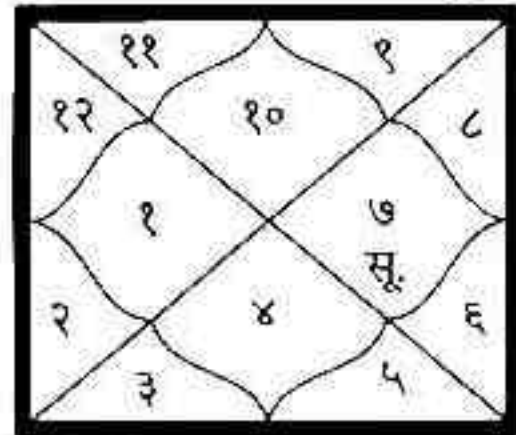
११०९

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है, परंतु सूर्य के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती रहती हैं। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का विशेष लाभ होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतानपक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति के दिमाग में कुछ तेजी रहती है, अतः उसका स्वभाव उग्र रहता है।

मकर लग्न: एकादशभाव: सूर्य
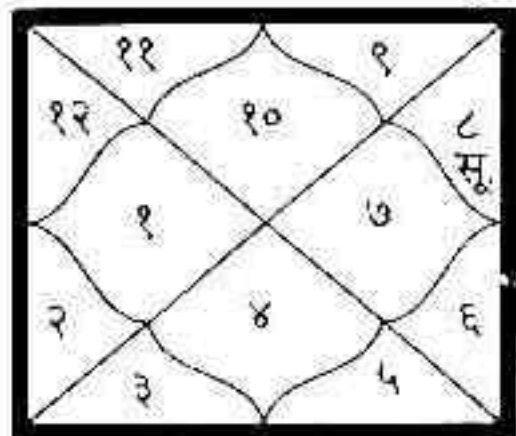
१११०

'मकर' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'मकर' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति संतोषी, भीरु, उग्र स्वभाव का, निरंतर पुरुषार्थ करने वाला, वंचक, बड़े नेत्रों वाला, शठ, मनमौजी, अधिक संततिवान, चतुर, लोभी, कफ तथा वायु से पीड़ित रहने वाला, लंबे शरीर वाला, ठग, तमोगुणी, पाखंडी, आलसी, खर्चीला, धर्म के विमुख आचरण करने वाला, स्त्रियों में आसक्त, कवि तथा लज्जा-रहित होता है। वह अपनी प्रारंभिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दु:खी रहता है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अंत तक सुखी रहता है। मकर लग्न वाला व्यक्ति पूर्णायु प्राप्त करता है।

'मकर' लग्न
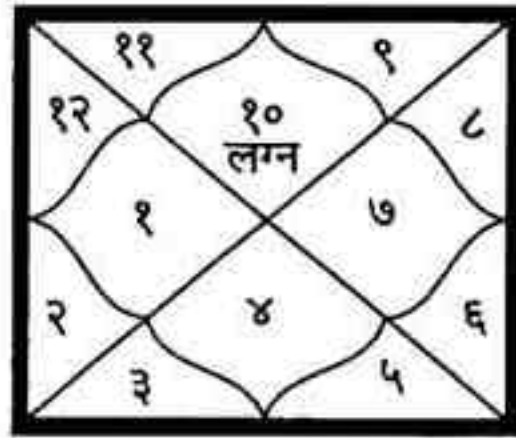
१०९९

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यत: दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुंडली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा दी जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'मकर' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या ११०० के अनुसार पड़ता रहेगा; परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य 'कुंभ' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली

संख्या १२१२ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'कुंभ' राशि से हटकर 'मीन' राशि में नहीं चला जाता। 'मीन' राशि में पहुंचकर वह 'मीन' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरंभ कर देगा। अत: जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'मकर' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुंडली संख्या ११०० में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात, यदि उन दिनों गोचर में सूर्य 'कुंभ' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या १२१२ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप, जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'मकर' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली संख्या ११०० से १२०७ तक में किया गया है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'मकर' लग्न मे जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए, इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अत: उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठाक फलादेश सहज ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णत: प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी जन्म-कुंडली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तत्कालिक ग्रह-गति कुंडली के किसी भाव में दो या दो से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अत: इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी गयी है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग पूरा कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं रह पाते; अत: वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। अतः

के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठाक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०० से ११११ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११११ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११२ से ११२३ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११११९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२३ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२४ से ११३५ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११३० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३५ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११३६ से ११४७ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११४० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४७ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४८ से ११५९ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५९ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११६० से ११७१ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार [illegible] चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११६० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ११६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण [illegible] संख्या ११६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७१ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७२ से ११८३ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि ''सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि ''कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि ''तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि ''वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि ''धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८३ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८४ से ११९५ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु''मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु''कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु''मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु''मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु''वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु''मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु''कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९५ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९६ से १२०७ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२०० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२०७ के अनुसार समझना चाहिए।

'मकर' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः प्रथमभावः सूर्य

११००

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आ जाती है तथा कभी-कभी विशेष शारीरिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि बनी रहती है। साथ ही शारीरिक प्रभाव एवं तेज की भी उन्नति होती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष से सामान्य कठिनाई बनी रहती है। इसी प्रकार व्यावसायिक क्षेत्र में भी कुछ परेशानियां उपस्थित होती रहती हैं।
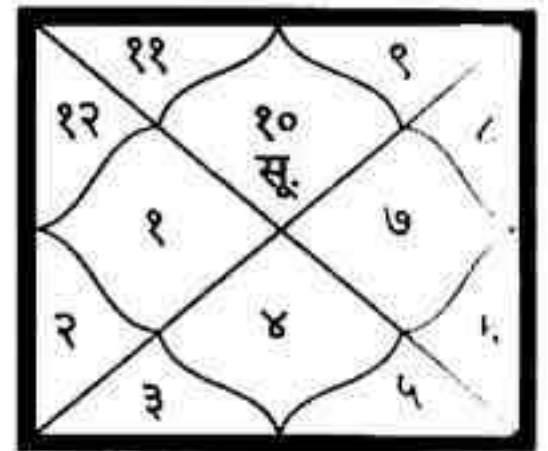
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः द्वितीयभावः सूर्य

११०१

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता। साथ ही कौटुंबिक सुख में भी कभी-कभी संकट एवं संघर्ष के योग बनते रहते हैं। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता है तथा शान-शौकत के लिए धन की चिंता नहीं करता।
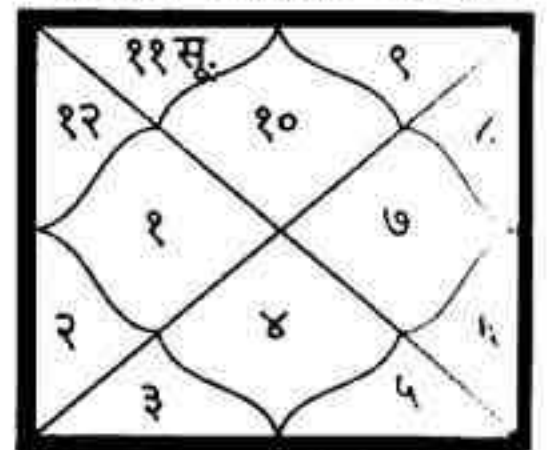
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में अत्यधिक वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के सुख में कुछ कमी तथा परेशानी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें पड़ती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ त्रुटि बनी रहती है। सूर्य के अष्टमेष होने के कारण पूर्ण भाग्योन्नति नहीं हो पाती।

मकर लग्न: तृतीयभाव: सूर्य
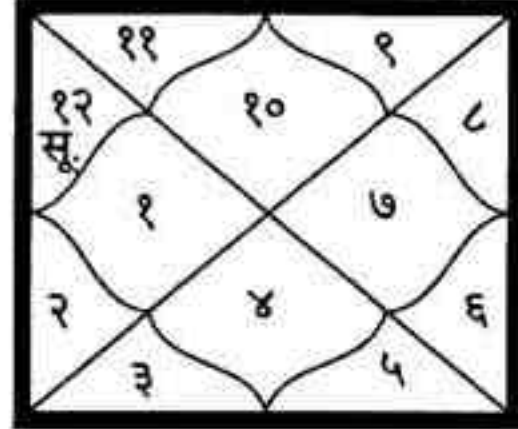
११०२

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन के अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख अच्छा मिलता है तथा भूमि एवं मकान आदि का भी लाभ होता है। उसका घरेलू वातावरण भी सुखपूर्ण रहता है। आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन-चर्या बड़े रईसी ढंग की तथा आनंदमय रहती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता के सुख में भी रुकावटें आती रहती हैं।

मकर लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य
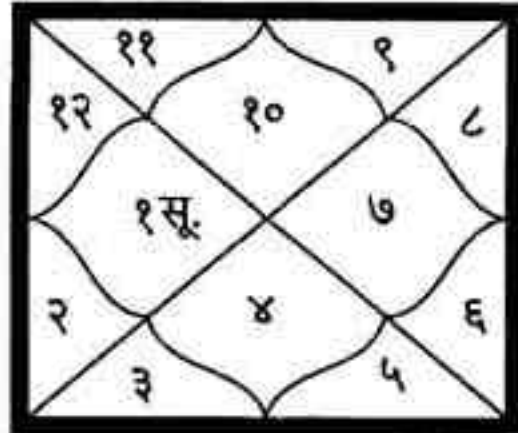
११०३

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट मिलता है, विद्याध्ययन में परेशानी होती है तथा बुद्धि की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। वह स्वभाव से क्रोधी तथा चिंतातुर बना रहता है, परंतु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, तभी उसे सफलता प्राप्त हो पाती है। सूर्य के अष्टमेश होने के कारण उसे कठिनाइयों का सामना हर क्षेत्र में अवश्य करना पड़ता है।

मकर लग्न: पंचमभाव: सूर्य
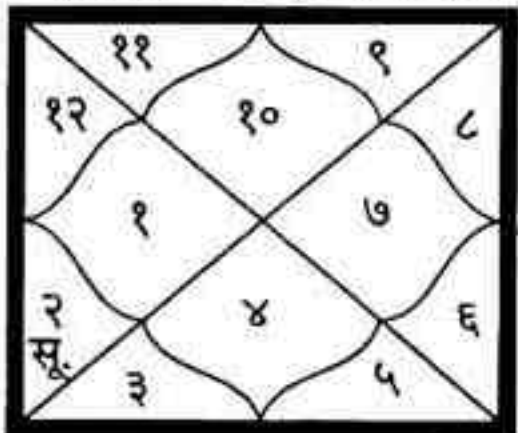
११०४

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' [illegible] की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: षष्ठभाव: [illegible]

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर निरंतर विजय प्राप्त करता रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का भी लाभ मिलता है एवं झगड़े-झंझट के मामलों में परिश्रम के साथ सफलता मिलती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से असंतोष प्राप्त होता है।
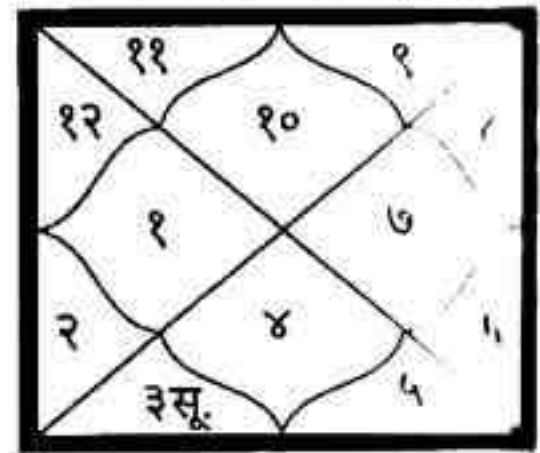
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' [illegible] की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: सप्तमभाव: [illegible]

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से परेशानी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी बहुत हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसी सूर्य स्थिति वाले व्यक्ति को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव के देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौंदर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। उसे परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है तथा कभी-कभी रोग का शिकार भी बनना होता है।
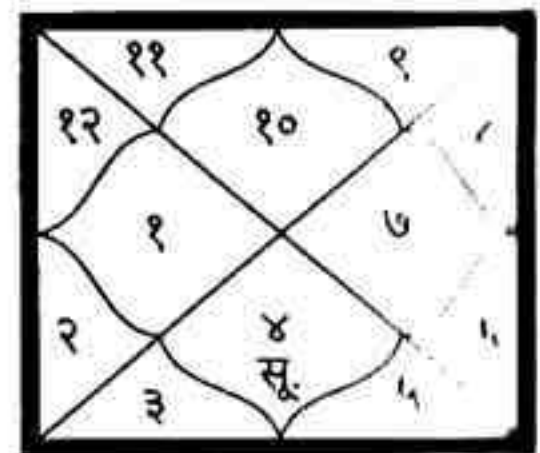
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मकर लग्न: अष्टमभाव: [illegible]

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। वह स्वभाव से बड़ा निर्भय, बहादुर, स्वाभिमानी तथा तेजस्वी होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभावशाली रहता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन संचय में परेशानी उठानी पड़ती है तथा कौटुंबिक सुख में भी व्यवधान उपस्थित होते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: नवमभाव: सूर्य

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ सू. ३ ५

११०८

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है। धर्म-पालन में त्रुटि बनी रहती है तथा यश भी कम ही मिल पाता हैं, परंतु आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है, जिसके कारण जातक भाग्यवानों जैसा जीवन व्यतीत करता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ परेशानी बनी रहती है तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: दशमभाव: सूर्य

११०९

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु की तुला राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता के संबंध में घोर कष्ट उठाना पड़ता है। राज्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा में कमी आती है तथा व्यवसाय की उन्नति में भी बाधाएं उपस्थित होती रहती हैं। इसके साथ ही जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी कुछ ह्रास होता है। यहां से जातक अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: एकादशभाव: सूर्य

१११०

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है, परंतु सूर्य के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती रहती हैं। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का विशेष लाभ होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतानपक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति के दिमाग में कुछ तेजी रहती है, अत: उसका स्वभाव उग्र रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण कुछ परेशानी बनी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कठिनाइयां उपस्थित होंगी। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार भी रहता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में भी थोड़ी हानि उठानी पड़ेगी तथा दैनिक जीवन भी कम प्रभावशाली रहेगा। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रु पक्ष पर सफलता मिलती रहेगी तथा उनके झगड़े-झंझट अपने आप दूर होते रहेंगे।
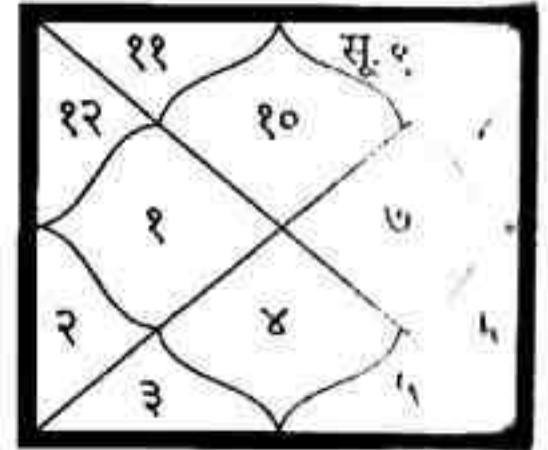
'मकर' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: प्रथमभाव: चंद्र

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौंदर्य में वृद्धि होती है। वह कोमल, मानी, विनोदी, कार्य-कुशल, लौकिक उन्नति का ध्यान रखने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला भी होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को सुंदर, सुयोग्य तथ स्वाभिमानी स्त्री मिलती है, साथ ही उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुखी एवं आनन्दपूर्ण रहता है।
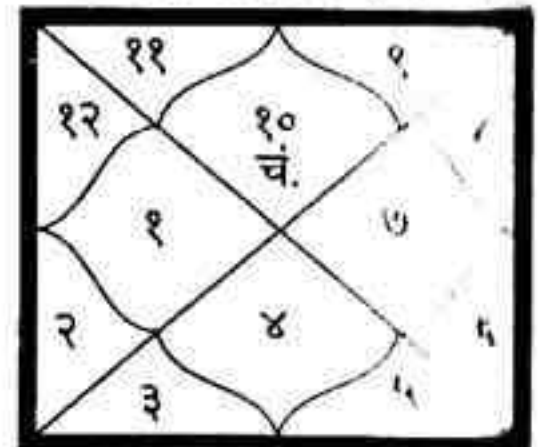
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: द्वितीयभाव: चंद्र

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुंब की वृद्धि होती है, परंतु स्त्री के कारण जातक को कुछ परेशानी का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति अपने मानसिक बल की सहायता से धन की वृद्धि करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा उसका रहन-सहन अमीरी ढंग का रहता है।
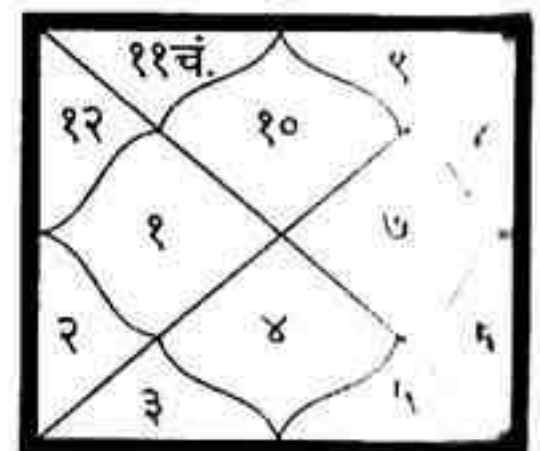
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का अच्छा सुख-सहयोग प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे कुटुंब तथा स्त्री का भी श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। उसके घर में प्रसन्नता का वातावरण बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धार्मिक पक्ष भी प्रबल बना रहता है। ऐसा जातक धनी तथा यशस्वी होता है।

मकर लग्नः तृतीयभावः चंद्र
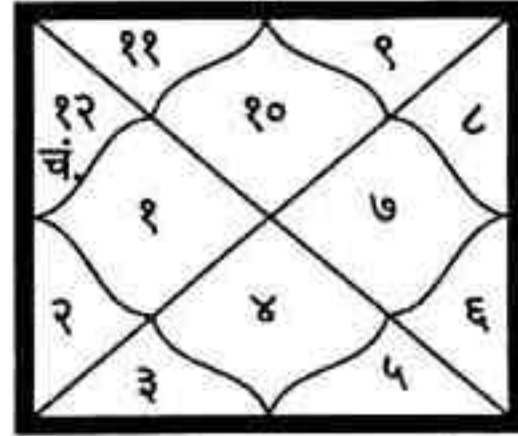
१११४

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसका घरेलू वातावरण उल्लासपूर्ण रहता है। व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है तथा स्त्री के पक्ष में भी सुख एवं सौंदर्य की प्राप्ति होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक का पिता से सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ एवं धन की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा प्रतिष्ठित होता है।

मकर लग्नः चतुर्थभावः चंद्र
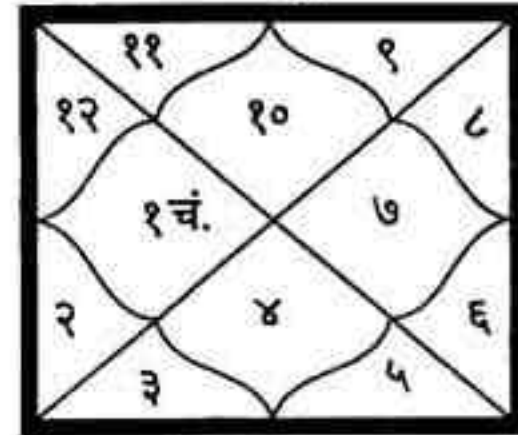
१११५

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि तथा संतान के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हाजिर-जवाब तथा हंसमुख होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में

मकर लग्नः पंचमभावः चंद्र
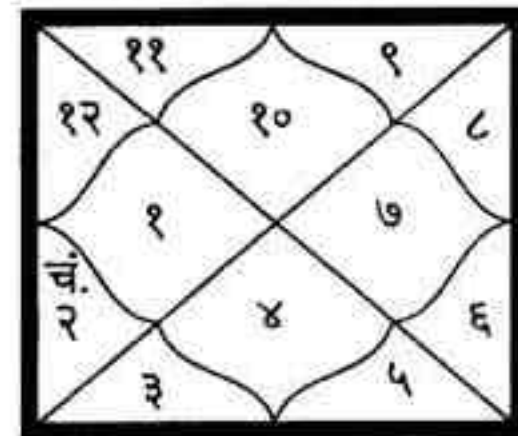
१११६

एकादशभाव को देखता है। अतः जातक की आमदनी के मार्ग में रुकावटें आएंगी। ... कारण उसे परेशानी का अनुभव होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: षष्ठभाव:

११ ९
१२ १०
१ ७
२ ४
चं.३

११२७

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में नरम बनकर अपना काम निकालेगा। साथ ही उसे स्त्री पक्ष में विरोध एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, जिसके कारण उसकी मानसिक अशांति दूर नहीं हो सकेगी। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहेगा, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से उसे लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।
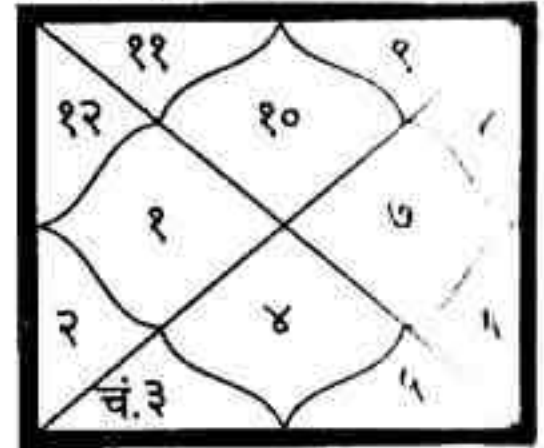
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: सप्तमभाव:

११२८

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्रीय चंद्रमा के प्रभाव से जातक को सुंदर स्त्री मिलेगी और उसके द्वारा पर्याप्त सुख भी प्राप्त होता रहेगा। व्यावसायिक क्षेत्र में भी उसे अत्यधिक सफलता मिलेगी, जिसके कारण उसका जीवन सुखी तथा आनंद व उल्लास से पूर्ण बना रहेगा। ऐसा व्यक्ति शृंगार, सौंदर्य, भोग तथा अन्य प्रकार के सुखों का उपयोग करने में विशेष अनुरक्त रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव में असंतोषजनक वृद्धि होगी। इसी प्रकार व्यवसाय तथा यश के क्षेत्र की सफलता से भी जातक कुछ असंतुष्ट बना रहेगा।
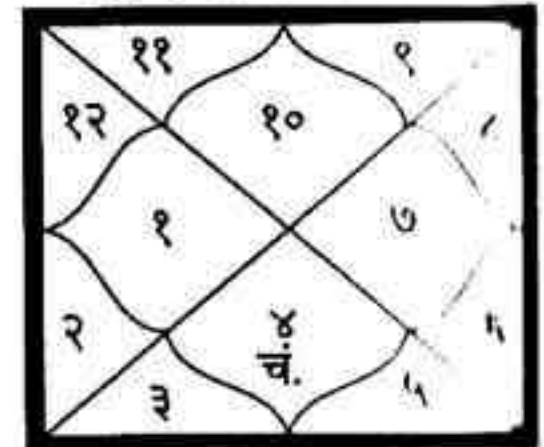
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: अष्टमभाव:

११२९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के यथेष्ट सुख की प्राप्ति होगी, परंतु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। गृहस्थी के सुख में कमी होने के कारण मन में भी अशांति
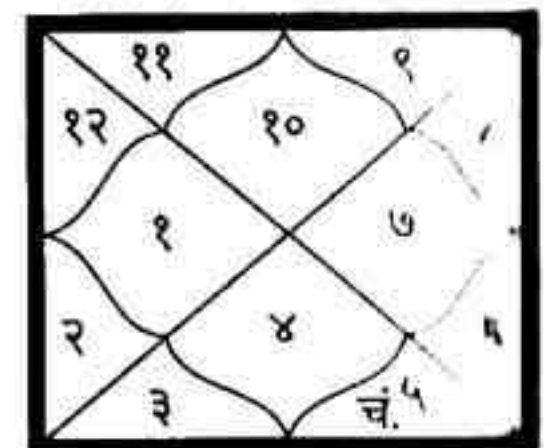
बनी रहेगी। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक के धन तथा कुटुंब का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होगा। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन ठाट-बाट का बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: नवमभाव: चंद्र

११२०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है, साथ ही धर्म में भी उसकी बहुत रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक धनी, धार्मिक, यशस्वी तथा न्यायप्रिय होता है। उसकी स्त्री भी सुंदर तथा भाग्यवान होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे खूब सफलता मिलती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा उसके मनोबल एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है।
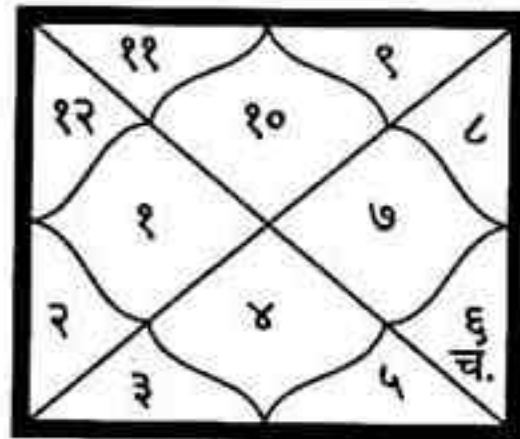
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: दशमभाव: चंद्र

११२१

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय द्वारा धन एवं सफलता की प्राप्ति होती है। उसका मनोबल बहुत उन्नत रहता है। उसकी स्त्री सुंदर तथा स्वाभिमानी होती है। उसके घरेलू वातावरण में भी आमोद-प्रमोद बिखरा रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी यथेष्ट सुख मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्यवान, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।
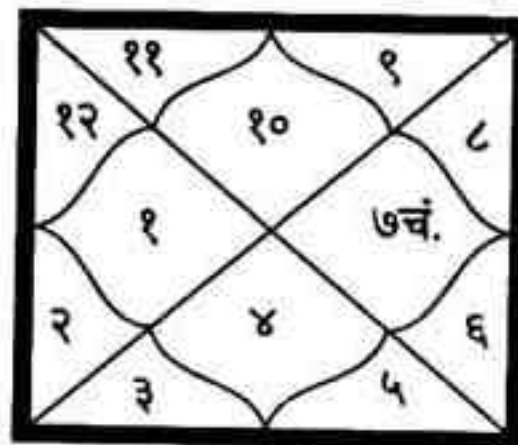
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: एकादशभाव: चंद्र

११२२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। इसी प्रकार
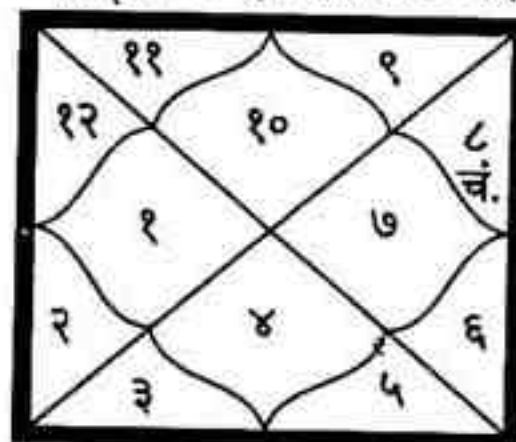
स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी अल्प सुख प्राप्त होता है। गृहस्थी के कारण उसे [illegible] चिंताओं का शिकार भी बनना पड़ता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से [illegible] शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि तथा [illegible] सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। उसका जीवन उल्लासपूर्ण रहता है। संक्षेप में, [illegible] सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, गुणवान एवं विद्वान होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्नः द्वादशभावः चंद्र

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उसे सफलता, शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। स्त्री पक्ष से सुख में कमी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। इन सबके कारण जातक का हृदय चिंतित एवं अशांत बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध को मिथुन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष एवं झगड़े-झंझट के मामले में विनम्रता से काम निकालता है तथा अपने मनोबल से उन पर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।
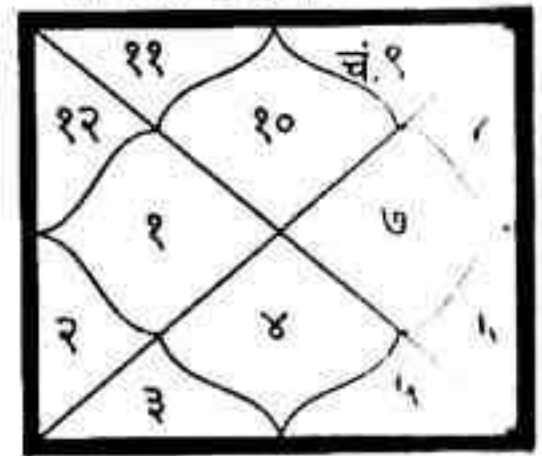
'मकर' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्नः प्रथमभावः मंगल

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य एवं शक्ति में वृद्धि होती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसका रहन-सहन शान-शौकत भरा होता है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाइयां आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चतुर, सुखी तथा धनी होता है।
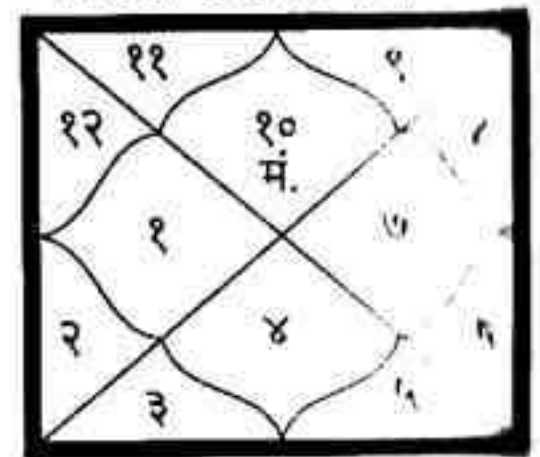
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

११२५

दूसरे धन एवं कुटुंब स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ असंतोष के साथ कुटुंब एवं धन का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परंतु माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति का लाभ होता है। यहां से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के काण जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने आर्थिक लाभ का ध्यान अधिक रखता है।
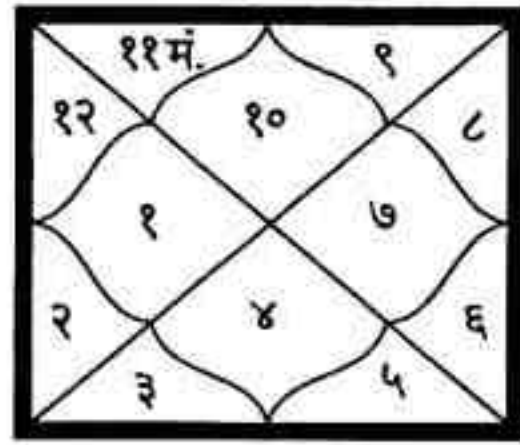
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: तृतीयभाव: मंगल

११२६

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों की शक्ति प्राप्त होती है। वह अपने पुरुषार्थ द्वारा आमदनी को बढ़ाता है तथा माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त करता है, यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक का शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है, साथ ही वह हिम्मती और बहादुर होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है, जिसके कारण जातक को यश भी प्राप्त होता है। आठवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ त्रुटियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।
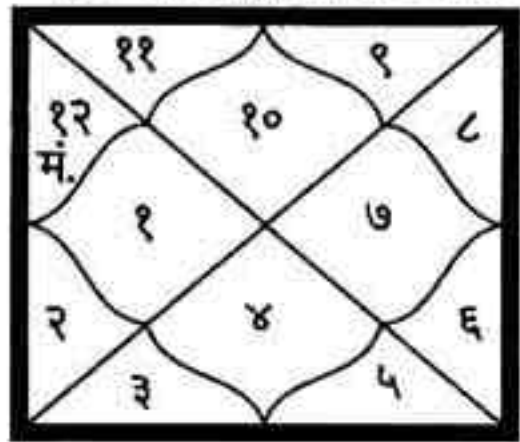
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

११२७

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का विशेष सुख एवं लाभ मिलता है। यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से सप्तमभाव को मित्र की राशि में देखता है, अत: स्त्री के सुख में कमी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं। सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की राशि में दशमभाव को
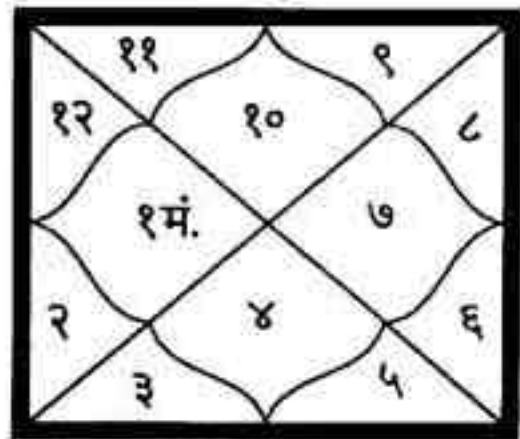
देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सम्मान एवं सहयोग की प्राप्ति होती है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा बड़ी सरलता से लाभ के साधन उपलब्ध होते रहते हैं। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्न: पंचमभाव: मंगल

११२८

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि की शक्ति मिलती है तथा संतानपक्ष से भी सुख प्राप्त होता है, साथ ही माता, भूमि, मकान आदि के सुख का लाभ भी होता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सुख एवं लाभ प्राप्त होता है।
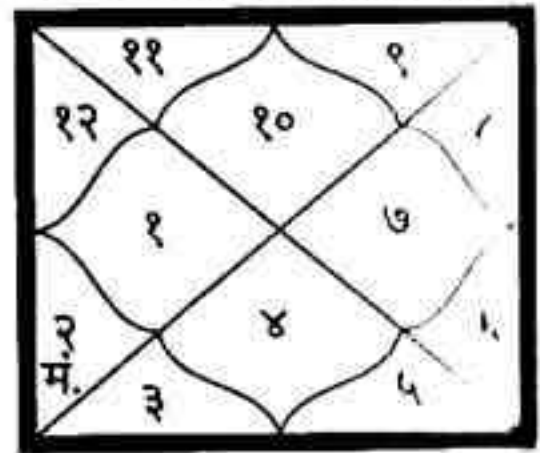
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्न: षष्ठभाव: मंगल

११२९

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। माता, भूमि तथा मकान के सुख में कमी आती है, साथ ही आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उपस्थित होती रहती हैं। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है। आठवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि से प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है और उसे सुख, स्वास्थ्य तथा समृद्धि की प्राप्ति होती है।
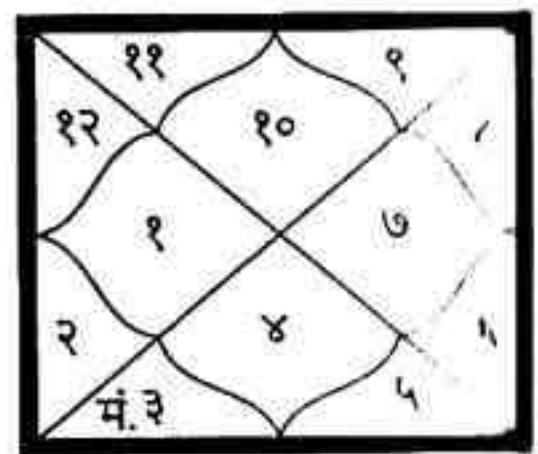
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष तथा गृहस्थी से सुख प्राप्त करने में बड़ी कमी रहती है। इसी प्रकार व्यवसाय, माता, भूमि तथा मकान का सुख भी बहुत दुर्बल रहता है। यहां से मंगल चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक प्रभाव, सौंदर्य, सुख एंव गौरव में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण धन-संचय में कुछ कठिनाइयां आएंगी तथा कौटुंबिक सुख सामान्य रूप में प्राप्त होता रहेगा।

मकर लग्न: सप्तमभाव: मंगल

११३०

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है तथा आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी खूब अच्छी रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण धन-संचय की शक्ति में सामान्य त्रुटियों के साथ सफलता मिलेगी तथा कुटुंब का सुख भी सामान्य रहेगा। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।

मकर लग्न: अष्टमभाव: मंगल

११३१

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है, वह धनी, धर्मात्मा, न्यायी तथा यशस्वी होता है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है एवं आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को
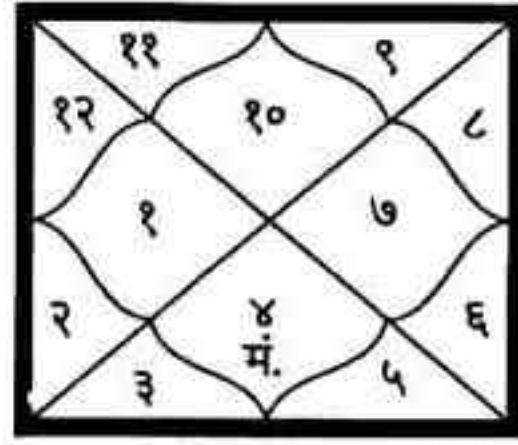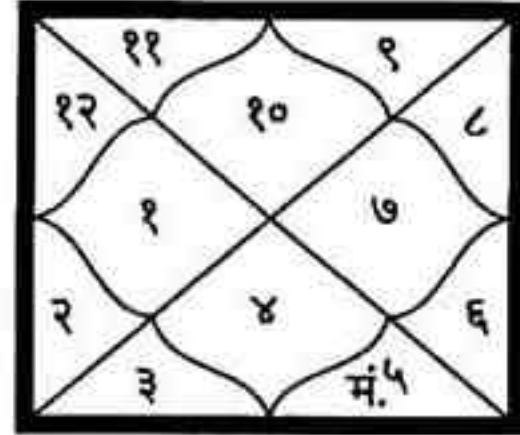
मकर लग्न: नवमभाव: मंगल
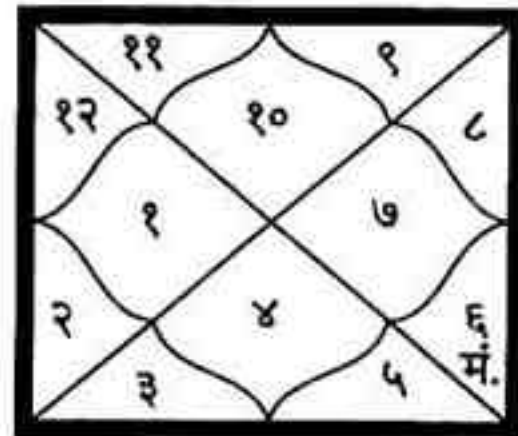
११३२

देखने से माता, भूमि एवं मकान का विशेष सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, गम्भीर विनोदी, पुरुषार्थी तथा पराक्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्नः दशमभावः मंगल

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की विशेष शक्ति मिलती है। राजकीय क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त होती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा बड़प्पन रखने वाला होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता हैं तथा आठवीं दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष वृद्धि होती है।
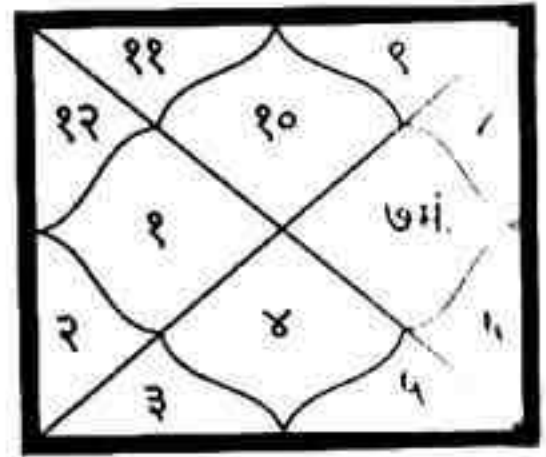
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्नः एकादशभावः मंगल

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित स्वक्षेत्रीय मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। साथ ही उसे माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। यहां से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को कुछ असंतोष एवं कमी के साथ धन एवं कुटुंब का सुख प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा संतान का सुख भी मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक का शत्रु पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है और झगड़ों के मामलों में उसे लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।
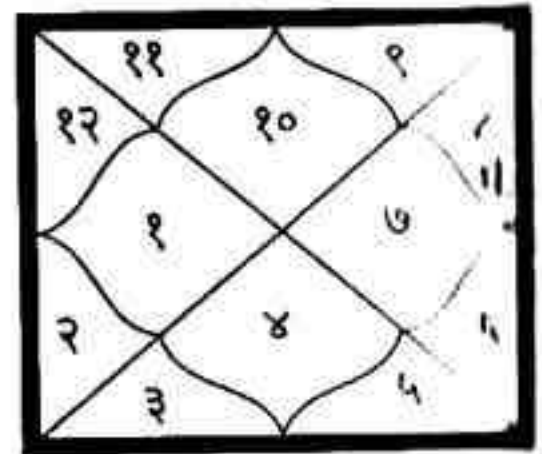
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा मातृभूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों से कोई चिंता उत्पन्न नहीं होती। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चंद्रमा की राशि में सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा सुख में कमी आती है।

मकर लग्न: द्वादशभाव: मंगल
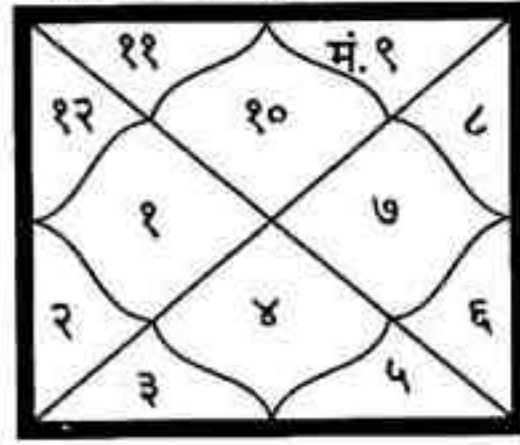
११३५

'मकर' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है तथा उसकी परेशानियां स्वयमेव दूर होती रहती हैं। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री तथा रोजगार के पक्ष में भी सफलता मिलती है, परंतु बुध के षष्ठेश होने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती रहती हैं।

मकर लग्न: प्रथमभाव: बुध
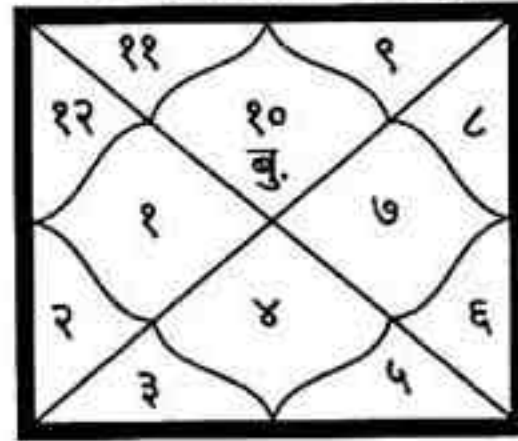
११३६

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब द्वारा भी सहयोग एवं सुख प्राप्त होता है। उसे मान-प्रतिष्ठा भी मिलती है और धर्म में भी उसकी रुचि बनी रहती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परंतु बुध के षष्ठेश होने के कारण कभी-कभी भाग्योन्नति में कठिनाइयां भी आती रहती हैं। यों, ऐसा जातक भाग्यवान तथा सुखी होता है।

मकर लग्न: द्वितीयभाव: बुध
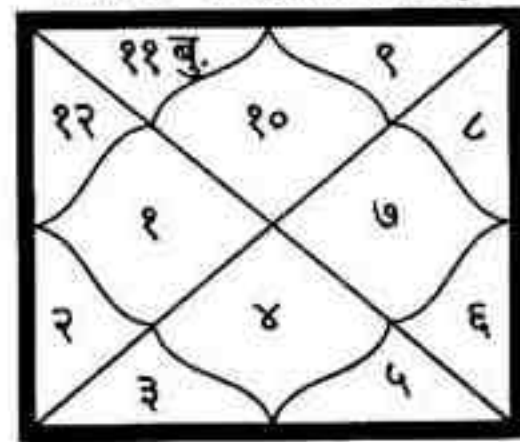
११३७

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: तृतीयभाव: बुध

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम भी अल्प रहता है। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में भी कुछ कठिनाइयां आती हैं एवं शत्रु पक्ष तथा झगड़ों से भी कुछ परेशानी उठानी पड़ती है। यहां से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में नवमभाव को देखता है। अत: जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है। सामान्यत: ऐसा व्यक्ति भाग्यवान समझा जाता है।
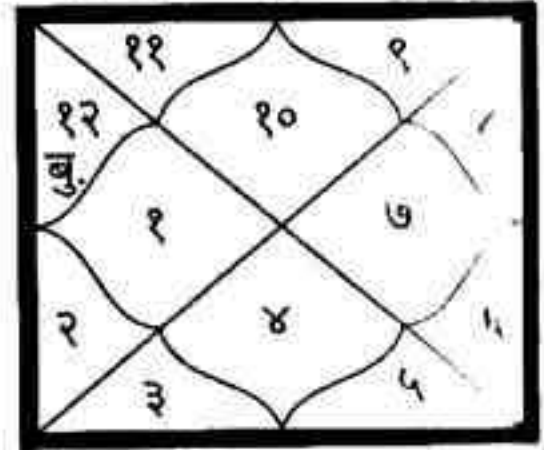
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: चतुर्थभाव: बुध

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं संतान का सुख प्राप्त होता है, साथ ही भाग्य की उन्नति भी होती है, परंतु बुध के षष्ठेश होने के कारण घरेलू सुख-शांति में कुछ बाधाएं आती रहती हैं। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है तथा शत्रु पक्ष में सफलता मिलती रहती है।
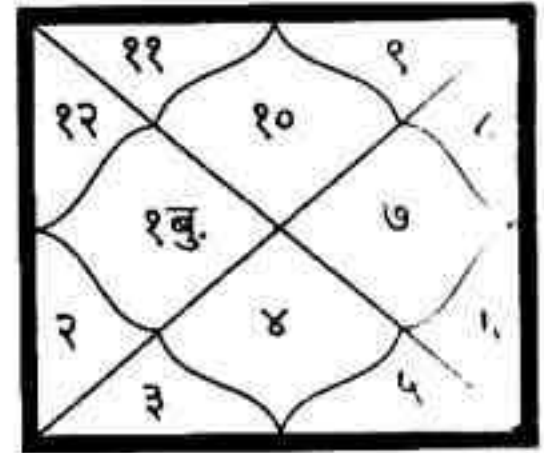
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। वह अपने परिश्रम द्वारा आय की विशेष उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे शत्रु पक्ष में सफलता एवं यश की प्राप्ति होती हैं। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक विवेक एवं भाग्य की शक्ति से श्रेष्ठ लाभ का उपार्जन करता है।

मकर लग्न: पंचमभाव: बुध
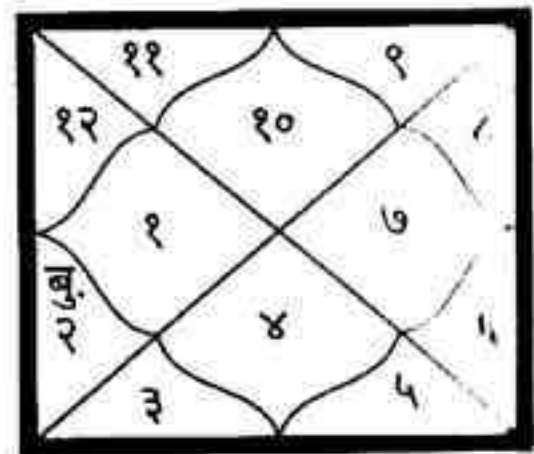
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः षष्ठभावः बुध

११४१

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। उसकी भाग्योन्नति तथा धार्मिक उन्नति के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां उपस्थित होती हैं तथा कभी-कभी लाभ के बजाय हानि भी उठानी पड़ती है, परंतु वह सब बाधाओं को पार करके उन्नतिशील बना रहता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ, सुख तथा शक्ति प्राप्त होती है।
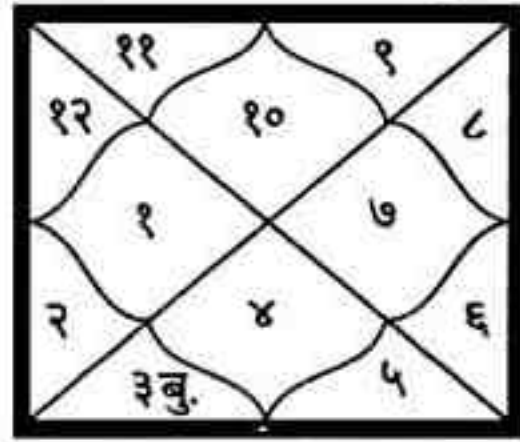
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः सप्तमभावः बुध

११४२

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने विवेक द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है तथा व्यवसाय में सफलता पाता है। उसे स्त्री पक्ष से कुछ अशांति रहती है, परंतु धर्म का पालन भी यथाविधि होता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ व्यवसाय में विशेष आर्थिक लाभ भी होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव, स्वाभिमान तथा सम्मान में वृद्धि होती है, परंतु कभी-कभी उसे बीमारियों का शिकार भी होना पड़ता है।
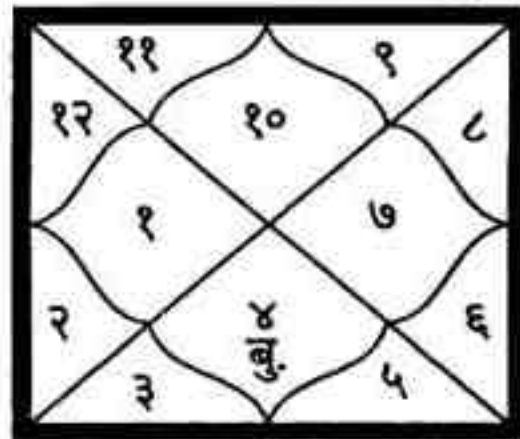
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः अष्टमभावः बुध

११४३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसकी भाग्योन्नति में विशेष बाधाएं आती हैं तथा यश की भी कमी रहती है। शत्रु पक्ष की ओर से भी संकट एवं अशांति का वातावरण बना रहता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब का सुख मिलता है, परंतु ऐसे जातक का दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।
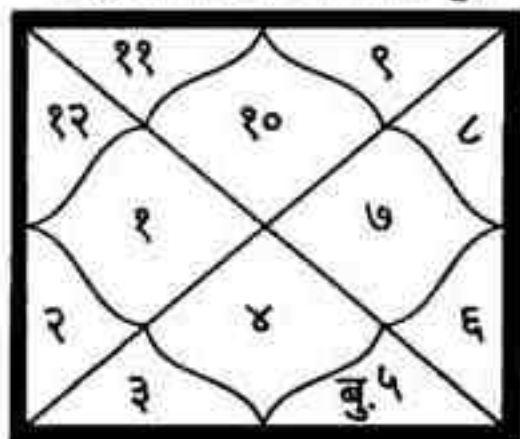
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्न: नवमभाव: ९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह लोक-दिखावे के लिए धर्म का पालन भी करता है। शत्रु पक्ष पर उसे विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता रहता है। यहां से बुध अपनी सातवीं नीचदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक का भाई से विरोध रहता है अथवा भाई-बहनों के सुख में कमी आती है और वह पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्य को अधिक बड़ा समझता है। इस प्रकार उसका पराक्रम शिथिल रहता है।
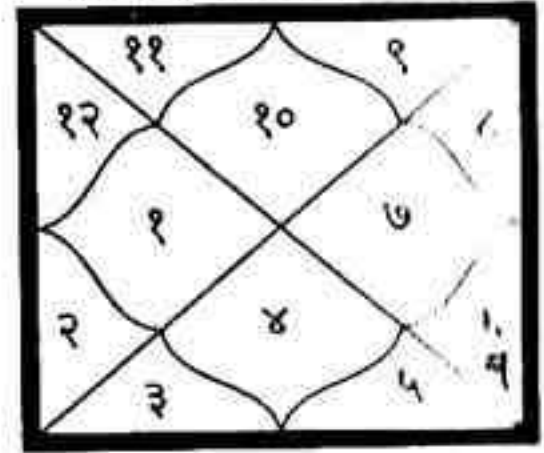
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, वह अपने भाग्य तथा परिश्रम की सम्मिलित शक्ति से खूब धन कमाता है तथा शत्रु पक्ष पर विजय पाता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परंतु बुध के षष्ठेश होने के कारण उसकी उन्नति के मार्ग में रुकावटें आती रहती हैं।

मकर लग्न: दशमभाव: ९
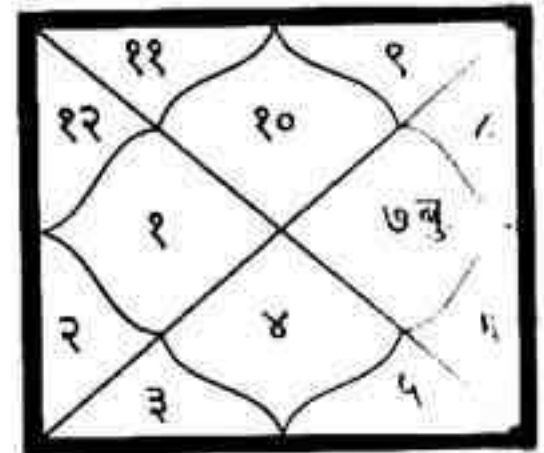
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: एकादशभाव: ९

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है। वह शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा परिश्रम एवं विवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है। स्वार्थयुक्त धर्म का पालन करने में भी वह पीछे नहीं रहता। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को
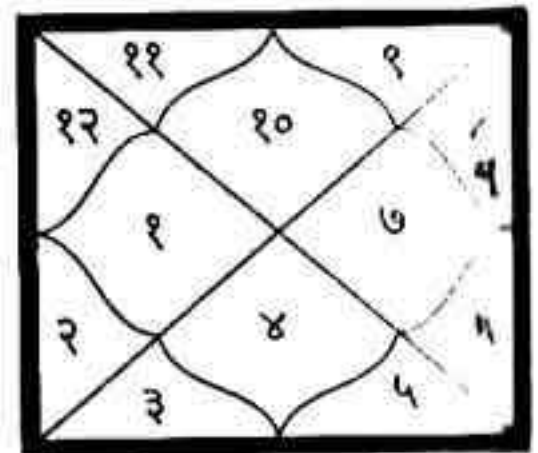
देखता है, अत: उसे संतानपक्ष में सफलता तो मिलती है, परंतु बुध के षष्ठेश होने के कारण कुछ परेशानी भी रहती है। विद्या और बुद्धि के क्षेत्र में ऐसा जातक विशेष उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: द्वादशभाव: बुध

११४७

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु उसकी पूर्ति में कोई कठिनाई नहीं पड़ती। वह बाहरी स्थानों के संबंध से विशेष शक्ति, लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है, परंतु उसकी भाग्योन्नति में कठिनाइयां आती रहती हैं तथा यश की कमी रहती है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक को शत्रु पक्ष से कुछ कठिनाई रहती है, परंतु वह अपने भाग्य की शक्ति से उन कठिनाइयों पर सफलता प्राप्त कर लेता है।
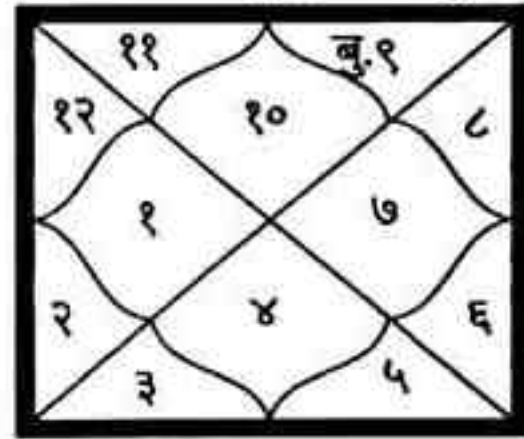
'मकर' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: प्रथमभाव: गुरु

११४८

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता रहती है, भाई-बहन के सुख में कमी आती है। पराक्रम न्यून रहता है। खर्च चलाने में कठिनाई पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से असंतोष मिलता है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: विद्या एवं बुद्धि में कुछ त्रुटि-पूर्ण सफलता मिलती है तथा संतान से सुख-दु:ख दोनों ही मिलते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से सुख तथा सफलता मिलती है एवं नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव के देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में घट-बढ़ बनी रहती है।
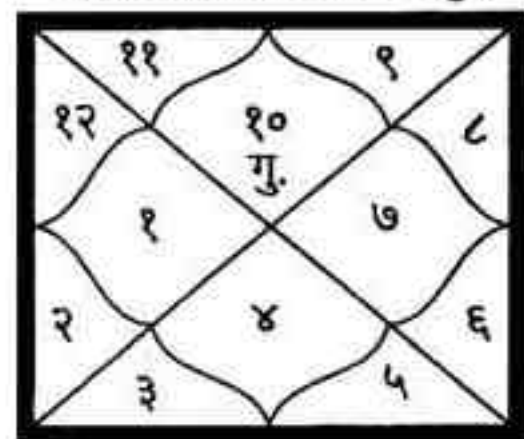
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के धन-संचय में कमी आती है तथा कुटुंब से भी परेशानी रहती है। ऐसे व्यक्ति का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति मिलती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष में बुद्धिमानी एवं चतुराई से काम निकालता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की कुछ शक्ति मिलती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव के क्षेत्र में सामान्य सफलता प्राप्त होती है।
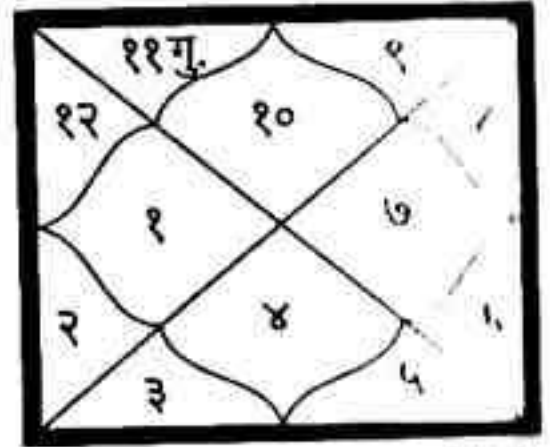
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है, परंतु गुरु के व्ययेश होने के कारण पुरुषार्थ में कमी आती है। खर्च का संचालन सुचारु रूप से होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से शक्ति प्राप्त होती है। यहां से गुरु पांचवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री सुंदर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में न्यूनाधिकता बनी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है। कुल मिलाकर जातक सामान्यत: सुखी जीवन व्यतीत करता है।
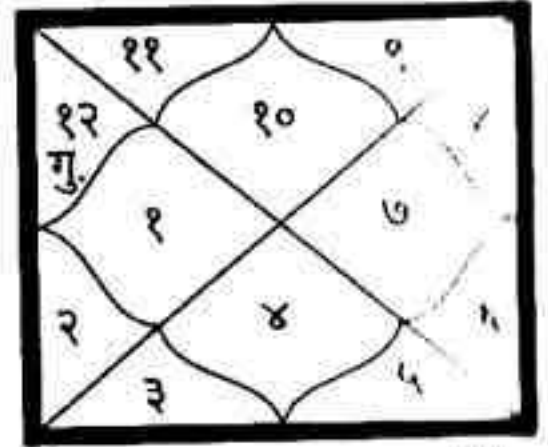
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा भाई-बहनों के संबंध में भी कुछ कमी रहती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का सामान्य लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा नवीं दृष्टि से अपनी ही
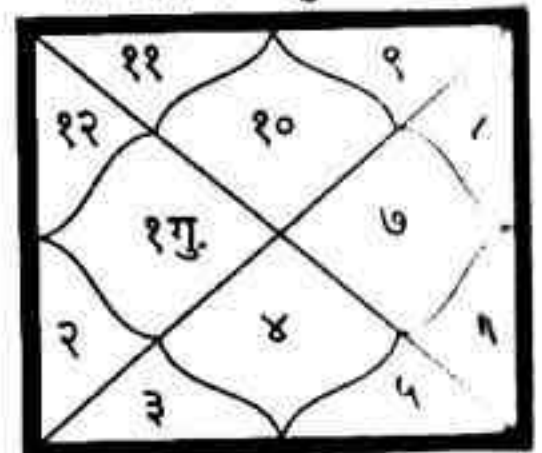
राशि के द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उसे घर-बैठे ही लाभ प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: पंचमभाव: गुरु

११५२

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से न्यूनाधिक लाभ होता है तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि-बल से अपने खर्च को चलाता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। उसे भाई-बहनों का भी सामान्य सुख मिलता है तथा बुद्धि-बल से उसके पराक्रम की वृद्धि होती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण पुरुषार्थ द्वारा आमदनी अच्छी रहती है तथा नवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी तथा परेशानी बनी रहती है।
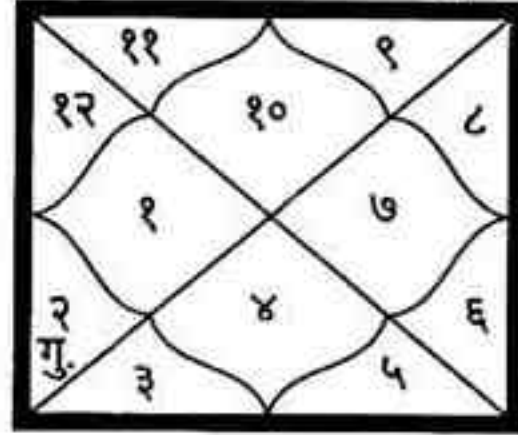
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: षष्ठभाव: गुरु

११५३

छठे रोग तथा शत्रु-भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक खर्च की शक्ति से शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है। उसका भाई-बहनों से सामान्य विरोध रहता है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां एवं कमियां बनी रहती हैं। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से शक्ति मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब की वृद्धि के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है, फिर भी कष्ट ही प्राप्त होता है।
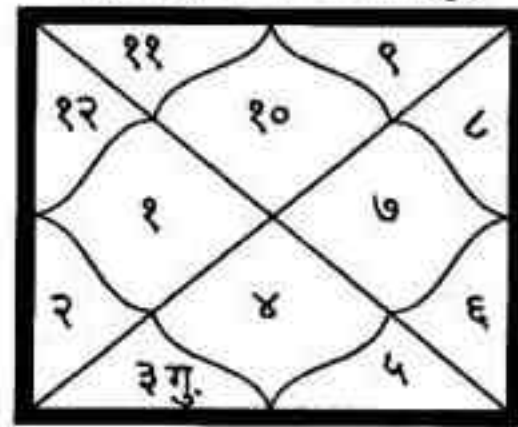
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को सुंदर पत्नी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से शक्ति एवं लाभ प्राप्त होता है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सफलता मिलती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा चित्त में चिंताएं घर किए रहती हैं। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

मकर लग्नः सप्तमभावः गु
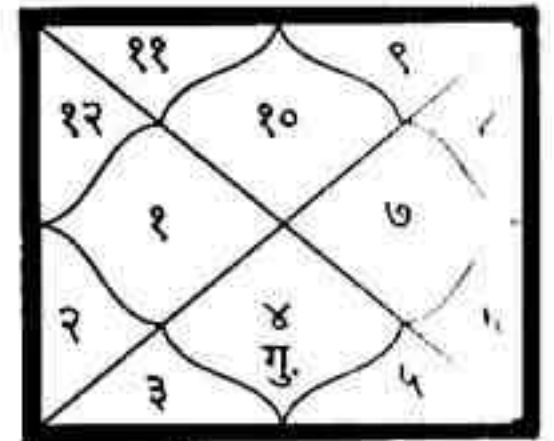
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः बाहरी स्थानों के संबंध से खर्च चलता रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

मकर लग्नः अष्टमभावः गु
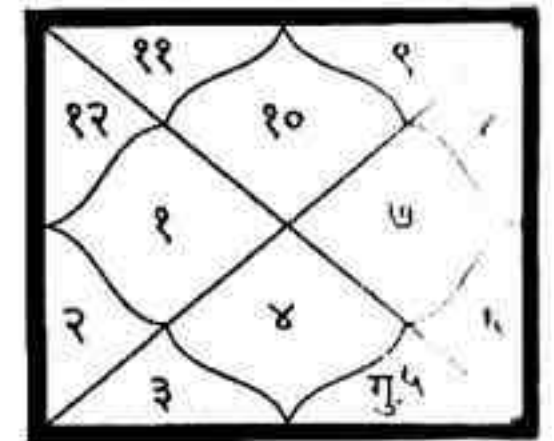
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कमजोरी रहती है, इसी प्रकार वह धर्म का पालन भी यथोचित नहीं कर पाता। बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ शक्ति प्राप्त होती है, जिससे खर्च चलता रहता है। यहां से गुरु पांचवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा मन अशांत बना रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन की सामान्य शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में भी कुछ वृद्धि होती है।

मकर लग्नः नवमभावः गु
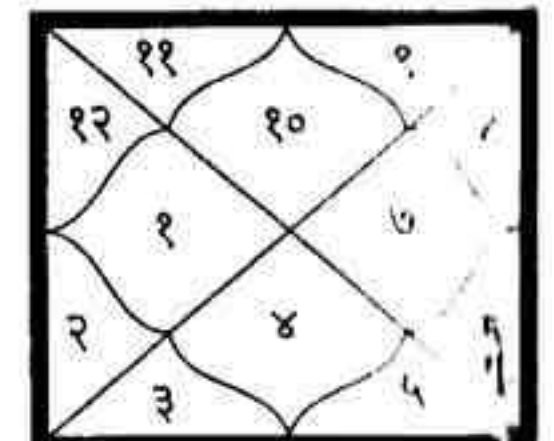
नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में विवेक-बुद्धि से सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़े के मामलों में कभी हानि और कभी लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः दशमभावः गुरु

११ ९ १२ १० ८ १ ७गु. २ ४ ६ ३ ५

११५७

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष से कमी बनी रहती है। उसे भाई-बहन की शक्ति मिलती है तथा पुरुषार्थ की भी वृद्धि होती है, जिसके कारण वह अपने खर्च को ठाठ से चलाता रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति एवं लाभ प्राप्त करता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-संचय तथा कौटुंबिक सुख में कठिनाइयां आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता का सुख त्रुटिपूर्ण रहता है, परंतु खर्च के बल पर भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष पर अपनी बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित करता है।
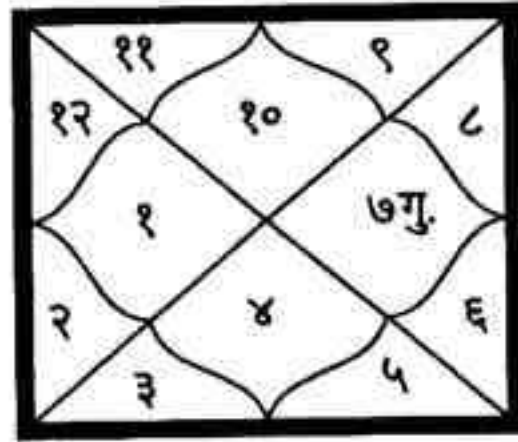
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः एकादशभावः गुरु

११५८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परंतु गुरु के व्ययेश होने के कारण उसमें कुछ कठिनाइयां भी आती हैं। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होने के कारण खर्च आराम तथा ठाट से चलता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं दृष्टि से तृतीयभाव को अपनी ही राशि में देखता है, अतः भाई-बहन एवं पराक्रम की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से कुछ असंतोष रहता है, परंतु विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति प्राप्त होती है। नवीं उच्चदृष्टि से मित्र चंद्रमा की राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।
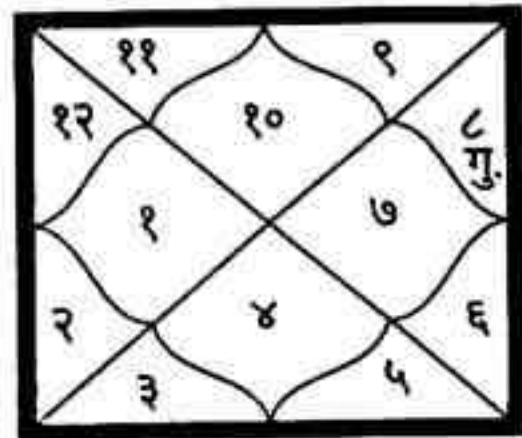
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: द्वादशभाव: गुरु

बारहवें व्यय भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता है। भाई-बहनों के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। जिसके कारण कभी-कभी हिम्मत भी जवाब दे जाती है, यहां से गुरु की अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव के देखने से शत्रु पक्ष पर युक्तिपूर्वक प्रभाव स्थापित होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को [illegible] के साथ आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु ऐसा व्यक्ति अपने शानदार [illegible] बल पर जीवन को प्रभावशाली बनाए रखता है।
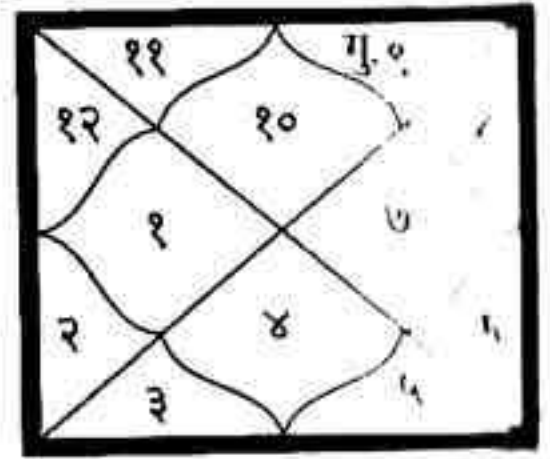
'मकर' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: प्रथमभाव: शुक्र

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव एवं मान की प्राप्ति होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों से भी सहयोग, सम्मान, सफलता एवं सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है तथा बुद्धि-चातुर्य से उन्नति करता है। संतानपक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को सुंदर तथा सुयोग्य स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है।

मकर लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र
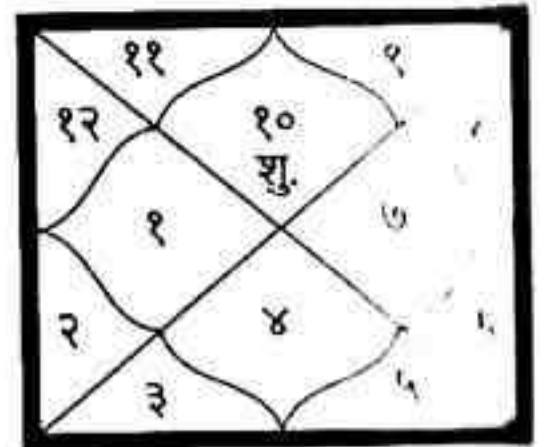
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को कुटुंब का पर्याप्त सुख मिलता है तथा धन का संचय भी खूब होता है। उसे राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्रों से सुख,
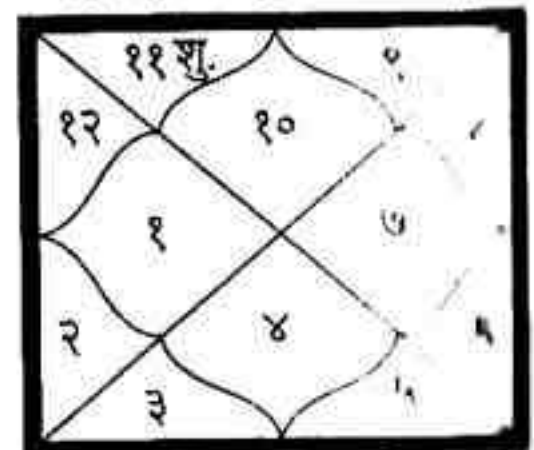
सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है, परंतु संतानपक्ष से कुछ कठिनाई रहती है। विद्या और बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु की शक्ति में कुछ कमी आती है तथा पुरातत्त्व का भी स्वल्प लाभ मिल पाता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा यशस्वी तो होता है, परंतु उसे विभिन्न प्रकार की चिंताएं भी लगी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः तृतीयभावः शुक्र

११६२

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा विद्या एवं संतानपक्ष से शक्ति प्राप्त होती है। साथ ही पिता का सुख, सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। भाई-बहन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है तथा जातक बड़ा हिम्मती एवं धैर्यवान होता है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य उन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी बनी रहती है तथा यश भी कम ही मिल पाता है।
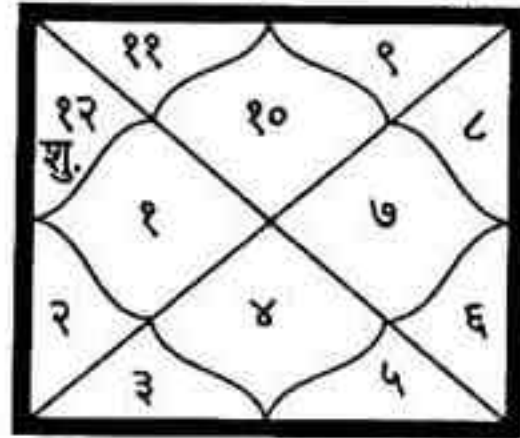
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

११६३

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है तथा बुद्धि-योग से आमदनी के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता का सहयोग, राज्य से सम्मान, व्यवसाय से लाभ, विद्या में प्रवीणता तथा संतानपक्ष से सहयोग भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति नीतिज्ञ, विचारवान, शीलवान तथा सुख-शांतिपूर्ण जीवन बिताने वाला होता है।
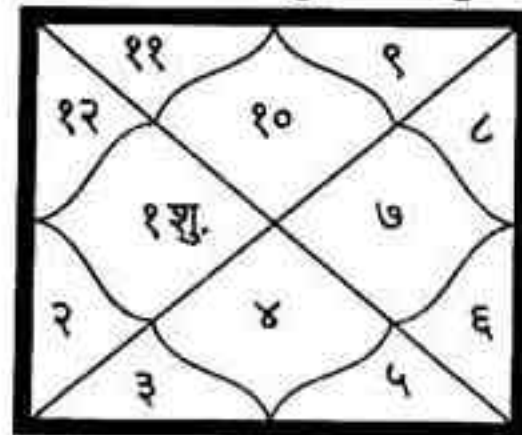
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की शक्ति एवं संतानों का सुख प्राप्त होता है। वह अपने चातुर्य के बल पर उन्नति करता है। उसे पिता द्वारा लाभ तथा राज्य द्वारा सम्मान भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति कायदे-कानून की बातें करने वाला तथा हुकूमत पसंद होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी भी अच्छी रहती है तथा वह निरंतर उन्नति भी करता चला जाता है।

मकर लग्नः पंचमभावः शुक्र
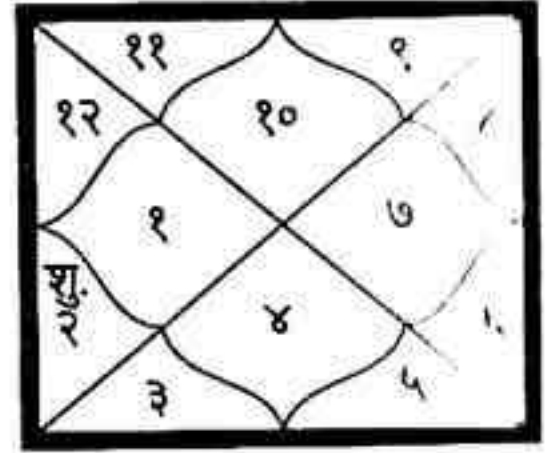
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला होता है। उसको पिता द्वारा कुछ मतभेद के साथ शक्ति प्राप्त होती है, संतानपक्ष तथा विद्या के पक्ष में कमी रहती है एवं राज्य के क्षेत्र में भी कम सम्मान मिल पाता है। ऐसा व्यक्ति दिमागी रूप से चिंतित भी बना रहता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती रहती है।

मकर लग्नः षष्ठभावः शुक्र
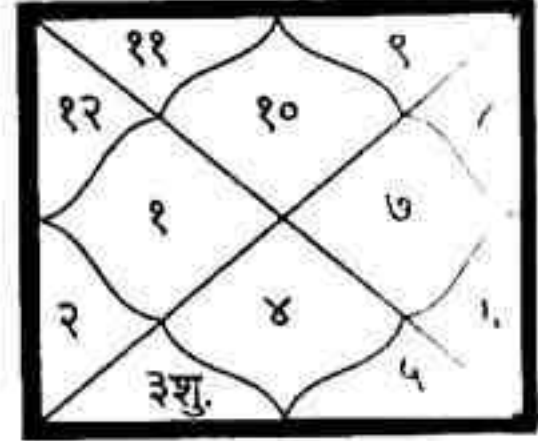
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सुंदर तथा योग्य स्त्री मिलती है तथा बुद्धि-चातुर्य से व्यवसाय में भी लाभ होता है। उसे पिता, विद्या एवं संतानपक्ष से सुख मिलता है तथा घरेलू जीवन भी आनंदपूर्ण बना रहता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथमभाव को देखता है। अतः जातक को शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। उसे राजकीय क्षेत्र से सम्मान मिलता है तथा समाज में भी प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

मकर लग्नः सप्तमभावः शुक्र
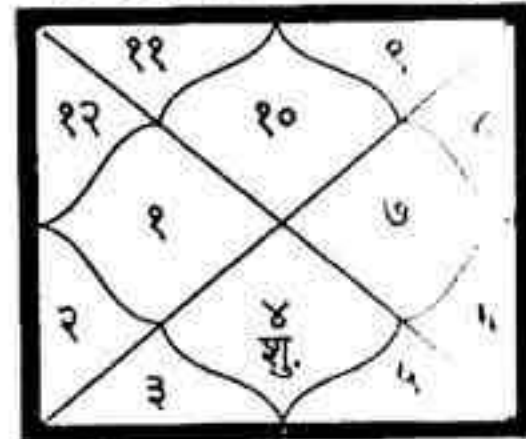
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। उसे पिता पक्ष तथा संतान-पक्ष से कष्ट का अनुभव होता है। राजकीय क्षेत्र में सम्मान कम मिलता है तथा विद्या की भी कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी उन्नति करता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की कुंभ राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन एवं कुटुंब का सुख भी प्राप्त होता है।

मकर लग्नः अष्टमभावः शुक्र

११६७

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः नवमभावः शुक्र

११६८

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएं आती है तथा धर्म का पालन भी ठीक प्रकार से नहीं होता। उसे पिता, संतान, विद्या, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों का सुख विशेष रूप से मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम तथा पुरुषार्थ से उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता से पूर्ण सहयोग, राज्य से अत्यधिक सम्मान तथा व्यवसाय से विशेष लाभ प्राप्त होता है। उसका संतान तथा विद्या पक्ष भी प्रबल रहता है। वह अपनी बुद्धि तथा चातुर्य द्वारा उन्नति करता है एवं हुकूमत पसंद न्यायशील होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख प्राप्त होता है और उसका घरेलू जीवन आनंदमय बना रहता है।

मकर लग्नः दशमभावः शुक्र

११६९

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
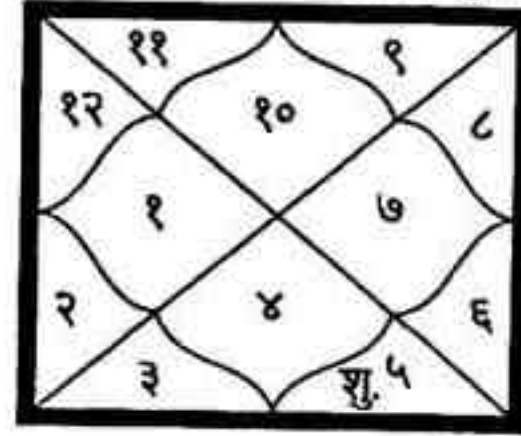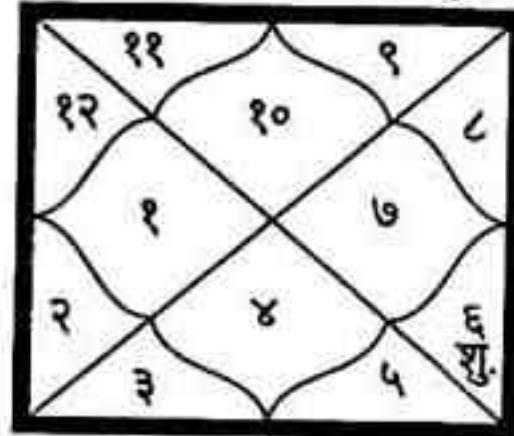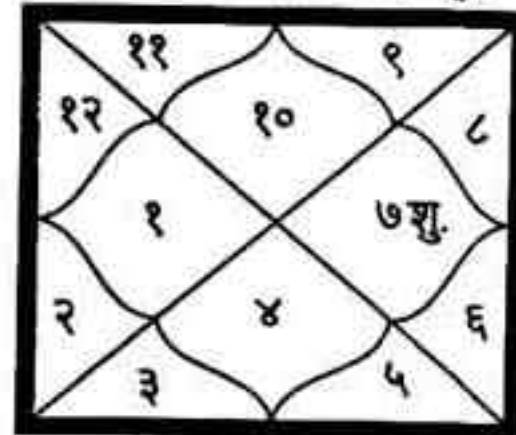
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, साथ ही उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सफलता प्राप्त होती है। यहां से शत्रु सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतान पक्ष की शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का क्षेत्र भी श्रेष्ठ रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी विद्या, गुण तथा योग्यता के बल पर सर्वत्र आदर, सम्मान तथा लाभ प्राप्त करता है। वह हुकूमत पसंद तथा प्रभावशाली भी होता है।

मकर लग्न: एकादशभाव: शुक्र
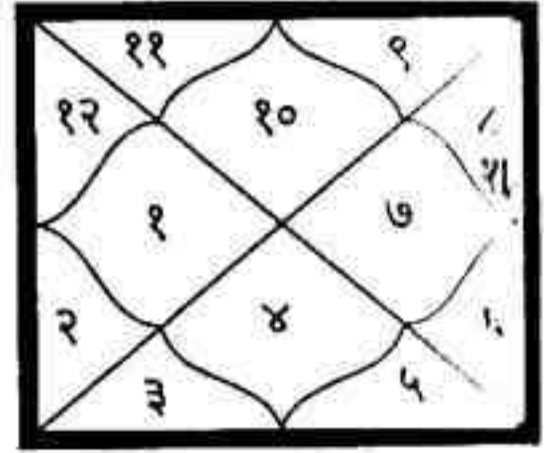
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ एवं शक्ति प्राप्त होती है। पिता-पक्ष से हानि, संतान-पक्ष से कष्ट, प्रतिष्ठा तथा विद्या के क्षेत्र में कमी एवं मानसिक चिंताओं का प्रभाव भी जातक के ऊपर पड़ता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु-पक्ष में चातुर्य द्वारा अपना काम निकालता है तथा उसकी उन्नति कुछ विलंब से होती है।

मकर लग्न: द्वादशभाव: शुक्र
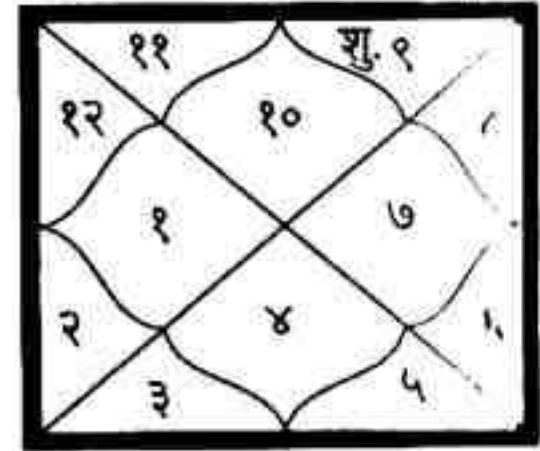
'मकर' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि हाती है। वह मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, स्वाभिमानी तथा कौटुंबिक सुख से परिपूर्ण होता है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों से असंतोष रहता है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष से भी कुछ असंतोष रहता है तथा व्यावसायिक उन्नति के लिए परिश्रम

मकर लग्न: प्रथमभाव: शनि
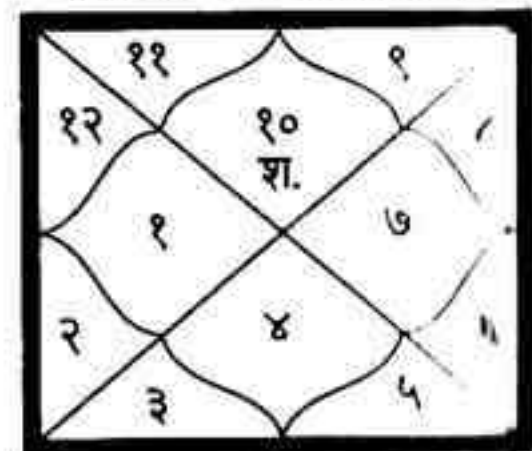
करता रहता है। दसवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश, मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपनी ही राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक धन-संचय की स्थिर शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुंब से भी लाभ होता है, परंतु शारीरिक सुख एवं शांति में कुछ कमी आ जाती है। यहां से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण कठिनाइयों के साथ आमदनी की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धन तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा स्वार्थी होता है।

मकर लग्नः द्वितीयभावः शनि
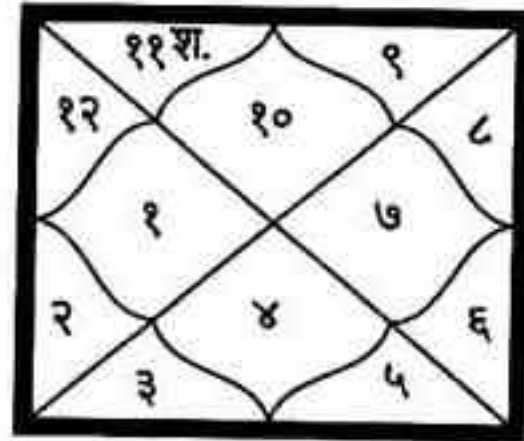
११७३

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहन की शक्ति कुछ कठिनाइयों के बाद मिलती है, पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर धन तथा कुटुंब का सुख भी प्राप्त करता है। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः संतान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ मिलता है।

मकर लग्नः तृतीयभावः शनि
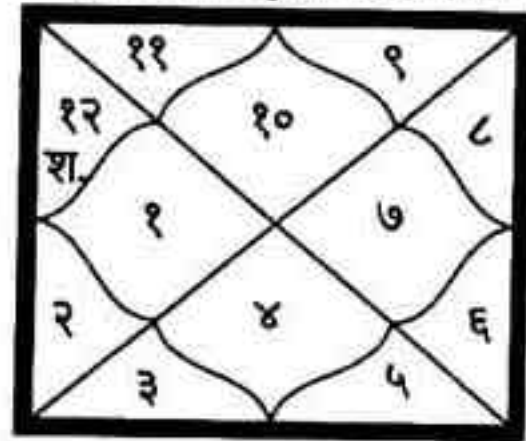
११७४

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है। साथ ही शारीरिक सौंदर्य धन एवं कुटुंब का सुख भी कम प्राप्त होता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव बनाए रखता है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ उठाता है। सातवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता का लाभ होता है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर कुछ सुंदरता लिए रहता है। आत्मबल अधिक रहता है तथा धन-संचय के लिए भी जातक प्रयत्नशील बना रहता है।

मकर लग्न: चतुर्थभाव: शनि
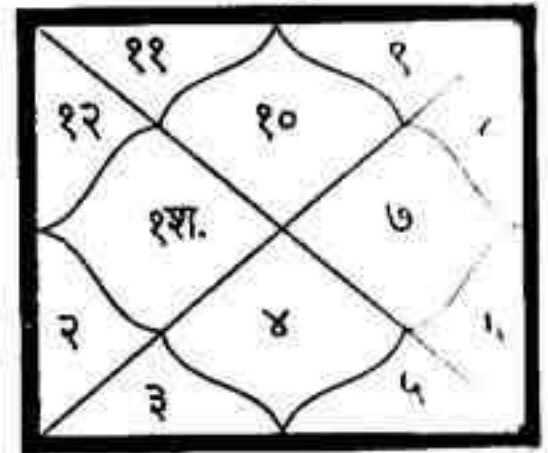
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या, बुद्धि, वाणी, योग्यता एवं शारीरिक सौंदर्य का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति विचारशील, स्वाभिमानी परंतु स्वार्थी होता है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री पक्ष से असंतोष रहते हुए भी जातक स्त्री में अधिक अनुरक्त रहता है तथा व्यवसाय के पक्ष में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब के सुख की वृद्धि होती है एवं संतानपक्ष से लाभ होता है तथा यश एवं सम्मान बढ़ता है।

मकर लग्न: पंचमभाव: शनि
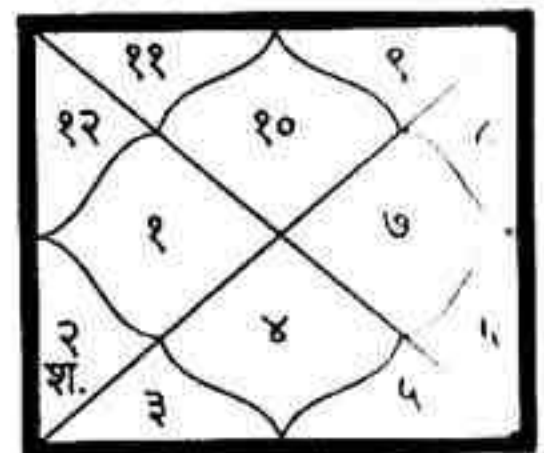
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, शत्रु पक्ष पर प्रभाव बढ़ता है, कुटुंब से सामान्य विरोध रहता है, धन-संग्रह में कमी आती है तथा शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है। यहां से शनि अपनी तीसरी अष्टमभाव को देखता है,

मकर लग्न: षष्ठभाव: शनि
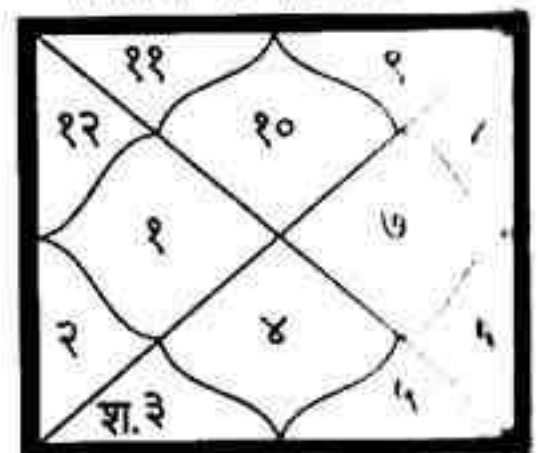
अतः आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में विशेष लाभ नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से संबंध स्थापित होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहनों से कुछ वैमनस्य बना रहता है, परंतु पुरुषार्थ की विशेष वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः सप्तमभावः शनि

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ श. ६ ३ ५

११७८

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से शक्ति एवं आत्मीयता की प्राप्ति होती है तथा परिश्रम के द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। साथ ही धन एवं संतान का सुख भी मिलता है। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान का लाभ होता है तथा घर-गृहस्थी एवं व्यवसाय से सुख, लाभ तथा सम्मान मिलता है। दसवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी अल्प मात्रा में ही मिल पाता है।
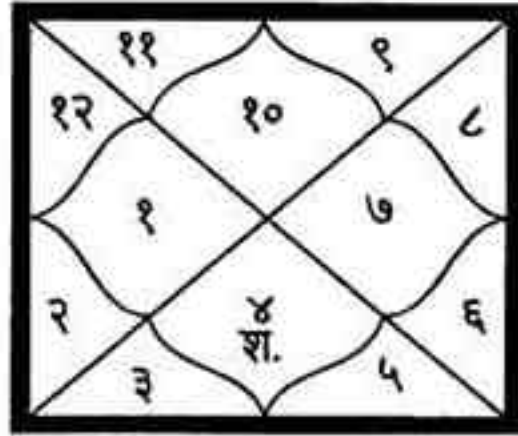
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः अष्टमभावः शनि

११७९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ होता है। साथ ही शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा धन एवं कुटुंब के पक्ष को भी हानि पहुंचती है। यहां से शनि अपनी तीसरी उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ उन्नति, सहयोग, सम्मान एवं सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब का सुख थोड़ा मिलता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतानपक्ष में उन्नति होती है तथा बुद्धि तीव्र बनी रहती है।
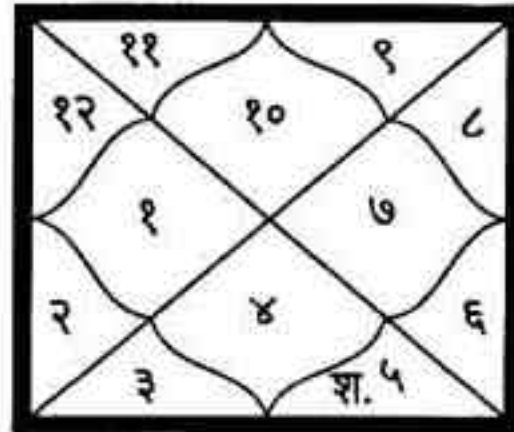
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। साथ ही शारीरिक प्रभाव, सम्मान एवं कुटुंब की शक्ति भी मिलती है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयां आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक धन एवं शारीरिक शक्ति के बल पर शत्रु पक्ष में [illegible] प्राप्त करता है तथा झगड़ों के मामलों से लाभ उठाता है।

मकर लग्न: नवमभाव: शनि
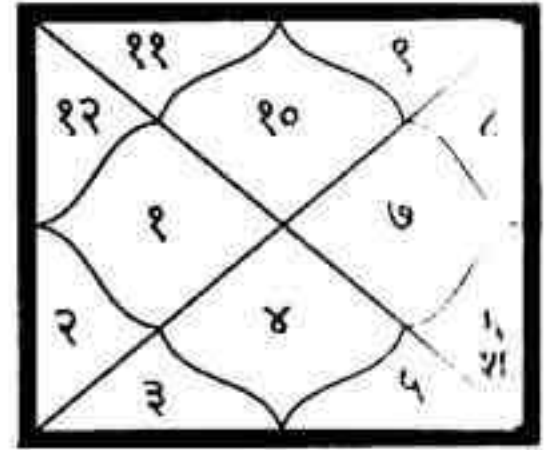
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च शनि के प्रभाव से जातक को पिता एवं कुटुंब से सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है, उसे धन तथा कुटुंब का सुख भी पर्याप्त मिलता है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से असंतोष बना रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी रहती है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयां उपस्थित होती हैं।

मकर लग्न: दशमभाव: शनि
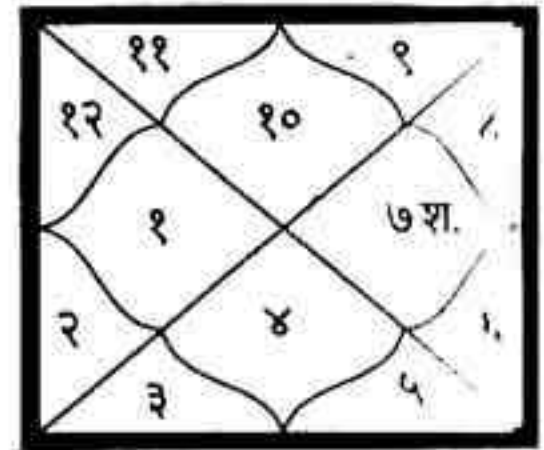
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है और उसे धन तथा कुटुंब का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक सौंदर्य , आत्म-बल, मान-प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की उपलब्धि पर्याप्त होती है। वह सदैव धन-संचय में लगा रहता है।

मकर लग्न: एकादशभाव: शनि
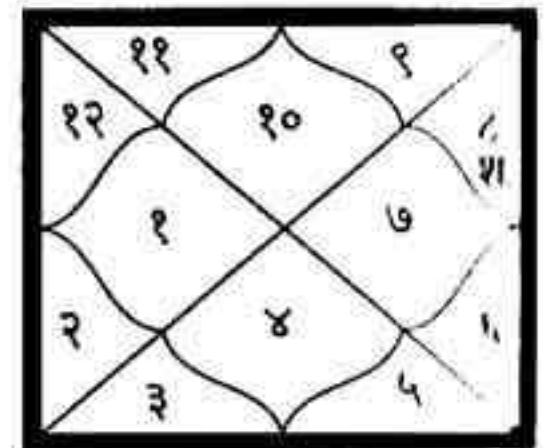
सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान की शक्ति मिलती है तथा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में खूब प्रवीणता प्राप्त होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु के संबंध में चिंता बनी रहती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का कुछ लाभ होता है। सामान्यत: ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: द्वादशभाव: शनि

११८३

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी स्थानों में पर्यटन के द्वारा शाक्त एवं सफलता प्राप्त होती है। धन, कुटुंब तथा शारीरिक स्वास्थ्य में कमी भी आती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक धन प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है एवं झगड़े-झंझट के कामों में सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। कुल मिलाकर ऐसा व्यक्ति धनी तथा भाग्यशाली माना जाता है।
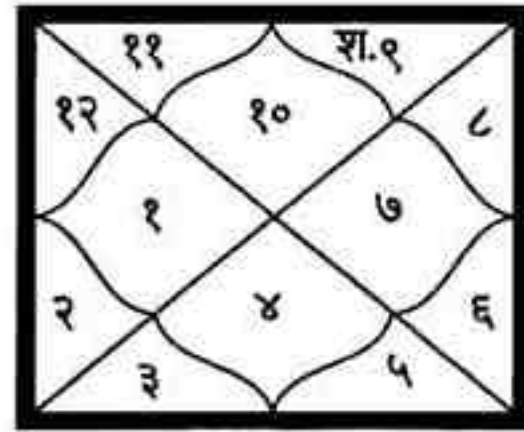
'मकर' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: प्रथमभाव: राहु

११८४

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौंदर्य में कमी आती है तथा उसे गुप्त चिंताएं भी बनी रहती हैं। कभी शरीर में चोट भी लगती है तथा कोई विशेष बीमारी भी होती है। ऐसा व्यक्ति अपने युक्ति-बल से सम्मान तथा प्रभाव को बढ़ता है और अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। वह बड़ा सावधान, चतुर तथा हिम्मतवाला भी होता है।
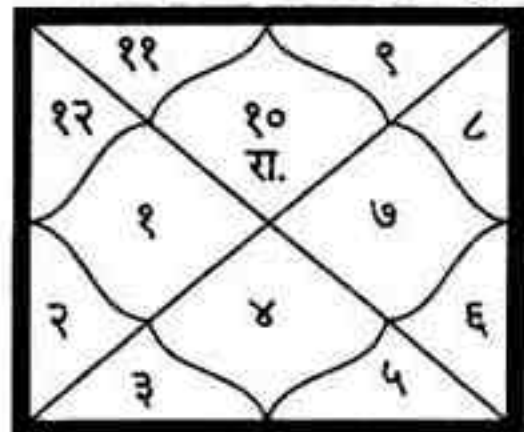
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब के कारण चिंतित रहना पड़ता है तथा कष्ट उठाना होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। कभी-कभी उसे ऋण भी लेना पड़ता है। वह प्रकट रूप में धनी तथा प्रतिष्ठित माना जाता है, परंतु यथार्थ में धन की कमी का अनुभव करता है। अंत में, वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ भी बना लेता है।

मकर लग्न: द्वितीयभाव: राहु
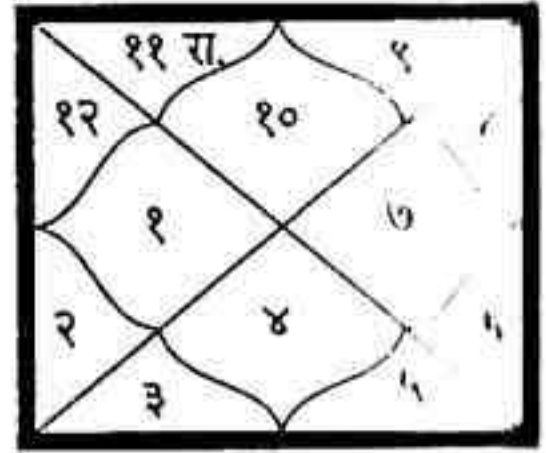
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों की ओर से चिंता बनी रहती है तथा कष्ट भी प्राप्त होता है, परंतु उसके पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर प्रभाव को बढ़ाता है। वह भीतर से दुर्बलता का अनुभव करते रहने पर भी प्रत्यक्ष रूप में हिम्मत का प्रदर्शन करता है, फलस्वरूप वह कठिनाइयों पर विजय भी प्राप्त करता रहता है।

मकर लग्न: तृतीयभाव: राहु
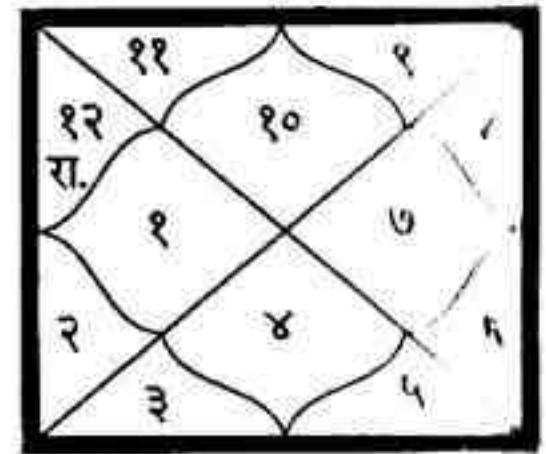
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी बनी रहती है। उसका घरेलू वातावरण अशांतिपूर्ण बना रहता है और उसे अपनी मातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के बल पर अंत में सफलता प्राप्त करता है, तब उसे सुख भी मिलता है और उसके प्रभाव की वृद्धि भी होती है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मतवर तथा धैर्यवान होता है।

मकर लग्न: चतुर्थभाव: राहु
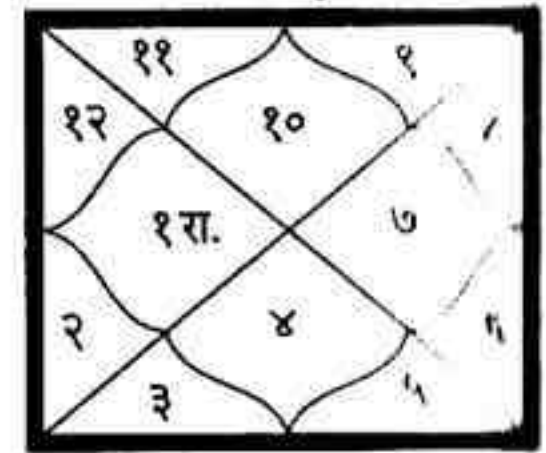
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या ग्रहण करने में कठिनाइयां आती हैं, परंतु ऐसे व्यक्ति की बुद्धि बहुत तेज होती है, अतः वह बड़ा होशियार, गुप्त युक्तियों में प्रवीण तथा चतुर होता है। कभी-कभी उसका मस्तिष्क चिंताओं के कारण परेशान भी हो जाता है, परंतु अंत में उसे संतान तथा विद्या, दोनों के ही पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

मकर लग्नः पंचमभावः राहु
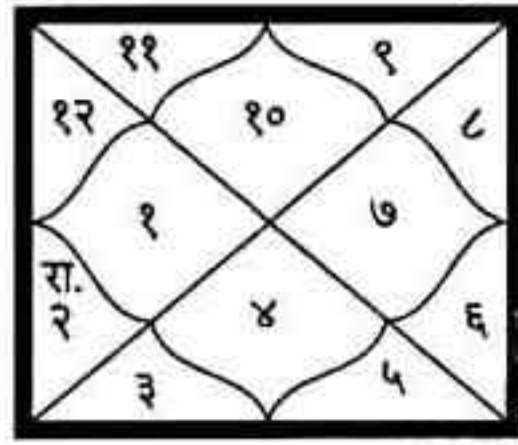
११८८

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में विजय एवं सफलता प्राप्त करता रहता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का ज्ञाता, तीव्र बुद्धि वाला, कूटनीतिज्ञ तथा विवेकी होता है। उसे शारीरिक बीमारियों का शिकार भी प्रायः कभी नहीं बनना पड़ता।

मकर लग्नः षष्ठभावः राहु
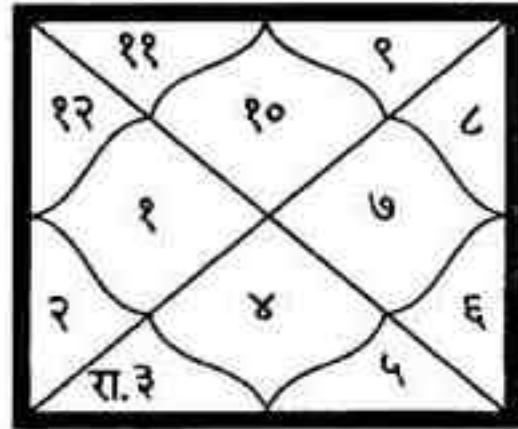
११८९

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से महान कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती रहती हैं। उसकी जननेंद्रिय में रोग भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपने मनोबल, कूटनीति एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अपनी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है, फिर भी उसे कुछ-न-कुछ मानसिक कष्ट हमेशा बना रहता है।

मकर लग्नः सप्तमभावः राहु
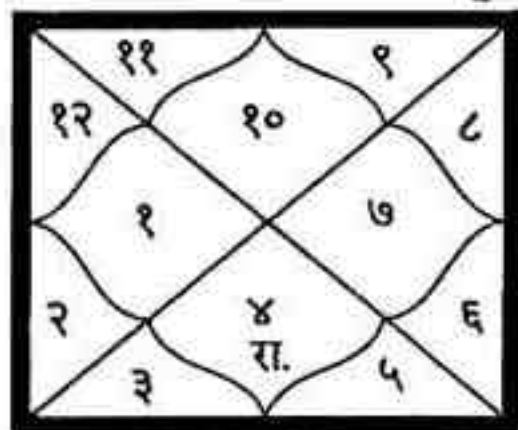
११९०

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः अष्टमभावः राहु

११५१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के संबंध में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है। साथ ही पुरातत्त्व की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति उदर अथवा गुदा संबंधी रोगों का शिकार रहता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-यापन करता चला जाता है तथा कुछ प्रभावशाली भी होता है।
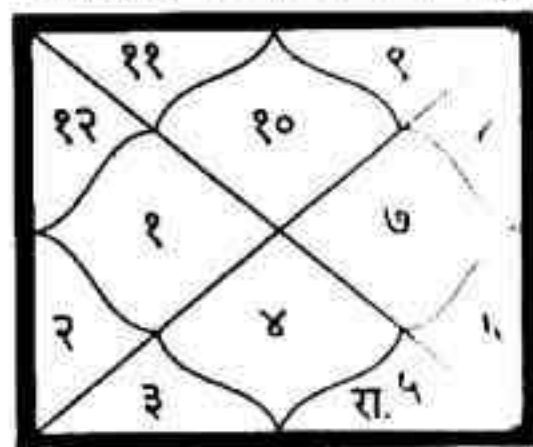
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्नः नवमभावः राहु

११५२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में निरंतर बाधाएं आती रहती हैं, परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर उनका निराकरण करता रहता है तथा कभी-कभी विशेष कठिनाइयों का शिकार भी बनता है। धर्म का पालन भी वह कुछ कमी के साथ करता है। ऐसा व्यक्ति बड़े संघर्षों, परिश्रम एवं युक्तियों के बल पर अपने भाग्य की थोड़ी-बहुत उन्नति कर लेता है, फिर भी उसे किसी-न-किसी अभाव का अनुभव अवश्य होता रहता है।
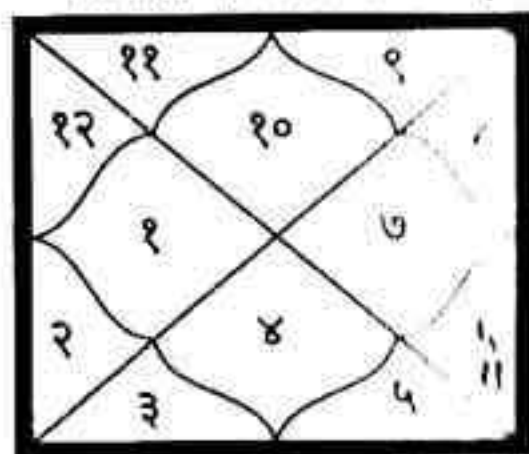
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्नः दशमभावः राहु

११५३

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कुछ कठिनाइयों, राज्य के द्वारा परेशानियों तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों एवं चातुर्य के बल पर उन सबका निराकरण करता है तथा भाग्य को उन्नत बनाता है। फिर भी उसे इन सभी क्षेत्रों में अनेक बार संकटों का सामना अवश्य करना पड़ता है।
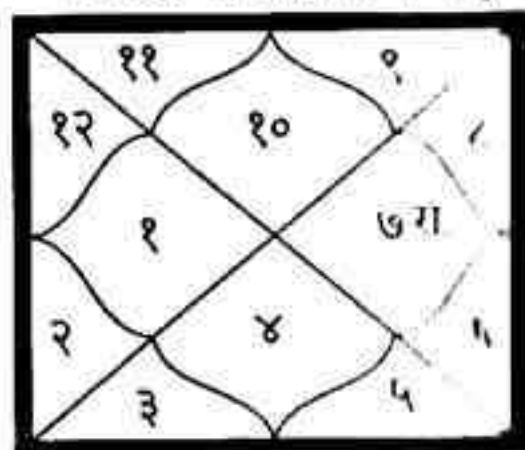
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम, साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर विशेष लाभ प्राप्त करता है, परंतु उसे अपनी आमदनी की वृद्धि के लिए कष्ट, परेशानी तथा संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को कभी बहुत हानि उठानी पड़ती है, तो कभी बहुत लाभ भी होता है। इस प्रकार उसका जीवन सुख-दुःख दोनों से ही परिपूर्ण बना रहता है।

मकर लग्नः एकादशभावः राहु
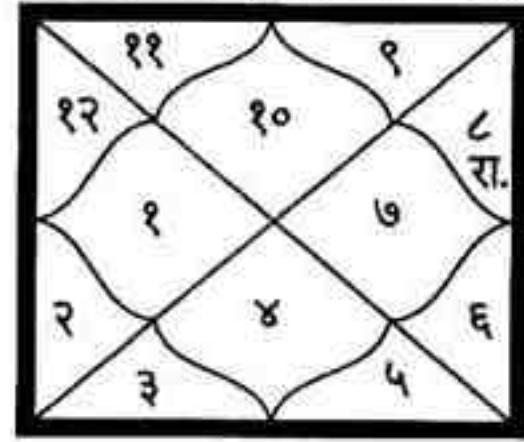
११९४

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु-राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से भी संकट उठाने पड़ते हैं। ऊपरी दिखावे में वह व्यक्ति प्रभावशाली होता है तथा संकटग्रस्त प्रतीत नहीं होता, परंतु यथार्थ में उसे अपनी परेशानियों को कम करने में विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

मकर लग्नः द्वादशभावः राहु
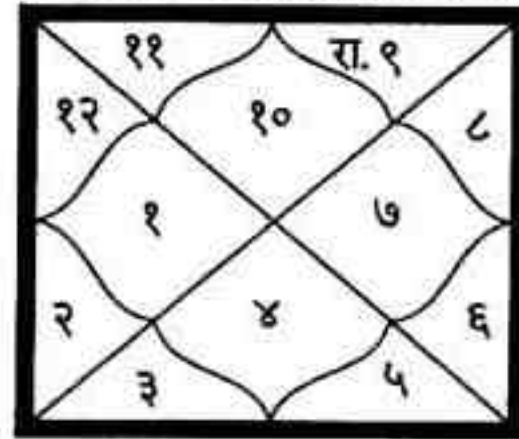
११९५

'मकर' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है और कभी बड़ी चोट के लगने की संभावना भी उपस्थित होती है। ऐसा व्यक्ति बड़े उग्र तथा जिद्दी स्वभाव का होता है। वह अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है, परंतु अपने शरीर के भीतर किसी विशेष कमी का अनुभव भी करता रहता है।

मकर लग्नः प्रथमभावः केतु
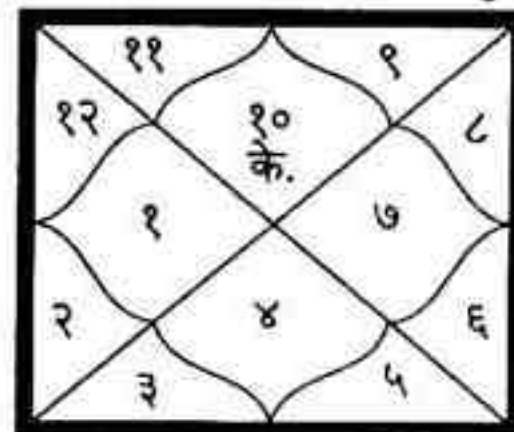
११९६

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: द्वितीयभाव: केतु

११४७

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब के कारण बड़े कष्ट और संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु ऐसा व्यक्ति हिम्मत, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों से काम लेकर अपने धन की कमी को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। वह बड़ा साहसी होता है तथा संकट के समय में भी घबराता नहीं है।
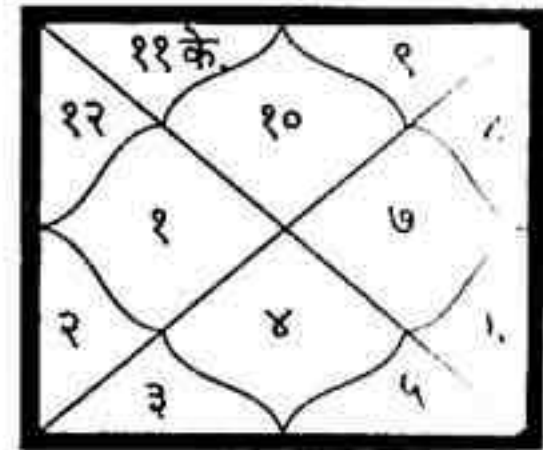
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: तृतीयभाव: केतु

११४८

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों के पक्ष में परेशानी तथा संकट का सामना करना पड़ता है, परंतु उसके पराक्रम की बहुत वृद्धि होती है, अत: वह कठिन परिश्रम, पुरुषार्थ, गुप्त युक्ति, साहस एवं धैर्य के साथ अपने जीवन को प्रभावशाली बनाने तथा अभावों को दूर करने का प्रयत्न करता रहता है। कभी-कभी उसके मन में बड़ी निराशा होती है, परंतु प्रकट रूप में वह धैर्यवान बना रहता है।
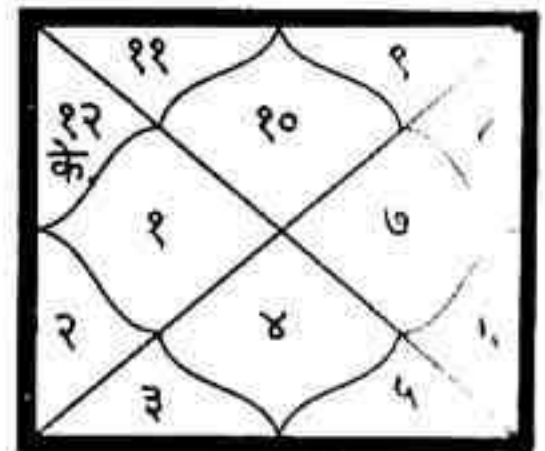
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्न: चतुर्थभाव: केतु

११४९

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी आती है तथा माता के कारण कष्ट भी प्राप्त होता है। उसका घरेलू जीवन कलहपूर्ण रहता है। उसे अपनी मातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है तथा परदेश में जाकर रहना पड़ता है। वह अंत में कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सुख के साधन प्राप्त करने में थोड़ा-बहुत सफल हो जाता है।
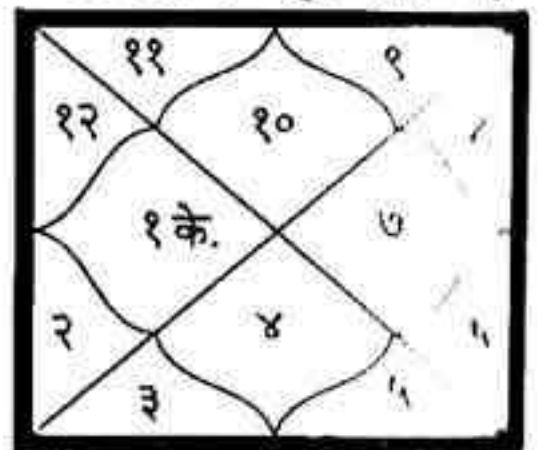
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से परेशानी तथा कमी का अनुभव होता है। उसे विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा विद्या में कमी बनी रहती है। उसके मस्तिष्क में गुप्त-चिंताओं का निवास रहता है, परंतु वह बुद्धि का तीव्र होता है, अत: चतुराई से काम लेकर अपनी कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है। ऐसा व्यक्ति प्रकट रूप में रूखे स्वभाव वाला होता है।

मकर लग्न: पंचमभाव: केतु
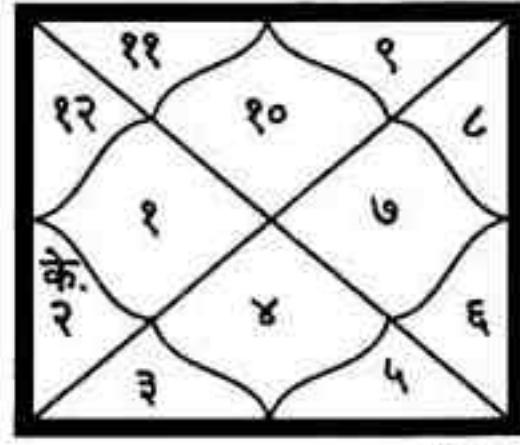
१२००

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष के कारण कठिनाइयों में फंसना पड़ता है, परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों के द्वारा उन पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता पाता है। उसके ननिहाल-पक्ष को हानि पहुंचती है। कभी-कभी घोर संकट उपस्थित होने पर भी वह अपने धैर्य और साहस को नहीं छोड़ता।

मकर लग्न: षष्ठभाव: केतु
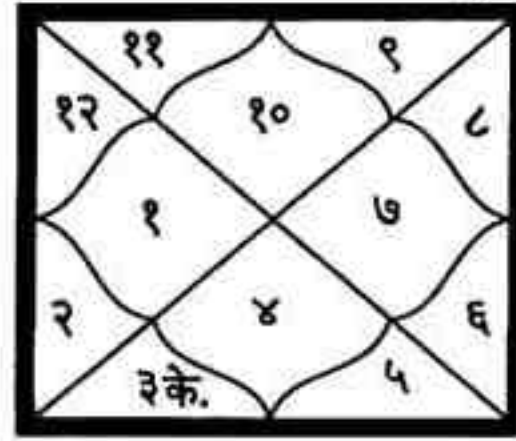
१२०१

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से अनेक प्रकार के कष्ट तथा संकट प्राप्त होते हैं। उसके गृहस्थ जीवन में परेशानियां उपस्थित होती रहती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं। ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार के व्यवसाय करता है। वह कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अनेक संकटों का निवारण करता है और अनेक कठिनाइयों के उपरांत उसे थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त हो जाती है।

मकर लग्न: सप्तमभाव: केतु
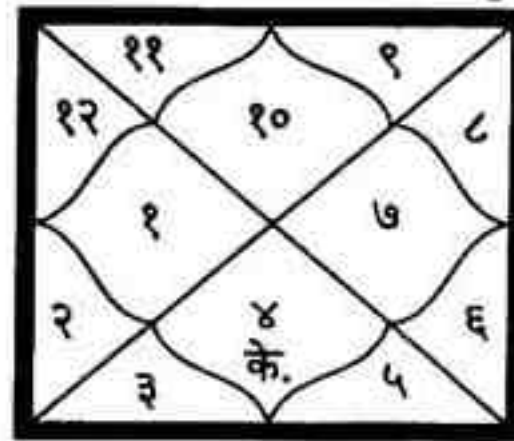
१२०२

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के संबंध में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि होती है। उसके पेट में विकार रहता है। अपनी आजीविका चलाने के लिए उसे कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वह भीतर से बहुत चिंतित रहने पर भी बाहर से अपना प्रभाव प्रकट नहीं करता है तथा प्रायः संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।

मकर लग्न: अष्टमभाव: केतु
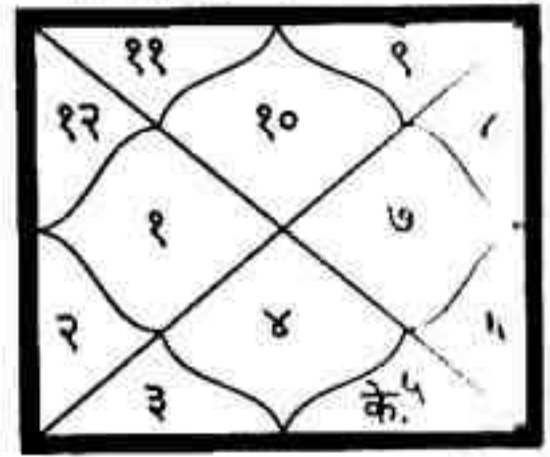
१२०३

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति में कठिनाइयां तो आती हैं, परंतु वह अपनी हिम्मत, गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। कभी-कभी भाग्य के क्षेत्र में उसे घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु अंत में वह उनका निवारण करने में सफल रहता है तथा प्रकट रूप में यश भी अर्जित करता है।

मकर लग्न: नवमभाव: केतु
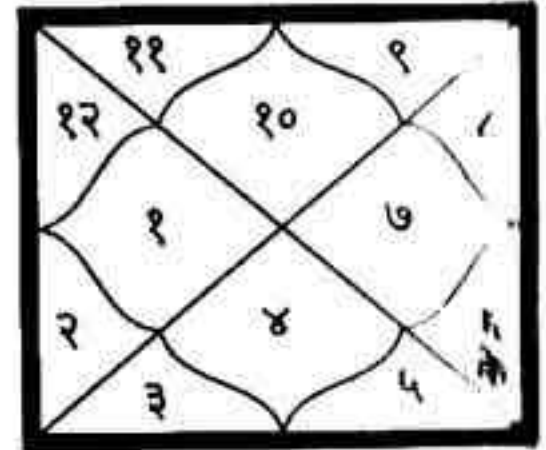
१२०४

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक पिता के पक्ष से कष्ट, राज्य के पक्ष से कठिनाइयां तथा व्यवसाय के पक्ष से संकट तथा परेशानियां उठाता है। कभी-कभी उसे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परंतु अपनी गुप्त युक्तियों एवं चातुर्य के बल पर वह उन पर सफलता पा लेता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन बड़ा परिवर्तनशील होता है।

मकर लग्न: दशमभाव: केतु
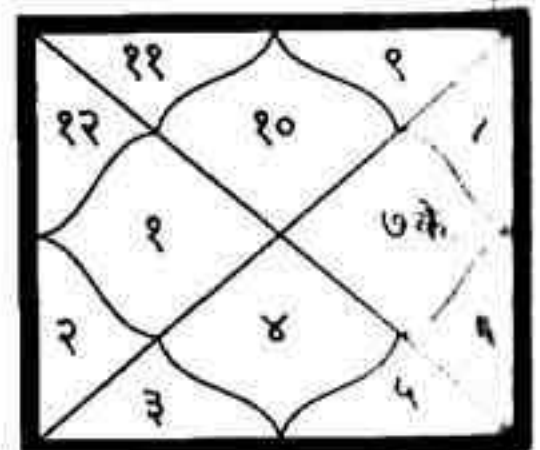
१२०५

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मकर लग्नः एकादशभावः केतु

१२०६

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है और वह अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, साहस एवं कठिन परिश्रम के सहारे आमदनी को बढ़ाता रहता है। कभी-कभी उसे अपनी आमदनी के संबंध में कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु बाद में वह उन सब पर विजय पा लेता है। ऐसा व्यक्ति अपनी कुछ कमियों के विषय में गुप्त रूप से चिंतित भी बना रहता है।
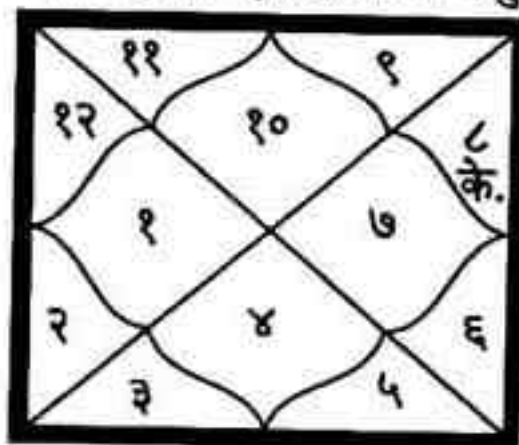
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकर लग्नः द्वादशभावः केतु

१२०७

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च बहुत अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से उसे लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति भी होती रहती है। ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों का साहस के साथ मुकाबला करता है और अंत में सफलता भी पाता है। वह अत्यधिक परिश्रमी, धैर्यवान, साहसी तथा गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला भी होता है।
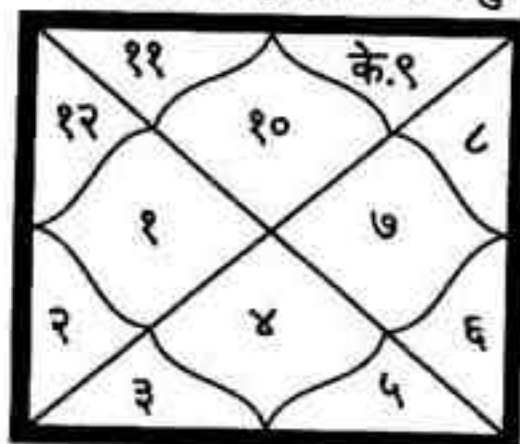
'मकर' लग्न का फलादेश समाप्त
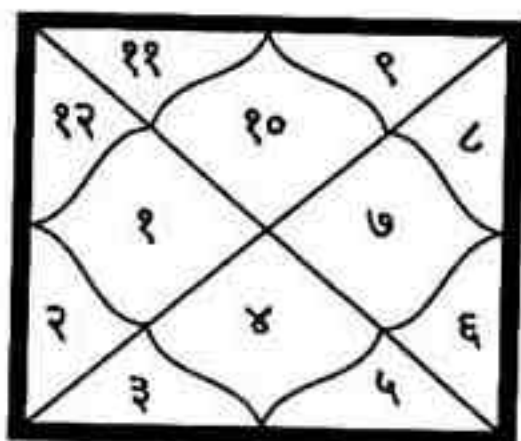
१२०८

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए.

कुंभ लग्नः नवमभावः सूर्य

१२१९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी आती है तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं होता. उसे स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ साधन के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता। यहां से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई बहनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में भी विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान होता है तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त करता रहता है।
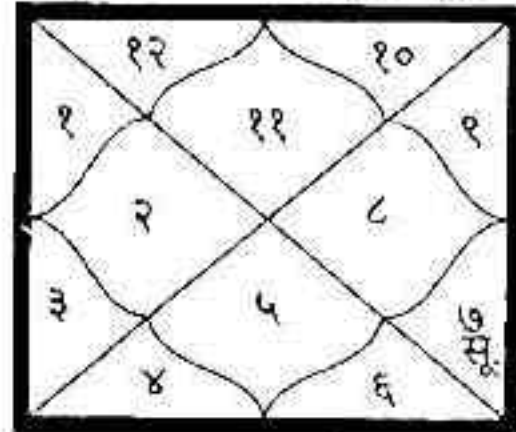
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए.

कुंभ लग्नः दशमभावः सूर्य

१२२०

दसवें केंद्र, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह स्त्री पक्ष से भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि एवं मकान आदि का सुख भी कम ही मिल पाता है।
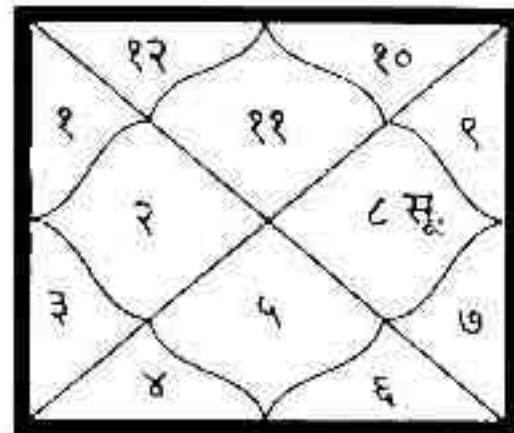
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए.

कुंभ लग्नः एकादशभावः सूर्य

१२२१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय के द्वारा श्रेष्ठ आमदनी होती है तथा स्त्री पक्ष से भी विशेष लाभ मिलता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या बुद्धि के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है तथा संतानपक्ष से भी सुख एवं संतोष प्राप्त होता है।

कुंभ लग्न
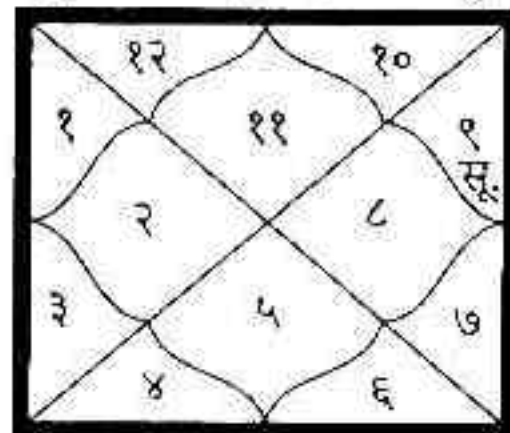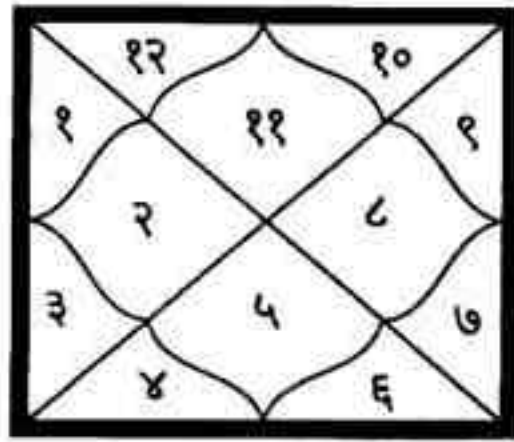
कुंभ लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों
में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग
फलादेश

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए.

कुंभ लग्नः तृतीयभावः चंद्र

१२२५

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक के मनोबल तथा पराक्रम की वृद्धि तो होती है, परंतु कुछ कठिनाइयां भी आती रहती हैं, साथ ही भाई-बहनों से भी कुछ मतभेद बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयां आती हैं, परंतु अंततः प्रभाव की वृद्धि होती है और भाग्य की उन्नति भी होती है।
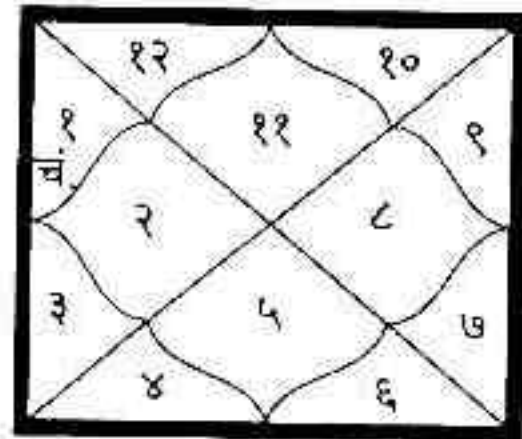
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए.

कुंभ लग्नः चतुर्थभावः चंद्र

१२२६

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर षष्ठेश एवं उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों से लाभ उठाता है। यहां से चंद्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता के सुख में कमी आती है, राज्य के क्षेत्र में झंझट तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
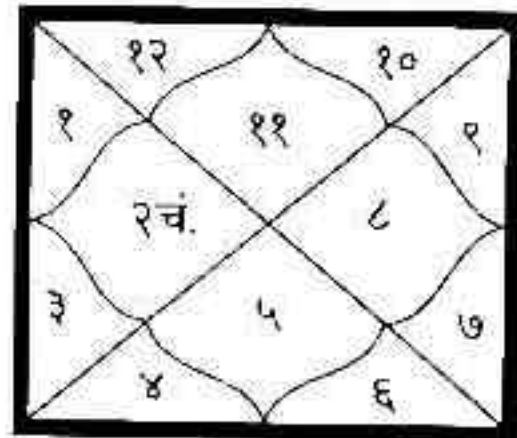
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए.

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं बुद्धि-बल द्वारा शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखता है, परंतु उसे विद्याध्ययन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं संतानपक्ष से भी परेशानी बनी रहती है। उसके मन में और भी अनेक प्रकार की चिंताओं का निवास रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक कुछ परेशानियों से जूझते हुए अपनी आमदनी की वृद्धि करता है तथा गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ कमाता है।

कुंभ लग्नः पंचमभावः चंद्र
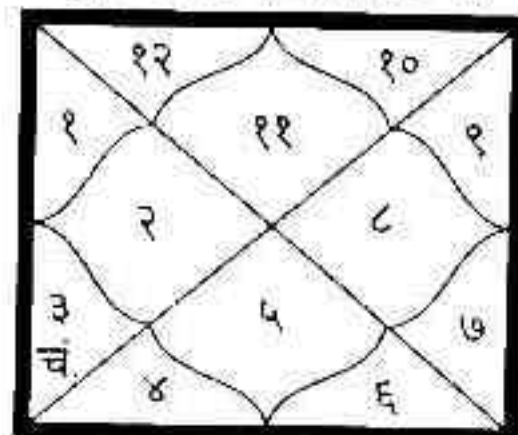
१२२७

'कुंभ' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कुंभ' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुस्थिर, बातूनी, पानी का अधिक सेवन करने वाला, सुंदर भार्या से युक्त, श्रेष्ठ मनुष्यों से संयुक्त, सर्व-प्रिय, चंचल-हृदय वाला, अधिक कामी, मित्र-प्रिय, दंभी, तेजस्वी शरीर वाला, धीर, वात प्रकृति वाला, स्त्रियों के साथ रहने में अधिक प्रसन्नता पाने वाला, मोटी गरदन वाला, गंजे सिर वाला, लंबे शरीर वाला, पर-स्त्रियों में आसक्त, अहंकारी, ईर्ष्यालु, द्वेषी तथा भ्रातृ-द्रोही होता है। वह अपनी प्रारंभिक अवस्था में दुःखी रहता है, मध्यमावस्था में सुख प्राप्त करता है तथा अंतिम अवस्था में धन, पुत्र, भूमि, मकान आदि का सुख भोगता है। ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय २४ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है।

'कुंभ' लग्न

१२१०

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुंडली में दी गई होती है, उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक-गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर स्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'कुंभ' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या १२११ के अनुसार पड़ता रहेगा; परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य 'मीन'

राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या १३२३ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालता जब तक कि वह 'मीन' राशि से हटकर 'मेष' राशि में नहीं चला जाता। 'मेष' राशि में पहुंचकर वह मेष राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरंभ कर देगा। अत: जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'कुंभ' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुंडली संख्या १२११ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'मीन' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या १३२३ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'कुंभ' लग्न में जन्म लेने वाले जातक की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली-संख्या १२११ से १३१८ तक में किया गया है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'कुंभ' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों का तात्कालिक उदाहरण-कुंडलियों के द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए। इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अत: उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुंडली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णत: प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी जन्म-कुंडली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछ कर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुंडली के यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन पर उनकी दृष्टियां पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अत: इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अत: वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं।

जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा, जिसे 'महादशा' भी कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वयस्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२११ से १२२२ तक देखना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२११ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२२ के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२३ से १२३४ तक में देखना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३४ के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३५ से १२४६ तक में देखना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२४० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२४६ के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२४७ से १२५८ तक में देखना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण -कुंडली संख्या १२५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५३ के अनुसार समझना चाहिए।